अस्तित्व और दिव्य एकता

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

अस्तित्व और

दिव्य एकता

बीसवाँ पत्र

बाईसवाँ शब्द

बेदिउज्जमां

नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी 2006

संशोधित संस्करण 2006 प्रथम

प्रकाशन 2002

08 07 06 05 2 3 4 5

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.

26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

तुर्की से अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1877-1960।

[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]

अस्तित्व और ईश्वरीय एकता / बेदिउज्जमां सईद नूरसी. पृ. से.मी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार ; 2)

"रिसाले-ए नूर संग्रह से।"

इसमें ग्रंथसूची संदर्भ (पृ.) और अनुक्रमणिका शामिल है।

आईएसबीएन 0-9720654-7-4 (पीबीके: एल्क पेपर) 1. नूरकुलुक - सिद्धांत। 2. सृष्टि (इस्लाम) 3. इस्लाम - सिद्धांत। I. शीर्षक. II. श्रृंखला.

BP252.R5713 2002c 297.8'3--

dc21

2002013930

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Þ., इज़मिर - तुर्की

जनवरी 2006

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के अनेक आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र के कारण, बेदिउज़्ज़मान (1877-1960) मुस्लिम जगत में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरन्तर प्रभाव के कारण आज भी हैं।

उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को अत्यंत प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो इसके चौदह शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट रूप से विद्यमान रही हैं।
वे 85 साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, तर्क-वितर्क पर आधारित और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में बुद्धिमानी और संतुलित सक्रियता में बिताए।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, और शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके मन और आत्मा में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि अज्ञानता से जैसा कि पहले माना जाता था।

उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय संकेतों का संग्रह है
और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को ज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए

विज्ञान से प्रकाशित होना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित होना चाहिए।

बेदिउज़्ज़माँ सामान्य अर्थों में लेखक नहीं थे।
उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है,
क्योंकि उनका एक मिशन था:
उन्होंने भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया
विज्ञान और दर्शन से प्रेरित विचार और प्रस्तुत करने का प्रयास
इस्लाम की सच्चाई को आधुनिक मन और हर व्यक्ति के दिल तक पहुंचाना
समझ का स्तर। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी, मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर,

ईश्वरीय धर्मग्रंथ जिनमें मुख्य रूप से कुरान, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्र, ईश्वरीय भाग्य और मानवता की इच्छाएं शामिल हैं।
स्वतंत्र इच्छा, उपासना, मानव जीवन में न्याय और मानवता की
सृष्टि में स्थान और कर्तव्य।

लोगों के दिलो-दिमाग से इस नफरत को दूर करने के लिए
झूठी मान्यताओं और अवधारणाओं का संचित 'तलछट' और
उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए,
बेदिउज़्ज़मान जोरदार ढंग से लिखते हैं और अपनी बातों को दोहराते हैं।
वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह
भावनाओं से अपील करता है और अपने विचारों को बाहर निकालने का लक्ष्य रखता है
लोगों के दिलों और दिमागों में विचारों को जागृत करने के लिए
उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास की ओर ले जाएं।

इस पुस्तक में रिसाले-आई से चयनित अनुभाग शामिल हैं
केवल एकत्रण ।

बीसवाँ पत्र

के पहलुओं
दिव्य एकता

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं, उसका कोई साझी नहीं; राज्य उसी का है और सारी प्रशंसा उसी को है; वही जीवन देता है और मारता है; वह जीवित है और मरता नहीं; उसके हाथ में सब भलाई है। वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है, और उसी की ओर घर वापसी है।

दिन की पहली और आखिरी प्रार्थना के बाद ईश्वरीय एकता के इन प्रतिज्ञानों को पढ़ना बहुत पुण्यदायी है। प्रत्येक वाक्य ईश्वर के महानतम नाम के बराबर है, और प्रभु की एकता के एक अलग पहलू को प्रदर्शित और प्रकट करके मानवता को शुभ समाचार देता है। यह ईश्वरीय एकता के बराबर है।

महानतम नामों में से एक, दिव्य विलक्षणता की महिमा की किरण, तथा दिव्य एकता की पूर्णता को दर्शाता हुआ। इस तरह के उदात्त सत्य की पूरी व्याख्या के लिए पाठक को द वर्ड्स का संदर्भ देते हुए, मैं इसे नीचे एक परिचय और दो स्टेशनों में संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ।1

परिचय

ईश्वर में विश्वास सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम है, और मानवता का सबसे श्रेष्ठ पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है। मानव आत्मा का सबसे शुद्ध आनंद और मानव हृदय का सबसे बड़ा आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और अपार सुख ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं। जो लोग वास्तव में ईश्वर को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं, वे अनंत सुख, उपहार, ज्ञान और रहस्य प्राप्त कर सकते हैं।

जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, वे अंतहीन आध्यात्मिक और भौतिक दुख, दर्द और भय से ग्रस्त हैं। अगर किसी व्यक्ति को इस दुनिया पर शासन करने की अनुमति दी जाए, भले ही वह शक्तिहीन, दुखी और असुरक्षित हो

1 नर्सी, एस., द वर्ड्स, द लाइट, इंक., एनजे: 2005.

इस संसार में अन्य उद्देश्यहीन लोगों के बीच, इसका वास्तविक मूल्य क्या होगा?

जो लोग अपने मालिक को नहीं पहचानते और अपने मालिक को नहीं खोज पाते, वे दुखी और भ्रमित रहते हैं। लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं, और फिर उसकी दया में शरण लेते हैं और उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं, वे इस उजाड़ दुनिया को आराम और खुशी की जगह में बदल देते हैं, एक ऐसी जगह जहाँ वे परलोक के लिए विनिमय कर सकते हैं।

पहला स्टेशन

ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने वाला प्रत्येक वाक्यांश विश्वासियों के लिए शुभ समाचार लेकर आता है। प्रत्येक संदेश एक इलाज प्रदान करता है, और प्रत्येक इलाज में आध्यात्मिक आनंद निहित होता है।

पहला वाक्य: ईश्वर के अलावा कोई और ईश्वर नहीं है, लेकिन ईश्वर मानवीय आत्मा के लिए मदद का एक अटूट स्रोत प्रदान करता है, जो असंख्य ज़रूरतों और अनगिनत हमलों का शिकार है, दया के एक ऐसे ख़ज़ाने का दरवाज़ा खोलकर जो उसकी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है। आत्मा को वहाँ एक सहारा मिलता है जो उसके मालिक और स्वामी, उसके निर्माता और पूजा के सच्चे उद्देश्य को दिखाता और पहचानता है, जो उसे उसके दुश्मनों की बुराई से बचाता है।

यह वाक्यांश निरंतर उत्थान और निरंतर प्रसन्नता के माध्यम से हृदय को उदासी से और आत्मा को पीड़ा से बचाता है।

दूसरा वाक्यांश: (वह है) इसका तात्पर्य यह है कि मानव आत्मा, जो ब्रह्मांड में अधिकांश प्रजातियों से जुड़ी हुई है और इस प्रकार दुख और भ्रम से अभिभूत है, उसे ऐसे दुख और भ्रम से मुक्ति दिलाने के लिए एक शरण और उद्धारकर्ता मिलता है।

मानवता के लिए, इस वाक्यांश का अर्थ है: ईश्वर एक है, इसलिए अन्य चीजों से खुद को मत थकाओ। खुद को नीचा मत दिखाओ और उनके प्रति बाध्य मत महसूस करो, या सुरक्षा के लिए उनके सामने खुद को अपमानित मत करो। उनका अनुसरण करके खुद को परेशान मत करो, और उनके सामने कांप मत जाओ, क्योंकि ब्रह्मांड का संप्रभु एक है और सभी चीजों की कुंजी और लगाम रखता है। उसका आदेश सब कुछ हल करता है।

उसे पाने का अर्थ है कि आप जो चाहें प्राप्त कर लें और अंतहीन ऋणग्रस्तता और असंख्य भय से मुक्त हो जाएं।

तीसरा वाक्य: उसका कोई साथी नहीं है इसका मतलब है कि वह एक है और उसकी दिव्यता और संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं है, साथ ही उसके आधिपत्य, कार्य और सृजन में भी। सिद्धांत रूप में, एक सांसारिक राजा का अपनी संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं हो सकता है, लेकिन फिर भी उसके अधिकारियों को उसकी संप्रभुता के निष्पादन में उसका भागीदार माना जा सकता है, क्योंकि वे उसके और उसकी प्रजा के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। ईश्वर, शाश्वत सम्राट, को ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है और इसलिए

उसकी संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं है। एक चीज़ दूसरी चीज़ के साथ तभी हस्तक्षेप कर सकती है जब वह इसकी अनुमति दे। इसके अलावा, उसकी एकता उसके और उसके प्राणियों के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार करती है, और इसलिए हर किसी के पास समय और स्थान की परवाह किए बिना सीधे उस तक पहुँच है।

यह वाक्यांश मानवीय भावना को सूचित करता है कि किसी भी विश्वासी को उस महान, सर्व-दयालु, सर्व-शक्तिशाली पूर्णता वाले की उपस्थिति में प्रवेश करने से कोई नहीं रोक सकता, जो दया और आनंद के खजाने का शाश्वत स्वामी है, और अपनी याचिका प्रस्तुत करता है। उसकी दया को पाना और उसकी शक्ति पर भरोसा करना विश्वासियों को पूर्ण सहजता और खुशी प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

चौथा वाक्य: राज्य उसका है इसका मतलब है कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक है - जिसमें आप भी शामिल हैं - और आप उसके राज्य में काम करते हैं। इसका यह भी मतलब है: यह मत सोचिए कि आप खुद के मालिक हैं, क्योंकि आप अपने मामलों का प्रबंधन खुद नहीं कर सकते। आप अपनी आत्मा और शरीर की ज़रूरतों को पूरा करके और उन्हें आपदाओं से बचाकर उनका रखरखाव नहीं कर सकते।

आप थकावट और उम्र बढ़ने से बच नहीं सकते, क्योंकि आप समय और अन्य क्षरणकारी कारकों के अधीन हैं।
इसलिए, बिना कारण के दु:ख और पीड़ा न सहें। कोई सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति ही सबका स्वामी है। उसकी शक्ति और दया पर भरोसा रखें।

उसकी करुणा पर दोष मत लगाओ। दुःख का त्याग करो
और चिंता को दूर करें और राहत स्वीकार करें। अपनी परेशानियों से छुटकारा
पाएं और शांति पाएं।

इस वाक्यांश का अर्थ यह भी है: यह दुनिया जो आपके पास है
प्यार, जिससे आप जुड़े हुए हैं और जिसे आप
अव्यवस्था को देखता है और सही नहीं कर सकता, एक से संबंधित है
सर्वशक्तिमान और दयालु। इसलिए इसे लौटा दो
अपने मालिक को सौंप दो और उसे उसी पर छोड़ दो। अपना ख्याल रखो
अपने कर्तव्य का पालन करें और उसके कार्यों में हस्तक्षेप न करें।
आप जिस चीज़ पर काबू नहीं पा सकते, उससे परेशान हैं। शांत रहें,
क्योंकि उसका मालिक उसे पूरी तरह से नियंत्रित करता है और उसे अपनी
इच्छानुसार संचालित करता है। वह अत्यन्त बुद्धिमान और दयावान है और
बुद्धिमतापूर्ण उद्देश्य के लिए कार्य करता है। अतः जब भी
अगर आप डरे हुए हैं तो इब्राहीम हक्की की तरह कहें: "देखते हैं
गुरु जो करता है—जो कुछ भी करता है
हमेशा सर्वोत्तम—और उसके कार्यों का पूर्णतया पालन करें
विश्वास।"

पाँचवाँ वाक्य: सारी प्रशंसा उसी की है
इसका मतलब है कि केवल ईश्वर ही प्रशंसा और प्रशंसा के पात्र हैं,
कि सब कुछ केवल उसी का ऋणी है। सभी वरदान उसके हैं, क्योंकि वे
उसके अनंत और
अक्षय खजाना.

इस वाक्यांश का तात्पर्य है: इनाम (अब आप
आनंद) कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि उसकी दया का खजाना
अटूट है। आपका (वर्तमान) आनंद

कभी रुकना मत, हर आनंद के लिए जो तुम्हें दिया गया है
अनंत दया का फल है। और उस दया का वृक्ष
दया मर नहीं सकती, क्योंकि प्रत्येक समाप्त फल नष्ट हो जाता है
एक नए के साथ बदल दिया। इसके अलावा, पेशकश
आप वर्तमान में जो आनंद ले रहे हैं उसके लिए धन्यवाद और प्रशंसा
इसे सौ गुना बढ़ा देता है, क्योंकि हर आनंद
संक्षेप में, यह ईश्वरीय दया का एक उपकार है और
इसलिए यह पहले से 100 गुना अधिक आनंददायक है
आनंद अपने आप में है। यदि कोई गौरवशाली राजा आपको आनंद देता है
एक सेब, इस तरह के शाही एहसान पर आपकी खुशी होगी
100 या उससे भी अधिक भौतिक सुख से श्रेष्ठ होना
1,000 सेब.

इसी प्रकार, यह वाक्यांश १००० गुना मधुर आध्यात्मिक-आनंद का द्वार खोलता है, क्योंकि यह
आपको उदारता के उपहार पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है,
जो आपको दाता को पहचानने की ओर ले जाता है और
उसकी दयापूर्ण कृपाओं पर विचार करें जो निरन्तर बरसती रहती हैं।

छठा वाक्य: वह अकेला ही जीवन देता है जो कहता है कि
केवल वही जीवन देता है, उसे बनाए रखता है और उसकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है
आवश्यकताएं, और जीवन के उत्कृष्ट लक्ष्य और
महत्वपूर्ण परिणाम उससे संबंधित हैं।

यह वाक्यांश कहता है: जीवन की भारी जिम्मेदारियों को उठाने की चिंता मत करो, अन्यथा बेचैनी महसूस करो
क्योंकि संसार क्षणभंगुर है, या जीवन की तुच्छता को जाने दो-

सांसारिक फलों की कमी के कारण आपको इस बात का अफसोस होता है कि आप इस दुनिया में आए हैं। बल्कि, "आपके अस्तित्व के जहाज" में "जीवन तंत्र" उस सदा-जीवित और सदा-स्व-निर्भर व्यक्ति का है, जो जीवन की सभी आवश्यकताओं और खर्चों को पूरा करता है। इसके अलावा, जीवन के असंख्य लक्ष्य इसे कई महत्वपूर्ण परिणामों की ओर निर्देशित करते हैं, जिनमें से लगभग सभी उससे संबंधित हैं। आप उस जहाज के केवल एक कर्णधार हैं, इसलिए अपना कर्तव्य ठीक से निभाएँ। अपना वेतन प्राप्त करें और परिणामी आनंद से संतुष्ट रहें। उस जहाज की बहुमूल्यता और उसके मूल्यवान लाभों पर विचार करें, और उसके मालिक की उदारता और करुणा के परिमाण पर विचार करें। आनन्दित हों और धन्यवाद दें, क्योंकि अपने कर्तव्य को सही ढंग से निभाने से आपके जीवन के परिणाम एक तरह से अच्छे कर्मों के रूप में दर्ज होंगे, जो अनंत काल में आपके अमर जीवन को सुरक्षित करेंगे।

सातवाँ वाक्य: ...और मरवाता है इसका अर्थ है कि वह आपको जीवन के कर्तव्य से मुक्त कर देता है, आपके निवास को इस क्षणभंगुर संसार से बदलकर शाश्वत संसार में बदल देता है, और आपको सेवा के बोझ से मुक्त कर देता है।

यह वाक्य घोषणा करता है: शुभ समाचार! मृत्यु विनाश या अस्तित्वहीनता नहीं है, न ही कोई शाश्वत वियोग है और न ही कोई संयोग है, जिसका कोई रचयिता नहीं है। बल्कि सर्वज्ञ और सर्व-करुणामय रचयिता आपको सेवा से मुक्त कर रहा है,

तुम्हारा निवास स्थान बदल रहा है, और तुम्हें उस शाश्वत खुशी की ओर भेज रहा हूं जो तुम्हारा सच्चा घर है।
मृत्यु मध्यवर्ती दुनिया से मिलन का द्वार है, जहां आप अपने 99 प्रतिशत मित्रों से मिलेंगे।

आठवाँ वाक्य: वह जीवित है और मरता नहीं है, इसका अर्थ है कि वह अमर पूजा का पात्र और शाश्वत प्रिय, जिसकी सुंदरता, पूर्णता और परोपकारिता इस दुनिया में अपने समकक्षों से पूरी तरह श्रेष्ठ है और जो सभी प्राणियों के प्रेम को जगाती है, उसका शाश्वत जीवन है। उसकी सुंदरता की एक अभिव्यक्ति सभी अन्य प्रियजनों की जगह ले लेती है। उसका शाश्वत जीवन समाप्ति या क्षणभंगुरता के किसी भी निशान से मुक्त है, और इसमें कोई दोष या कमी नहीं है।

यह वाक्य सभी चेतन प्राणियों, चाहे वे मनुष्य हों या जिन्न, और सभी प्रेमियों के लिए घोषणा करता है: शाश्वत प्रियतम आपके प्रियजनों से अलग होने के कारण हुए घावों को ठीक कर देगा। चूँकि वह मौजूद है और अमर है, इसलिए उन दूसरों के बारे में चिंता मत करो।

तुमने उन्हें उनकी सुंदरता और अच्छाई, अनुग्रह और पूर्णता के कारण प्यार किया। लेकिन ये तो अनंत प्रियतम की अनंत सुंदरता की धुंधली, छाया जैसी अभिव्यक्तियाँ हैं, जो कई आवरणों से होकर गुज़री हैं। इसलिए जब वे दिखाई दें तो शोक मत करो।

गायब हो जाते हैं, क्योंकि वे केवल दर्पण हैं। जब दर्पण बदल जाते हैं, तो उस सौंदर्य का प्रतिबिंब नया हो जाता है और अधिक उज्ज्वल हो जाता है। जब आप उसे पा लेते हैं, तो आपको सब कुछ मिल जाता है।

नौवाँ वाक्य: उसके हाथ में सब अच्छाई है, इसका मतलब है कि सिर्फ़ वही सब अच्छाई रखता है और आपको अच्छाई करने के लिए मार्गदर्शन करता है। साथ ही, वह आपकी ओर से आपके द्वारा किए गए हर अच्छे और नेक काम को रिकॉर्ड करता है।

यह वाक्य घोषणा करता है: ऐ असहाय लोगों और जिन्नों, जब तुम मरो तो चिल्लाना मत: "हाय, हमारा जो कुछ भी था वह नष्ट हो गया और हमारे प्रयास व्यर्थ हो गए। हम उस विस्तृत, सुंदर दुनिया को छोड़कर इस संकरी कब्र में प्रवेश कर गए हैं!" सब कुछ सुरक्षित है, क्योंकि तुम्हारे सभी कर्म और सेवाएँ दर्ज हैं। महामहिम, जिसके हाथ में सब भलाई है और जो कुछ भी अच्छा करने में सक्षम है, वह तुम्हें तुम्हारी सेवा का पुरस्कार देने के लिए बुलाता है। वह तुम्हें अस्थायी रूप से भूमिगत रखेगा और फिर तुम्हें अपनी उपस्थिति में ले आएगा। तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुमने अपना कर्तव्य और सेवा पूरी कर ली, क्योंकि तुम्हारा श्रम समाप्त हो गया है और तुम आराम और दया के रास्ते पर हो। परिश्रम करने के बाद, अब तुम्हें अपना वेतन मिल गया है।

सर्वशक्तिमान महामहिम, जो पिछले वसंत की गतिविधियों और सेवाओं के अभिलेख के रूप में बीज और अनाज को सुरक्षित रखते हैं और फिर उन्हें खोलते और प्रकाशित करते हैं।

वह उन्हें अगले वसंत में सबसे चमकदार, प्रचुर और परोपकारी तरीके से प्रसन्न करेगा, और आपके कर्मों के परिणामों को भी पहले से ही प्रस्तुत करेगा। इस प्रकार वह आपको प्रसन्न करेगा।
आपकी सेवा का भरपूर प्रतिफल मिलेगा।

दसवाँ वाक्य: वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है इसका मतलब है कि वह एक और अद्वितीय है और उसके पास सब कुछ है।
हर चीज़ पर अधिकार। चूँकि सब कुछ है इसलिए
उसके लिए वसंत बनाना उतना ही आसान है जितना कि
एक फूल, और स्वर्ग बनाना वसंत बनाने जितना आसान है। अनगिनत जीव
जो वह लगातार बनाते रहते हैं
हर पल को अस्तित्व में लाता है साक्षी
असंख्य भाषाओं से उसकी असीम शक्ति की स्तुति करो।

इस वाक्यांश का अर्थ है: हे लोगों, आपकी सेवा
और पूजा खो नहीं है। इनाम की एक दुनिया, एक
परमानंद का निवास, आपके लिए तैयार किया गया है।
अनन्त स्वर्ग आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है
क्षणभंगुर दुनिया में विश्वास और आत्मविश्वास रखें
उस महान सृष्टिकर्ता का वादा, जिसे आप जानते हैं
और आराधना करो, क्योंकि वह अपना वादा कभी नहीं तोड़ता।
उसकी शक्ति में कोई दोष नहीं है, और नपुंसकता में भी कोई दोष नहीं है
उसके कामों में दखल न दें। क्योंकि वह आपकी सृष्टि करता है
छोटा सा बगीचा, वह आपके लिए स्वर्ग भी बना सकता है।
वास्तव में, जैसा कि उसने इसे बनाया और तुमसे इसका वादा किया, उसने
तुम्हें इसमें प्रवेश मिलेगा।”

हर साल हम देखते हैं कि वह अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों और समूहों के बावजूद पृथ्वी को एकदम सही क्रम और सहजता के साथ पुनर्जीवित करता है। ऐसा सर्वशक्तिमान महामहिम अपना वादा पूरा करता है।

इसके अलावा, चूँकि वह हर साल जन्नत के नमूने बनाता है, जिसका वादा उसने अपनी सभी किताबों के ज़रिए किया है; चूँकि उसके सभी काम और निष्पादन सच्चाई और गंभीरता के साथ किए जाते हैं; चूँकि उसके सभी कामों की पूर्णता उसकी अनंत पूर्णता की ओर इशारा करती है और गवाही देती है, जिसमें कोई दोष या कमी नहीं है; और चूँकि वादा तोड़ना, झूठ बोलना, छल करना और धोखा देना सबसे बुरे गुण हैं, इसलिए हम निश्चिंत हो सकते हैं कि सर्वशक्तिमान, महामहिम, सर्वज्ञ, पूर्ण, दयालु और कृपालु अपना वादा पूरा करेंगे। वह अनंत सुख का द्वार खोल देगा और तुम्हें, ऐ ईमान वालों, जन्नत में प्रवेश देगा, जो तुम्हारे पूर्वज आदम (और पूर्वज हव्वा) का असली घर है।

ग्यारहवाँ वाक्य: और उसी की ओर घर वापसी है, इसका अर्थ है कि सभी लोगों को विशिष्ट उद्देश्यों के लिए परीक्षण और परीक्षा की इस दुनिया में भेजा जाता है।

इन सब को पूरा करने के बाद वे उस सर्व-दयालु मालिक, महान सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में लौट जाते हैं, जिसने उन्हें सबसे पहले भेजा था। इस क्षणभंगुर को छोड़कर

क्षेत्र में, वे कारण-और-प्रभाव चक्रों की अशांति से और साधनों और उपकरणों के अस्पष्ट पर्दों से मुक्त हो जाते हैं। उसके बाद, वे अपने दयालु भगवान की उपस्थिति में शाश्वत निवास में सम्मानित होंगे और बिना किसी पर्दे के, उनके शाश्वत राज्य में उनसे मिलेंगे। हर कोई यह जान लेगा कि उनका निर्माता पूज्य, भगवान, मालिक और मालिक है। इस प्रकार यह वाक्यांश निम्नलिखित समाचार का संकेत देता है, बाकी सभी की तुलना में बहुत खुशी की बात है: हे लोगों, क्या तुम जानते हो कि तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हें कहाँ ले जाया जा रहा है? तुम दया के क्षेत्र में जा रहे हो, महामहिम सर्व-सुंदर की शांतिपूर्ण उपस्थिति के लिए। इस दुनिया

में 1,000 साल का खुशहाल जीवन स्वर्ग में जीवन के एक घंटे की तुलना नहीं कर सकता है, और स्वर्ग में 1,000 साल के जीवन की तुलना उनके अत्यंत सुंदर चेहरे के एक घंटे के दर्शन से नहीं की जा सकती है। इस दुनिया के जीवों में दिखने वाली सारी सुंदरता और सौन्दर्य, जिसमें वे प्रियजन भी शामिल हैं जो आपको इतना मोहित और मोहित करते हैं, वे उसकी सुंदरता और उसके नामों की सुंदरता की एक अभिव्यक्ति की छाया मात्र हैं। स्वर्ग और उसके आकर्षण केवल उसकी दया की अभिव्यक्तियाँ हैं; सभी लालसाएँ, प्रेम और आकर्षण केवल उसके प्रेम के प्रकाश की चमक हैं। आप उस एक की उपस्थिति में जा रहे हैं जिसकी हमेशा पूजा की जाती है और जो हमेशा से प्रिय है,

और स्वर्ग में आमंत्रित किए जाते हैं, जो कि उनकी शाश्वत दावत का स्थान है। इसलिए कब्र में मुस्कुराते हुए प्रवेश करें।

यह वाक्यांश यह भी घोषणा करता है: हे लोगों, चिंता मत करो या सोचो कि तुम विलुप्त होने, अस्तित्वहीनता, शून्यता, अंधकार, विस्मृति, क्षय और विघटन की ओर जा रहे हो। वास्तव में, तुम स्थायित्व, शाश्वत अस्तित्व और उसके प्रकाश की दुनिया की ओर जा रहे हो। तुम अपने सच्चे स्वामी, शाश्वत राजा की सीट पर लौट रहे हो। तुम एकता के दायरे में आराम करोगे और बहुलता में नहीं डूबोगे। तुम एकता के लिए बंधे हो, अलगाव के लिए नहीं।

दूसरा स्टेशन

(यह स्थान ईश्वर के महानतम नाम के स्तर पर दिव्य एकता का संक्षिप्त प्रमाण है।)

पहला वाक्य: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है। यह ईश्वर की दिव्यता में एकता और उसकी पूजा का एकमात्र उद्देश्य होने की पुष्टि करता है। निम्नलिखित इस स्तर पर दिव्य एकता का एक बहुत मजबूत सबूत है।

ब्रह्मांड और खास तौर पर पृथ्वी की सतह पर सबसे व्यवस्थित गतिविधि देखने को मिलती है। हम सबसे बुद्धिमानी भरी रचनात्मकता और सबसे व्यवस्थित तरीके से प्रकट होते हुए देखते हैं, क्योंकि हर चीज को सबसे उचित आकार और रूप दिया जाता है। हम सबसे स्नेही, सामान्य भी देखते हैं-

दयालु, दयालु प्रावधान और उदारता। ऐसे
कारक आवश्यक अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करते हैं
एक सक्रिय, रचनात्मक, उद्घाटन, आकार देने और
एक महिमा प्रदान करना।

सभी विद्यमान तम्बुओं का निरंतर क्षय और नवीनीकरण यह दर्शाता है कि वे एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रकट करते हैं। निर्माता के पवित्र नाम और उसकी रोशनी को प्रतिबिंबित करते हैं; उस निर्माता की रचनात्मक गतिविधि के कार्य, और उसकी नियति और शक्ति की कलम के शिलालेख; और वे उसकी पूर्णता की कृपा को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं।

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड का स्वामी इस महानतम सत्य तथा अपनी एकता की सर्वोच्च डिग्री को सिद्ध करता है'
सभी शास्त्रों और पवित्र के माध्यम से प्रकटीकरण
उन्होंने बताया कि सत्य और पूर्णता के सभी लोग अपनी जांच और आध्यात्मिक खोजों के माध्यम से इसी स्तर को साबित करते हैं।

कलात्मकता के चमत्कार दिखाकर इस ओर इशारा करता है,
शक्ति के चमत्कार, और धन के खजाने के बावजूद
इसकी लाचारी और गरीबी। जो लोग इस बात से इनकार करते हैं
एकता के एक मात्र को असंख्य देवताओं को स्वीकार करना होगा
या, सोफिस्टों की तरह, अपने स्वयं के अस्तित्व को नकारते हैं
और ब्रह्माण्ड का.2

2 विशेष रूप से प्लेटो की दृष्टि में, जो कोई भी
केवल घटनाओं में सत्य, चाहे वह इसे व्यक्तिपरक रूप से व्याख्या करे

दूसरा वाक्यांश: (वह) एक है जो ईश्वर की एकता को उसकी एकता के स्पष्ट प्रकटीकरण के स्तर पर बताता है। निम्नलिखित इस स्तर को निर्णायक रूप से साबित करता है। जब हम ब्रह्मांड को देखते हैं, तो सबसे पहली चीज जो हम देखते हैं वह है संपूर्ण व्यवस्था और संवेदनशील संतुलन जो इसमें व्याप्त है। सब कुछ एक सटीक क्रम और एक नाजुक संतुलन के भीतर मौजूद है और

या सापेक्षतावादी रूप से, वहाँ इसे पाने की आशा नहीं की जा सकती; और सही दिशा से दूर जाने में उसका हठ वस्तुतः दर्शनशास्त्र और सत्य की खोज को अस्वीकार करने के बराबर है। कई बाद के विचारक जिनके लिए तत्वमीमांसा, या वास्तविकता की गहनतम प्रकृति की जांच, दर्शनशास्त्र की सर्वोच्च उपलब्धि थी, ने प्लेटो के साथ महसूस किया है कि सोफिस्ट इतने अतात्विक थे कि उन्हें दार्शनिकों के रूप में दर्जा देने का कोई दावा नहीं है। लेकिन ऐसे दौर में जब कई दार्शनिकों के लिए तत्वमीमांसा अब दर्शनशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है और कुछ के लिए तो इसका कोई हिस्सा ही नहीं है, 5वीं और 4थी शताब्दियों ईसा पूर्व में सोफिस्टों की चर्चाओं में बार-बार आने वाली कई समस्याओं और सिद्धांतों की सराहना बढ़ रही है। 18वीं और 19वीं शताब्दियों की शुरुआत में सोफिस्टों को ढोंगी माना जाता था। उनकी बौद्धिक ईमानदारी पर सवाल उठाया गया और उनके सिद्धांतों को ग्रीस के नैतिक ताने-बाने को कमजोर करने के लिए दोषी ठहराया गया। यह आरोप दो तर्कों पर आधारित था, जो दोनों ही सही थे: पहला, कि अनेक सोफिस्टों ने पारंपरिक रूप से स्वीकृत नैतिक संहिता पर हमला किया; और दूसरा, कि उन्होंने नैतिकता के वैकल्पिक तरीकों की खोज की और उनकी सराहना भी की, जो कठोर पारंपरिक संहिता के अंतर्गत अस्वीकार्य प्रकार के व्यवहार को स्वीकार या अनुमति देते थे। (सं.)

माप। करीब से देखने पर, हम एक सतत माप देखते हैं।
आदेश देना और संतुलन बनाना। कोई लगातार
इस क्रम को पूर्ण नियमितता के साथ पुनर्जीवित करता है और
सटीक माप। सब कुछ, जैसा कि यह था, एक
मॉडल को अनगिनत सुव्यवस्थित और तैयार किया जाना चाहिए
संतुलित रूप.

इसका और भी करीब से अध्ययन करने पर हमें एक बुद्धिमत्तापूर्ण बात नजर आती है
और उस व्यवस्था और संतुलन के पीछे न्याय है।
हर घटना का एक उद्देश्य होता है, और हर एक घटना एक उद्देश्य प्रदान करती है।
एक लाभ। और भी करीब से देखने पर अस्तित्व का संकेत मिलता है
सभी में पूर्णतः बुद्धिमान गतिविधि के पीछे एक शक्ति का होना
जो हम देखते हैं, साथ ही व्यापक ज्ञान भी
हर चीज़ को उसके सभी पहलुओं के साथ शामिल करना और
कार्य करता है। इन सभी को मिलाकर, यह पता चलता है कि एक सर्वशक्तिमान
और सर्वज्ञ व्यक्ति इसके पीछे काम करता है
व्यवस्था और संतुलन के पर्दे, वह जो हर चीज को सबसे संवेदनशील संतुलन के
अनुसार आदेश देता है और
एक सार्वभौमिक उद्देश्य और न्याय।

जब हम सभी घटनाओं के आरंभ और अंत का विश्लेषण करते हैं
चीजें, खास तौर पर जीवित प्राणियों की, जिन्हें हम देखते हैं
ऐसा लगता है कि उनके बीजों में उन सभी जीवों के अंग और संरचनाएं समाहित
हैं। उनके फलों में जीवों के अर्थ, साथ ही उनके दर्ज जीवन-इतिहास, फ़िल्टर्ड और
संकेंद्रित रूप में मौजूद हैं। बीज

यहां तक कि इसे कोडित संग्रह भी कहा जा सकता है

वे सिद्धांत जिनके अनुसार उन्हें बनाया गया है;
उनके फल उनके निर्माण और विकास के आदेशों का सूचकांक हैं।

जब हम किसी के बाहरी और भीतरी चेहरे को देखते हैं
जीवित प्राणियों में, हम आसानी से एक अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति को देख सकते हैं
शक्ति का स्वतंत्र नियंत्रण और प्रभावी इच्छाशक्ति का फैशन और व्यवस्था। शक्ति सृजन करती है, और इच्छाशक्ति
डिजाइन और फैशन। वे सभी खाते पर प्रदर्शित करते हैं
उनकी शुरुआत के, एक ज्ञान के निर्देश; पर
उनके अंत का लेखा-जोखा, एक निर्माता की योजना और घोषणा; उनके बाहरी रूपों के कारण, एक कलात्मक, अच्छी तरह से बनाया गया परिधान जो वह जो कुछ भी करता है

वह उन्हें पहनने के लिए कहता है; और, के कारण
उनके आंतरिक रूप, एक सर्वशक्तिमान की सुव्यवस्थित मशीनरी।

इसे देखते हुए, कोई भी समय, स्थान या वस्तु इससे परे नहीं है
एक राजसी निर्माता की शक्ति की समझ।
एक सर्वशक्तिमान इच्छाशक्ति वाले की शक्ति सभी चीजों और उनके कार्यों को व्यवस्थित और निर्देशित करती है।
एक सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय का आदेश और अनुग्रह उन्हें सुंदर बनाता है, और एक
सर्व-स्नेही और सर्व-उदार अलंकृत
उन्हें आभूषण पहनाओ। जो लोग सतर्क हैं वे देख सकते हैं
व्यवस्था और संतुलन, तथा स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले कार्य
आदेश देने और संतुलन बनाने की कला, जो सभी दर्शाती है,

उसकी पूर्ण एकता के साथ, जो एकल है,
अद्वितीय, एकमात्र, सर्वशक्तिमान, इच्छाशक्ति से युक्त, सर्वज्ञ और सर्वबुद्धिमान।

हर चीज़ में एकता का एक पहलू होता है, और एकता एक की ओर इशारा करती है। उदाहरण के लिए, दुनिया एक दीपक (सूर्य) से प्रकाशित होती है, और इसलिए दुनिया का
मालिक एक है। पृथ्वी के सभी जीव एक हैं।
हवा, आग और पानी से सेवा की जाती है, जिनमें से प्रत्येक एक है
और सरल (मिश्रित नहीं)। ऐसा होने पर, एक
जो उन्हें हमारे अधीन रखता है और काम पर रखता है, वह भी एक।

तीसरा वाक्य: उसका कोई साथी नहीं है। चूँकि यह
बाईसवें शब्द के प्रथम स्टेशन में सिद्ध होता है,
हम पाठकों को इसका संदर्भ देते हैं।3

चौथा वाक्यांश: राज्य उसका है इसका अर्थ है
कि वह सबका मालिक है - पृथ्वी से लेकर भगवान तक
सिंहासन, धरती से लेकर आकाश, सूक्ष्मतम कण से लेकर समस्त
खगोलीय पिंड, यहां तक कि सब कुछ
अतीत और भविष्य दोनों अनंत काल के भीतर और भीतर
इस दुनिया और आख़िरत में उसकी सर्वोच्चता है।

---

3 नर्सी, एस., द वर्ड्स, द लाइट, इंक., एनजे: 2005.

[4] अतीत अनंत काल केवल समय का आरंभिक बिंदु नहीं है और इसलिए चीज़ों के अस्तित्व के लिए ज़रूरी नहीं है। वास्तव में, यह ऐसा है जैसे
एक दर्पण जो भूत, वर्तमान और भविष्य के सभी समय को दर्शाता है। लोग
बीते समय की एक सीमा की कल्पना करते हैं, जो आगे तक फैली हुई है

और स्वामित्व की सबसे व्यापक डिग्री,
और ईश्वरीय एकता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति।
इन सत्यों के लिए बहुत मजबूत सबूत एक बार हुआ
मुझे अरबी में। उस सुखद एहसास के लिए
स्मृति को ताज़ा करने के लिए, मैं नीचे उन वाक्यांशों पर विस्तार से प्रकाश डालता हूँ:

राज्य उसी का है , क्योंकि ब्रह्माण्ड उसी का है।
सूक्ष्म जगत की तरह; दोनों उसकी शक्ति के कार्य हैं
और अपने भाग्य के संदेश। उन्होंने आविष्कार किया
स्थूल जगत, इसे साष्टांग प्रणाम और प्रार्थना का स्थान बनाता है
पूजा, और सूक्ष्म जगत का निर्माण किया, जिससे यह
उसने पहले वाले को बनाया और उसे अपना बना लिया
संपत्ति, और बाद का आविष्कार किया, इसे एक नौकर बना दिया। पूर्व में
उनकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई,
और बाद में उसका फैशन और "रंग"
वाणी के माध्यम से अपनी शक्ति प्रदर्शित की।
पूर्व में उनकी महिमा और उनकी दया का पता चलता है
बाद में उनकी कृपा का आयोजन किया जाता है। महामहिम
पूर्व उसकी एकता और उसकी उदारता की गवाही देता है

चीजों की एक श्रृंखला, और इसे अतीत अनंत काल कहते हैं। लेकिन यह गलत है, जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण से पता चलता है: कल्पना करें कि आप एक दर्पण पकड़े हुए हैं जो दाईं ओर अतीत और भविष्य को दर्शाता है
बाईं ओर। दर्पण एक समय में केवल एक ही दिशा को प्रतिबिंबित कर सकता है,
क्योंकि दोनों को एक साथ दिखाने के लिए आपको ऊँचा उठना होगा
अपनी मूल स्थिति से ऊपर उठें और एक ऐसे बिंदु पर पहुंचें जहां दोनों
दायाँ और बायाँ एक हो जाते हैं, जिससे किसी भी चीज़ को पहला या अंतिम, आरंभ या अंत कहना असंभव हो जाता है।

उत्तरार्द्ध में सत्य यह घोषित करता है कि वह एक और अद्वितीय है। पूर्व में उसकी मुहर सभी चीज़ों पर है, जो समग्र हैं, और उत्तरार्द्ध में उसकी मुहर प्रत्येक विशेष शरीर और अंग पर है।

प्रथम खंड: चूँकि स्थूल जगत (ब्रह्मांड) और सूक्ष्म जगत (मानवता) उसकी शक्ति के कार्य और उसकी नियति के संदेश हैं, वे दिव्य शक्ति और नियति की कलम से लिखे गए उसकी एकता के प्रमाण दर्शाते हैं।

मानवता, भले ही छोटे पैमाने पर, ब्रह्मांड में देखी जाने वाली उसी सुव्यवस्थित कला को प्रदर्शित करती है। जिस तरह ब्रह्मांड की कला एकल निर्माता की ओर इशारा करती है, उसी तरह मानवता की सूक्ष्म कला उस निर्माता की गवाही देती है और उसकी एकता को प्रदर्शित करती है। जिस तरह मानवता भगवान का एक सार्थक संदेश है, उनकी नियति का एक सुनियोजित स्तोत्र है, ब्रह्मांड भी नियति की उसी कलम द्वारा लिखी गई एक और सुनियोजित स्तोत्र है, लेकिन एक विशाल पैमाने पर। इसे देखते हुए, एकता के एकल के अलावा कोई और चीज या कोई भी व्यक्ति लोगों के चेहरों पर अपनी मुहर कैसे लगा सकता है, जिससे उन्हें एक ही संरचना और रूप मिल जाए, लेकिन हर एक को अद्वितीय बना दे, या ब्रह्मांड पर अपनी एकता की मुहर लगा दे, जिसके सभी प्राणी एक-दूसरे के साथ इतने घनिष्ठ रूप से काम करते हैं?

दूसरा खंड: उन्होंने स्थूल जगत का आविष्कार किया और उसे दंडवत प्रणाम और उपासना का स्थान बनाया।

सर्वज्ञ निर्माता ने इस ब्रह्माण्ड को एक नये और अद्भुत रूप में बनाया, तथा उस पर अपनी महानता के चिन्ह अंकित कर उसे एक विशाल मस्जिद बना दिया।

इसके भीतर, उसने उन संकेतों को पढ़ने के लिए पुरुषों और महिलाओं को बौद्धिक प्राणियों के रूप में बनाया, और उनकी चमत्कारी कला और अद्भुत, मूल शक्ति पर आश्चर्यचकित होकर उनके सामने झुकने और पूजा करने की प्रवृत्ति के साथ। यह देखते हुए, मानवता एकता के उस एकल निर्माता के अलावा किसी और की पूजा कैसे कर सकती है?

तीसरा खंड: उसने सूक्ष्म जगत का निर्माण किया, जिससे वह झुक गया। वह पहले वाले का मालिक है और दूसरे वाले को अपना सेवक बनाता है। संप्रभुता के राजसी स्वामी ने स्थूल जगत, विशेष रूप से पृथ्वी को अनगिनत संकेंद्रित क्षेत्रों के रूप में बनाया, जिनमें से प्रत्येक एक कृषि योग्य क्षेत्र है जिसमें वह अनंत काल तक फसल बोता, काटता और काटता है। वह निरंतर अपनी संपत्ति का प्रबंधन करता है और उसे काम करने के लिए प्रेरित करता है। उसने कणों या परमाणुओं की दुनिया (सबसे बड़ा क्षेत्र) को एक ऐसा क्षेत्र बनाया जिसमें वह अपनी शक्ति और बुद्धि के साथ ब्रह्मांड की फसलों को बोता और काटता है, और फिर उन्हें अदृश्य दुनिया में, शक्ति के क्षेत्र से लेकर ब्रह्मांड के क्षेत्र में भेजता है।

ज्ञान। पृथ्वी (मध्य क्षेत्र) खेती का एक और स्थान है जिसमें वह हर मौसम में प्रजातियाँ लगाता है और फिर उन्हें काटता और काटता है। वह इसकी अमूर्त फ़सलों (हर चीज़ के जीवन के परिणाम) को अदृश्य की अमूर्त दुनिया में भेजता है।

वह लगातार हर बगीचे (एक छोटा क्षेत्र) को शक्ति से भरता है और बुद्धि से खाली करता है। वह सभी सजीव प्राणियों (एक और भी छोटा क्षेत्र) को उनसे कहीं ज़्यादा फ़सल पैदा करने के लिए प्रेरित करता है। संक्षेप में, संप्रभुता का वह राजसी स्वामी सभी चीज़ों को मॉडल के रूप में बनाता है और उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से तैयार करता है।

अपनी कला की बुनाई का उपयोग करते हुए, वह अपने नामों और अपनी शक्ति के चमत्कारों को प्रकट करने के लिए उन्हें हमेशा नए शिलालेखों से अलंकृत करता है। सब कुछ एक पृष्ठ है जिस पर वह अनगिनत तरीकों से अपने सार्थक संदेश अंकित करता है, अपनी बुद्धि के संकेतों को प्रदर्शित करता है, और उन्हें पढ़ने के लिए सचेत प्राणियों को रखता है। स्थूल जगत को एक संवर्धित संपत्ति बनाने के बाद, उसने मानवता को संरचनाओं और अंगों, इंद्रियों और भावनाओं और विशेष रूप से एक आत्मा के साथ बनाया और संपन्न किया। फिर उसने ऐसी इच्छाएँ, भूख, प्रेरणाएँ और माँगें प्रत्यारोपित कीं कि प्रत्येक व्यक्ति को उस विशाल संपत्ति की अनंत आवश्यकता है।

यह देखते हुए, कौन या कौन सी चीज़ या प्राणी उस संपत्ति पर स्वतंत्र नियंत्रण रख सकता है और उसका स्वामी हो सकता है

उसके उस महान स्वामी के अलावा अन्य सेवक
संप्रभुता, जिसने हर चीज को खेती योग्य बनाया
संपत्ति; जिसने मानवता को नियुक्त किया (इसके बावजूद
भौतिक महत्वहीनता) एक अधीक्षक, निरीक्षक, किसान, व्यापारी,
हेराल्ड और उपासक के रूप में
विशाल संपत्ति; और जिसने पुरुषों और महिलाओं को अपने अधीन कर लिया
उनके सम्मानित अतिथि और प्रिय अभिभाषक?

चौथा खंड: पूर्व में उनकी कला मानव-

इसे एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और बाद में इसमें उनकी रचना और "रंग-चित्रण" भाषण के माध्यम से खुद को प्रदर्शित करता है।
राजसी निर्माता अपनी सार्थक कला को प्रकट करता है
स्थूल जगत में एक पुस्तक के रूप में, इस प्रकार ब्रह्मांड को समझने योग्य
बनाता है। परिणामस्वरूप, लोग सभी सत्य प्राप्त कर लेते हैं
इससे वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करें और उसके अनुसार सभी वैज्ञानिक ग्रंथ
लिखें। यह सार्वभौमिक पुस्तक
परम सत्य पर आधारित ज्ञान की घोषणा की गई है
कुरान का रूप, उस विशाल प्रकट पुस्तक की एक प्रतिलिपि।

जिस प्रकार उनकी उत्तम कला ऊपर प्रकट हुई है,
उनके रंग और उनकी बुद्धि के शिलालेख
मानवता वाणी का फूल खोले। दूसरे शब्दों में,
उनकी कला इतनी सार्थक, नाजुक और सुंदर है कि
यह उस सजीव प्राणी के घटकों को
बोलना।

उस दिव्य कला ने मानवता को इतना रंग दिया ('सबसे सुंदर रूप'), कि एक अमूर्त, अमूर्त, और फिर भी जैविक चीज़ - वाणी का फूल - प्रत्येक व्यक्ति के भौतिक, भौतिक और ठोस सिर के भीतर खिलता है। इसके अलावा, उस दिव्य कला ने वाणी और अभिव्यक्ति की शक्ति को विकसित उपकरणों और विस्तृत क्षमताओं और संकायों से सुसज्जित किया है जिनकी आवश्यकता है

ताकि वह शाश्वत प्रभु के अभिभाषक के रूप में विकसित हो सके।
इस प्रकार मानवता के मूल स्वभाव में दिव्य रंग ने दिव्य वाणी के फूल को खिल दिया।
एकता के एकमात्र ईश्वर के अलावा और कौन या क्या ऐसा चमत्कारी काम कर सकता है?

पांचवां खंड: पूर्व में उसकी शक्ति का पता चलता है

महामहिम; बाद में उनकी दया उनकी कृपाओं का आयोजन करती है। निर्माता की शक्ति, भव्यता और महिमा के माध्यम से खुद को प्रकट करते हुए, ब्रह्मांड को एक शानदार महल के रूप में बनाती है जो सूर्य (उसकी विद्युत रोशनी), चंद्रमा (उसका दीपक), और सितारों (मोमबत्तियाँ) से सुशोभित और प्रकाशित होता है। वह पृथ्वी को एक लदी हुई मेज, एक कृषि योग्य खेत और बगीचा बनाता है, और प्रत्येक पहाड़ को एक गोदाम, एक खूंटी, एक किला बनाता है। वह सभी चीजों को एक विशाल पैमाने पर और उस महल की आवश्यकताओं के रूप में प्रदान करता है, जिससे उसके आधिपत्य की महिमा सबसे चमकदार तरीके से प्रदर्शित होती है।

इसी तरह, वह हर जीवित प्राणी पर अपनी कृपा बरसाकर अपनी दया को कृपालुता के रूप में प्रदर्शित करता है। जब वह अपनी उदारता के माध्यम से उनका भरण-पोषण करता है, तो वह उन्हें अपनी दया और उदारता के प्रकटीकरण से सुशोभित करता है। और इसलिए वह सूर्य जैसे विशाल पिंडों को अपने नामों के माध्यम से अपनी महिमा का बखान करने के लिए प्रेरित करता है, जो सर्व-दयालु, महान हैं, जो कहते हैं: "हे महिमावान, हे महान, हे पराक्रमी", जबकि मक्खियों और मछलियों जैसे छोटे-छोटे सजीव जीव उनकी दया का बखान करते हैं, जो कहते हैं: "हे कृपालु, हे दयालु, हे उदार।"

महामहिम दयालु परमेश्वर, कृपालु परमेश्वर के अलावा और कौन या क्या इस स्थूल जगत की रचना में हस्तक्षेप कर सकता है?

छठा खंड: पहले खंड में महामहिम अपनी एकता की गवाही देते हैं; दूसरे खंड में उनकी उदारता यह घोषित करती है कि वे एक और अद्वितीय हैं। जिस तरह पूरे ब्रह्मांड में प्रकट उनकी प्रभुता की महिमा उनके सभी नामों के साथ प्रकट ईश्वर की एकता को साबित और प्रदर्शित करती है, उसी तरह उनकी प्रभुता की उदारता, जो हर जीवित प्राणी के नियमित प्रावधान को भेजती है, उनके कुछ नामों के साथ भागों या विशेषताओं पर प्रकट उनकी एकता या अद्वितीयता को साबित और प्रदर्शित करती है।

ईश्वर वहीद है : सभी प्राणी एक ईश्वर के हैं, उसी की ओर देखते हैं और उसी ने बनाए हैं। ईश्वर अहद है: सबसे अधिक ईश्वर वहीद है: सभी प्राणी एक ईश्वर के हैं, उसी की ओर देखते हैं और उसी ने बनाए हैं।

सृष्टिकर्ता के नाम प्रत्येक में प्रकट होते हैं
उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर सूर्य के प्रकाश का प्रतिबिंब एकता के अनुरूप देखा जा सकता है,
जबकि सूर्य प्रत्येक पारदर्शी वस्तु और पानी की बूंद में एक साथ खुद को प्रकट करता है (द्वारा)
इसका प्रकाश, ऊष्मा और इसके प्रकाश में मौजूद सात रंग)
एकता के लिए एक सादृश्य प्रदान कर सकता है। उसी तरह,
प्रत्येक में सबसे अधिक दिव्य नामों की अभिव्यक्ति
चीज़, खास तौर पर प्रत्येक जीवित प्राणी में और ऊपर
प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान सभी कुछ एकता की ओर संकेत करता है।

इस प्रकार यह धारा यह इंगित करती है कि लॉर्डशिप का
महिमा, जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है, उसे बनाती है
विशाल सूर्य, पृथ्वी के लिए एक सेवक, एक दीपक और एक भट्ठी
जीवित प्राणी; शक्तिशाली पृथ्वी एक पालना, मकान और व्यापार का स्थान;
आग एक रसोइया और मित्र के रूप में;
जल फिल्टर और पोषण के साधन के रूप में बादल;

---

[5] ईश्वर के दो प्रकार के स्वरूपों अर्थात् वहीदिया और अहदिया को किसी अन्य भाषा में प्रस्तुत करना बहुत कठिन है।
वहीदिया, जिसका इस पुस्तक में सामान्यतः अनुवाद एकता के रूप में किया गया है, का अर्थ है
पूरे ब्रह्माण्ड में या उसके पार ईश्वर की समग्र अभिव्यक्ति
भगवान के लगभग सभी नामों के साथ संपूर्ण। अहदिया, जिसका आमतौर पर एकता और/या अद्वितीयता के रूप में अनुवाद किया जाता है, का अर्थ है भगवान द्वारा किसी विशेष स्थान पर अपने एक या कुछ नामों का विशेष प्रकटीकरण।
चीज़ों या भागों पर। इस तरह की अभिव्यक्ति प्रत्येक चीज़ को देती है
या अपनी स्वयं की प्रकृति और पहचान होने के कारण, और भेद का कारण बनता है प्राणियों के बीच. (ट्र.)

पहाड़ भंडारगृह और खजाने के रूप में; हवा एक

जीवित प्राणियों के लिए पंखा, जो सभी सांस लेते हैं; तथा

जीवन में नए लोगों के लिए एक नर्स के रूप में पानी, जीवित प्राणियों को

मीठे पेय की आपूर्ति करने वाला एक वितरक

अस्तित्व के लिए आवश्यक नमी। यह दिव्य

प्रभुत्व स्पष्ट रूप से ईश्वरीय एकता को दर्शाता है।

एक सृष्टिकर्ता के अलावा कौन सूर्य को बना सकता है?

पृथ्वी के निवासियों की सेवा कौन करेगा?

यूनिटी में से कोई एक हवा की व्यवस्था कर सकता है और इसे स्विफ्ट के रूप में उपयोग कर सकता है

पृथ्वी से संबंधित कई कर्तव्यों वाला सेवक कौन है?

एकता का एकमात्र ईश्वर अग्नि को रसोइया बना सकता है, और

एक छोटी सी लौ से हजारों टन आग भस्म हो सकती है

हर चीज़, तत्व और आकाशीय पिंड

अपनी अभिव्यक्ति द्वारा सर्वशक्तिमान की ओर संकेत करता है

महामहिम.

जिस प्रकार एकता क्षितिज पर स्पष्ट दिखाई देती है,

अनुग्रह और महिमा, उदारता और परोपकार अनुग्रह के क्षितिज पर दिव्य एकता का दावा करते हैं

और दया। प्रत्येक जीवित प्राणी, विशेष रूप से मनुष्य

और महिलाएं, सर्वोच्च कार्यों में से हैं

सर्वव्यापी दिव्य कलात्मकता, और इसमें विकसित संरचनाएं और अंग

शामिल हैं जो असंख्य विभिन्न उपहारों को पहचानते हैं और उनकी सराहना

करते हैं, इच्छा करते हैं और स्वीकार करते हैं। विशेष रूप से, मानवता

प्रतिबिंबों को अवशोषित करती है

ब्रह्माण्ड में प्रकट सभी दिव्य नामों में से एक।

एक केन्द्र बिन्दु की तरह, सभी लोग परमेश्वर की अधिकतर भावनाओं को प्रदर्शित करते हैं
सुंदर नाम और उनकी आवश्यक प्रकृति के दर्पण के माध्यम से एक साथ उसकी एकता की घोषणा करें।

सातवां खंड: पूर्व पर उनकी मुहर है
सभी चीज़ों पर उनकी समग्रता; उत्तरार्द्ध पर उनकी मुहर
प्रत्येक विशेष शरीर और अंग पर है।
राजसी निर्माता की सबसे बड़ी मुहर समग्र रूप से वृहद ब्रह्मांड पर है,
उसकी एकता की मुहर प्रत्येक पर है
इसके अंग और प्रजातियाँ। प्रत्येक व्यक्ति (सूक्ष्म ब्रह्मांड) का चेहरा और शरीर दर्शाता है कि ईश्वर है
एक, वैसे ही प्रत्येक अंग। संक्षेप में, सर्वशक्तिमान
महामहिम सभी चीजों पर एक मोहर लगाते हैं
एकता उसकी गवाही देती है, और प्रत्येक पर एक मुहर है
एकता की ओर इशारा करते हुए।

पाँचवाँ वाक्य: सारी प्रशंसा उसी की है।
चूँकि सभी प्राणियों में पूर्णता देखी जाती है
(प्रशंसा और श्रद्धांजलि अर्पित करने के अवसर)
सारी प्रशंसा उसी की है। सारी स्तुति और प्रशंसा उसी की है।
उत्पत्ति और समय की परवाह किए बिना, उसी को संबोधित हैं,
क्योंकि प्रशंसा उदारता और उपकार से होती है,
पूर्णता और अनुग्रह, और क्योंकि प्रशंसा की ओर ले जाने वाली हर चीज़ उसी की है। वास्तव में, कुरान
यह बताता है कि कोई प्राणी जो कुछ भी करता है या देखा जाता है
वास्तव में, इसका उद्देश्य उसकी आराधना, महिमा, साष्टांग प्रणाम, प्रार्थना और स्तुति करना है - जो सभी उसके लिए उठते हैं

लगातार दिव्य न्यायालय में। निम्नलिखित
तुलना परमेश्वर की एकता की पुष्टि करने वाली इस सच्चाई को दर्शाती है।

हम ब्रह्माण्ड को एक विशाल बंद पार्क के रूप में देखते हैं, इसकी छत ऊँचे-ऊँचे सितारों से चमकीली है और इसकी ज़मीन पर अलंकृत प्राणी रहते हैं। इस रूप में, हम देखते हैं
इसके सुव्यवस्थित, प्रकाशमान आकाशीय पिंड और उद्देश्यपूर्ण एवं अलंकृत सांसारिक प्राणी घोषणा करते हैं,
एक साथ और अपनी विशेष भाषाओं में: "हम
महामहिम के सर्वशक्तिमान के चमत्कार हैं
शक्ति। हम एक सर्व-बुद्धिमान की एकता के साक्षी हैं
सृष्टिकर्ता, एक सर्वशक्तिमान निर्माता।"

पृथ्वी को एक बगीचे के रूप में देखना जिसमें अनगिनत
बहुरंगी और खूबसूरती से व्यवस्थित किस्में
फूलदार पौधे और जिनके माध्यम से असंख्य
पशु प्रजातियाँ बिखरी हुई हैं, हम उन्हें घोषणा करते देखते हैं,
अपनी सुव्यवस्थित संरचनाओं और सुव्यवस्थित रूपों के माध्यम से: "हम में से प्रत्येक एक चमत्कार है, एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा निर्मित कला का एक आश्चर्य,
उसकी एकता का संदेशवाहक और साक्षी बनें।"

उस बगीचे के पेड़ों के ऊपरी हिस्सों को देखकर,
हम जानबूझ कर, बुद्धिमानी से, उदारता से और खूबसूरती से बनाए गए फलों और फूलों को देखते हैं। वे घोषणा करते हैं
एक ही जुबान से: "हम एक दयालु कृपालु परमेश्वर के चमत्कारी उपहार और अद्भुत उपहार हैं

और एक सर्व-दयालु पूर्णता वाला व्यक्ति।"

इस प्रकार पार्क के खगोलीय पिंड और प्राणी,
बगीचे के पौधे और झाड़ियाँ, और उसके पेड़ और
वनस्पतियों के फूल और फल इस बात की गवाही देते हैं और दावा करते हैं: "हमारे निर्माता और निर्माता, जिन्होंने हमें ऐसे उपहार दिए हैं, सभी चीजों को नियंत्रित करते हैं। उनके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है या उनकी शक्ति से परे नहीं है, चाहे वह किसी भी चीज़ के संबंध में हो।
जिसमें सब कुछ बराबर है और उसका मूल्य भी एक ही है। सबसे बड़ा रिश्ता सबसे छोटे रिश्ते जितना ही आसान है
उसकी शक्ति के लिए; और छोटा भी उतना ही कलात्मक है जितना बड़ा। वास्तव में, छोटे में कलात्मकता अधिक है
बड़े की तुलना में।"

सभी अतीत की घटनाएँ, जो उसकी शक्ति के चमत्कार हैं,
गवाही दो कि वह परम शक्तिशाली है
सभी आश्चर्यों को प्रभाव और अस्तित्व में लाता है
भविष्य की आकस्मिकताओं को वह जिसने लाया
बीता हुआ कल ही कल लाएगा, वह सर्वशक्तिमान जिसने अतीत को बनाया है, वह कल को भी लाएगा
भविष्य, और सर्व-बुद्धिमान निर्माता जिसने इसे बनाया
दुनिया परलोक बनाएगी। इसलिए, जिस प्रकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही परलोक का सच्चा उद्देश्य है
पूजा, वह भी इस तरह के एक मात्र योग्य है
स्तुति करो। क्योंकि वह एकमात्र पूज्य है,
सारी प्रशंसा और महिमा उसी की है।

क्या वह सर्वज्ञ रचयिता जिसने सृष्टि की,

स्वर्ग और पृथ्वी लोगों को उनके हाल पर छोड़ देते हैं और

बिना किसी उद्देश्य के, भले ही वे वृक्ष हैं
सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण और उत्तम फल?
वह उन्हें यादृच्छिक कारण और प्रभाव पर छोड़ देता है,
जिससे उसकी गहन बुद्धि व्यर्थ हो जाए? क्या कोई बुद्धिमान और ज्ञानी व्यक्ति पौधे लगाएगा
और एक पेड़ की देखभाल उसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए तैयार करने के लिए करते हैं, केवल उसके फलों को सड़ने या खराब होने के लिए छोड़ देते हैं
चोरों को या तितर-बितर करने के लिए? बिलकुल नहीं, पूरे के लिए
इसका उद्देश्य फल उत्पन्न करना है।

मानवता ब्रह्माण्ड की चेतन सत्ता है,
सबसे उत्तम फल, परिणाम और लक्ष्य। यह देखते हुए, क्यों
क्या ब्रह्माण्ड का सर्व-बुद्धिमान निर्माता मानवता को फल देगा - प्रशंसा और पूजा, धन्यवाद और प्रेम -
दूसरों के लिए? ऐसा करने से ईश्वरीय बुद्धि नष्ट हो जाएगी
और मानवता के निर्माण का उद्देश्य, उसका कलंक
वह शक्ति को नपुंसकता में बदल देता है, तथा अपने सर्वव्यापी ज्ञान को अज्ञान में बदल देता है।

चूँकि चेतन प्राणी ही सृष्टि की धुरी हैं,
ब्रह्माण्ड की रचना के पीछे ईश्वरीय उद्देश्य,
उनके द्वारा दिए गए उपहारों के लिए धन्यवाद और पूजा दी गई
प्राप्त केवल निर्माता को निर्देशित किया जा सकता है।
जो वसंत या सभी फल (जो फल देते हैं) पैदा नहीं कर सकते
वही स्टाम्प) एक सेब नहीं बना सकते, इसे दे दो
किसी को इनाम और अनुग्रह के रूप में, और फिर प्राप्त करें

उस व्यक्ति का धन्यवाद (उसी एक मात्र व्यक्ति की प्रशंसा में हिस्सा लेना जो इसका हकदार है)।

यह देखते हुए, ब्रह्मांड के निर्माता और राजसी प्रदाता, जो सभी प्राणियों का पालन-पोषण करते हैं और अपनी कला के असंख्य चमत्कारों के माध्यम से सचेत प्राणियों द्वारा खुद को प्रिय बनाते हैं, प्रकृति और कारणों के प्रति उनके धन्यवाद और पूजा, प्रशंसा और प्रेम, मान्यता और कृतज्ञता को नहीं छोड़ेंगे। ऐसा करने से उनकी पूर्ण बुद्धि का खंडन होगा और उनके प्रभुत्व की संप्रभुता को नकार दिया जाएगा। सभी धन्यवाद और प्रशंसा केवल उन्हीं की है, क्योंकि ब्रह्मांड की वास्तविकता निरंतर सत्य की भाषा के साथ घोषणा करती है: "हर प्राणी, अतीत अनंत काल से भविष्य के अनंत काल तक, उनकी प्रशंसा करता है।"

छठा वाक्य: वह अकेला ही जीवन देता है, इसका मतलब है कि जैसे केवल वही जीवन दे सकता है, वैसे ही केवल वही किसी भी चीज़ का निर्माण कर सकता है, क्योंकि ब्रह्मांड की आत्मा, प्रकाश, सार, परिणाम और मलाई जीवन है। इस प्रकार जीवन देने वाला ब्रह्मांड का निर्माता होना चाहिए और वह स्वयं हमेशा जीवित और आत्मनिर्भर है। नीचे दी गई तुलना उसके मानव-रूपण के इस स्तर पर ईश्वर की एकता को साबित करती है।

हम पृथ्वी की सतह पर अपने तंबू गाड़े हुए जीवों की शानदार और असंख्य सेनाओं को देखते हैं। उनमें से, सदा-जीवित, आत्मनिर्भर परमेश्वर एक नया और ताज़ा संगठित प्राणी भेजता है।

हर साल वसंत में अदृश्य दुनिया से सेना आती है।
सेना में अनगिनत अनोखी सब्जियाँ और
पशु राष्ट्र। यद्यपि प्रत्येक की वर्दी, प्रावधान, निर्देश, छुट्टी और सेवा की अवधि अलग-अलग होती है, एक कमांडर-इन-चीफ उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है
उसकी असीम शक्ति और बुद्धि, असीम ज्ञान और इच्छा, असीम दया और अक्षय खजाने के माध्यम से सभी की ज़रूरतें पूरी होती हैं। कोई भूल, भ्रम या देरी नहीं है - केवल पूर्ण व्यवस्था और संतुलन है। वह प्रत्येक को उसके अनुसार प्रशिक्षित और निष्क्रिय करता है

इसकी विशिष्ट सेवा और चरित्र.

केवल वही सर्वव्यापी ज्ञान रखता है
उस सेना के बारे में सभी विवरण जान सकते हैं।
पूर्ण शक्ति वाला व्यक्ति ही इसका प्रशासन कर सकता है और इसका
और कौन या क्या हस्तक्षेप कर सकता है और
इस वार्षिक लामबंदी में पुनरुत्थान और सटीक प्रशासन को प्रदर्शित करने, इस प्रशिक्षण और बनाए रखने में हिस्सा लें?

हमारी [अंतर्निहित] अक्षमता हमें केवल सुसज्जित करने की अनुमति देती है
एक बटालियन एक ही शैली में, भले ही इसमें शामिल हों
दस अलग-अलग जनजातियाँ। लेकिन सदा-जीवित, आत्मनिर्भर परमेश्वर अपनी भव्य सेना के असंख्य जनजातियों में से प्रत्येक को आसानी से उपकरण प्रदान करता है
उनके जीवन के लिए आवश्यक है और ऐसा सबसे बुद्धिमानी से करता है
और सटीक व्यवस्था। वह उस शक्तिशाली सेना को आगे बढ़ाता है-

एक ज़बान से घोषणा करें: "वही है जो जीवन देता है," और ब्रह्मांड की मस्जिद में उस विशाल जमावड़े से कहलवाता है:

> ईश्वर! उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है - वह जीवित, आत्मनिर्भर, शाश्वत है। उसे कोई नींद या नींद नहीं आती। स्वर्ग और पृथ्वी पर जो कुछ भी है, उसका मालिक वही है।
>
> जब तक वह इसकी अनुमति न दे, कौन उससे सिफ़ारिश कर सकता है?
> वह जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वे उसके ज्ञान में से केवल वही पाते हैं जो वह चाहता है। उसका सिंहासन आकाशों और धरती को घेरे हुए है, और वह उन दोनों को थामे रखने में थकता नहीं। वह सर्वोच्च, सर्वोच्च है। (2:255)

सातवाँ वाक्य: वह मरने देता है। वह जीवन देता है और वापस लेता है। मृत्यु विनाश या विनाश नहीं है।

विलुप्ति का कारण प्रकृति और उसके कारण माना जाएगा।

बल्कि, जिस प्रकार एक बीज बाहर से मरता और सड़ता है, जबकि भीतर से एक नये और अधिक विस्तृत जीवित पौधे के रूप में विकसित होता है, उसी प्रकार मृत्यु अनन्त जीवन की शुरुआत है।

इस प्रकार वह परम शक्तिशाली जो मृत्यु का सृजन करता है, जीवन प्रदान करता है और उसका संचालन करता है। हम नीचे दिव्य एकता के इस प्रदर्शन का एक शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

ईश्वरीय इच्छा से अस्तित्व निरंतर प्रवाह में चलता रहता है। उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड अपने प्रभु के आदेश से निरंतर चलता रहता है। ईश्वर की आज्ञा से सभी जीव काल की धारा में निरंतर बहते रहते हैं। अदृश्य दुनिया से भेजे जाने के कारण वे वस्त्र पहने हुए हैं।

बाह्य (भौतिक) अस्तित्व में यहाँ और फिर क्रमबद्ध रूप से दूसरी दुनिया में डाला जाता है। भगवान की आज्ञा से, वे लगातार भविष्य से आते हैं, वर्तमान में रुकते हैं, और फिर अतीत में डाल दिए जाते हैं।

यह व्यवस्थित प्रवाह अत्यंत बुद्धिमानीपूर्ण दया और परोपकार के साथ किया जाता है। निरंतर गति अत्यंत ज्ञानपूर्ण बुद्धि और व्यवस्थितता द्वारा की जाती है। प्रवाह की धारा को चिंता और संतुलन के साथ प्रबंधित किया जाता है। सब कुछ निश्चित उद्देश्यों, लाभों और उद्देश्यों के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में, एक सर्वशक्तिमान महामहिम, एक सर्वज्ञ पूर्णता वाला निरंतर प्राणियों के परिवारों को जीवन देता है और उन्हें रोजगार देता है, उनके व्यक्तिगत सदस्यों से लेकर उनके द्वारा बनाए गए संसारों तक, और फिर उन्हें एक उद्देश्य के लिए छोड़ देता है। वह उन्हें मरवाता है, उन्हें दूसरी दुनिया में भेजता है, और उन्हें शक्ति के क्षेत्र से ज्ञान के क्षेत्र में स्थानांतरित करता है।

जो इस ब्रह्माण्ड और समय को संचालित नहीं कर सकता, विविध प्राणियों को जीवन नहीं दे सकता और उन्हें अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मृत्यु के लिए बुला नहीं सकता, फूल की तरह आसानी से वसंत का निर्माण नहीं कर सकता और उसे रोप नहीं सकता और फिर मृत्यु के माध्यम से उसे तोड़ नहीं सकता, वह मृत्यु का निर्माण करने और जीवित चीजों को मरने का दावा नहीं कर सकता। एक सबसे तुच्छ जीवित चीज

जीवन और मृत्यु उस सर्वशक्तिमान सत्ता के नियम के अनुसार घटित होनी चाहिए जिसके हाथ में जीवन के सभी सत्य और मृत्यु के विभिन्न प्रकार हैं, और उसकी अनुमति, आदेश, शक्ति और ज्ञान से ही यह घटित होती है।

आठवाँ वाक्य: वह जीवित है और मरता नहीं। उसका जीवन शाश्वत और शाश्वत है, जिसका न तो आरंभ है और न ही अंत। मृत्यु और अस्तित्वहीनता उसके लिए अर्थहीन हैं, क्योंकि जीवन उसके सार में उत्पन्न होता है और उसके लिए अपरिहार्य है। जिसकी कोई शुरुआत नहीं है उसका कोई अंत नहीं है। जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, वह शाश्वत रूप से स्थायी है। अस्तित्वहीनता उस जीवन पर कैसे आ सकती है जो पूरे अस्तित्व को अपनी छाया बना लेता है? अस्तित्वहीनता और नाश उस जीवन को छू नहीं सकते जिसे आवश्यक अस्तित्व की आवश्यकता है और जो आवश्यक अस्तित्व द्वारा अपेक्षित है।

समाप्ति और विलुप्ति उस जीवन को प्रभावित नहीं कर सकते जिसकी अभिव्यक्ति के माध्यम से सभी जीवन अस्तित्व में आते हैं, जिस पर ब्रह्मांड के स्थायी सत्य निर्भर करते हैं, और जिसके माध्यम से वे जीवित रहते हैं।

जीवन की एक अभिव्यक्ति इस बहुलतापूर्ण दुनिया में जो कुछ भी विलुप्त होने और घटने के अधीन है, उसे एकरूपता प्रदान करती है। उन्हें विघटन से बचाकर, यह उन्हें एक प्रकार की स्थायित्व प्रदान करती है।

दूसरे शब्दों में, जीवन [ब्रह्मांड में, जो शाश्वत जीवन की अभिव्यक्ति है,] बहुलता को एक प्रकार की एकता और स्थायित्व का एक रूप देता है।

अस्तित्वमान रूप [या तो किसी प्रजाति के जीवन, बीज, संतान या अन्य प्राणियों की यादों के माध्यम से।] परिणामस्वरूप, क्षणभंगुरता और क्षणभंगुरता का इस आवश्यक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है, जिसकी एक अभिव्यक्ति जीवन के असंख्य उदाहरणों का कारण बनती है।

ब्रह्मांड की क्षणभंगुरता और ह्रास इस सत्य की गवाही देते हैं। जिस तरह अस्तित्व अपने अस्तित्व और जीवन के माध्यम से सदा-जीवित और अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान व्यक्ति के जीवन की गवाही देते हैं और संकेत देते हैं, उसी तरह वे अपने क्षय और मृत्यु के माध्यम से उस जीवन की स्थायित्व और शाश्वतता की गवाही देते हैं और संकेत देते हैं।6 अपने पूर्ववर्तियों की मृत्यु के बाद नए प्राणियों का प्रकट होना दर्शाता है कि एक सदा-जीवित व्यक्ति निरंतर जीवन की अभिव्यक्ति को नवीनीकृत करता है। बहती नदी पर बुलबुले बड़ी संख्या में आते हैं, एक ही सूर्य की चमक दिखाते हैं, और गायब हो जाते हैं, जबकि नए, बाद के बुलबुले सूर्य की छवियाँ प्रदर्शित करते हैं। यह

6 ईश्वर के अस्तित्व, एकता और पूर्णता को सिद्ध करते हुए

निम्रोद को ब्रह्मांड पर संप्रभुता सौंपते हुए, पैगम्बर अब्राहम तर्क देते हैं कि ईश्वर जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है, और फिर उल्लेख करता है कि वह सूर्य को पूर्व में उदय करता है और पश्चिम में अस्त करता है।

पश्चिम (2:258)। जीवन और मृत्यु देने के एक विशेष अर्थ से सार्वभौमिक अर्थ की ओर यह परिवर्तन उस प्रमाण के सबसे अधिक प्रकाशमान और व्यापक क्षेत्र को दर्शाता है। यह, जैसा कि कुरान के कुछ व्याख्याकार दावा करते हैं, एक अंतर्निहित प्रमाण से स्पष्ट प्रमाण की ओर संक्रमण नहीं है।

यह सूर्य के उच्च एवं स्थायी स्थायित्व की ओर संकेत करता है। इसी प्रकार, उन निरंतर गतिशील सत्ताओं में जीवन और मृत्यु का क्रम एक सदा जीवित, सदा टिके रहने वाले की स्थिरता का साक्ष्य देता है।

ये प्राणी दर्पण हैं। जैसे अंधकार प्रकाश का दर्पण है और अंधकार जितना अधिक तीव्र होता है, उतना ही अधिक चमकदार ढंग से प्रकाश प्रदर्शित करता है, वैसे ही ये प्राणी विपरीतताओं के विपरीत के माध्यम से ईश्वर के नामों और गुणों के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, जिस तरह प्राणी अपनी नपुंसकता के माध्यम से निर्माता की शक्ति और अपनी गरीबी के माध्यम से उसकी समृद्धि के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, उसी तरह वे अपनी क्षणभंगुरता के माध्यम से उसकी स्थायित्व के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं।

खास तौर पर, मिट्टी और पेड़ सर्दियों के दौरान अपनी गरीबी और वसंत के दौरान अपनी चकाचौंध भरी शान और दौलत के ज़रिए एक बेहद शक्तिशाली और बेहद अमीर की शक्ति और दया को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। ऐसा लगता है जैसे सभी प्राणी अपनी भाषा में प्रार्थना करते हैं, जैसे उवैस अल-क़रानी:7

[7] उवेस अल-क़रानी को आम तौर पर सबसे महान तबीउन [पहली पोस्ट-साथी पीढ़ी का सदस्य] माना जाता है। हालाँकि वह इतने बूढ़े थे कि उन्होंने पैगंबर को देखा था, लेकिन उन्हें ऐसा करने का कोई अवसर नहीं मिला। एक दिन पैगंबर ने अपने साथियों को सलाह दी: "अगर तुम उवेस अल-क़रानी को देखो, तो उससे अपने लिए दुआ करने के लिए कहो।"

मुस्लिम, फदैल अल-सहाबा, 223-24। (ट्र.)

हमारे भगवान! आप हमारे भगवान हैं क्योंकि हम देखते हैं कि हम केवल सेवक हैं। हम खुद को प्रशिक्षित नहीं कर सकते, इसलिए हमें प्रशिक्षित करें। आप निर्माता हैं, क्योंकि हम बनाए गए हैं और बनाए जा रहे हैं। आप प्रदाता हैं, क्योंकि हमें प्रावधान की आवश्यकता है और हम खुद के लिए प्रावधान नहीं कर सकते।

इस प्रकार आप हमें बनाते हैं और हमारे लिए भोजन उपलब्ध कराते हैं। आप सच्चे मालिक हैं, क्योंकि हम मालिक हैं। हमारा खुद पर पूरा नियंत्रण नहीं है, इसलिए आप मालिक हैं।

आप शक्तिशाली हैं, आपमें गरिमा और वैभव है।
अपने आप को देखते हुए, हम अपनी गरीबी और असहायता के बावजूद हमारे माध्यम से प्रकट होने वाली शक्ति को देखते हैं। इसलिए हम आपकी महानता और शक्ति के दर्पण हैं। आप परम धनवान हैं, और हम गरीब हैं, लेकिन हमें वह धन दिया गया है जिसे हम स्वयं प्राप्त नहीं कर सकते। इस प्रकार आप धनवान हैं, दाता हैं।

आप सदा-जीवित, सदा-स्थायी हैं, क्योंकि हम जन्म लेते हैं और मरते हैं और इस तरह जीवन के एक सतत दाता की अभिव्यक्ति देखते हैं। आप सदा-स्थायी हैं, क्योंकि हम अपनी मृत्यु और क्षणभंगुरता में आपकी निरंतरता और स्थायित्व देखते हैं। आप हमें उत्तर देते हैं और हमें उपहार देते हैं क्योंकि हम, सभी प्राणी, हमेशा पुकारते हैं और अनुरोध करते हैं, या तो शब्दों के माध्यम से या अपने अस्तित्व की भाषा में। हमारी सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं, हमारे लक्ष्य पूरे होते हैं। इस प्रकार आप हमारी विनती का उत्तर देते हैं।

प्रत्येक प्राणी एक दर्पण है, जो प्रार्थना का अर्थ रखता है तथा अपनी असहायता, दरिद्रता और अभाव के माध्यम से ईश्वरीय शक्ति और पूर्णता को प्रतिबिम्बित करता है।

नौवाँ वाक्य: उसके हाथ में सभी अच्छे साधन हैं
कि सभी अच्छे कर्म उसकी किताब में हैं और सभी भलाई उसके खजाने में है। यह देखते हुए, जो लोग

भलाई की इच्छा रखने वालों को उससे भलाई की मांग करनी चाहिए, और जो लोग भलाई की इच्छा रखते हैं उन्हें ...
जो सर्वोत्तम है उसकी इच्छा करने के लिए उसे प्रार्थना करनी चाहिए। यह दिखाने के लिए

सत्य, हम दिव्य का निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत करते हैं
ज्ञान:

वह निर्माता जो सृजन करता है और अधिकार का प्रयोग करता है
इस ब्रह्मांड में, जैसा कि उनके कृत्यों के माध्यम से देखा गया है,
एक सर्वव्यापी ज्ञान जो उनके अन्दर निहित है
सार। जिस प्रकार यह सर्वव्यापी ज्ञान
उस सत्ता के लिए अपरिहार्य है - जैसा कि सूर्य नहीं कर सकता
इसके प्रकाश के बिना इसके बारे में सोचा जाना आवश्यक है -
सभी चीजें क्योंकि यह उनके अस्तित्व को घेरे हुए है। बस
पृथ्वी की सतह पर स्थित वस्तुएं सूर्य को देख पाती हैं, परंतु कुछ भी नहीं
उस ज्ञान के प्रकाश से छिप नहीं सकते,
जो सभी चीजों को सम्मिलित करता है और उन तक पहुंचता है।

यदि वह ठोस सूर्य, वे अचेतन एक्स-रे, और
जो कुछ भी प्रकाश का स्रोत है,
असहाय मानवता के रूप में, जो कुछ भी उनके सामने आता है उसे देख और भेद सकती है, आकस्मिक, दोषपूर्ण और आकस्मिक होने के
बावजूद, कुछ भी कैसे छिपाया जा सकता है
उस अनिवार्यतः सर्वव्यापी और अनिवार्य शाश्वत ज्ञान के प्रकाश से?
अनगिनत

संकेत इस सत्य की ओर इशारा करते हैं, जैसा कि नीचे देखा जा सकता है:

सभी प्राणियों में देखी गई सारी बुद्धि इस ओर संकेत करती है
वह ज्ञान, जो दयालुता से कार्य करता है
और दयालुता ऐसा इसलिए करती है क्योंकि वह जानता है।
सुव्यवस्थित प्राणी, जिनमें से प्रत्येक में एक पूर्व-संतुलन, एक संतुलित और मापा हुआ रूप होता है, और
एक आदर्श व्यवस्था, उस सर्वव्यापी की ओर इशारा करती है
ज्ञान, क्योंकि व्यवस्था के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है।
शोभा और अलंकरण ज्ञान प्रदर्शित करते हैं।
कलाकार जो सख्त मापदंड के अनुसार काम करता है और
संतुलन एक शक्तिशाली ज्ञान पर निर्भर करता है।
प्राणी के सटीक अनुपात, उसका आकार निर्धारित
इसके उद्देश्य और लाभों के अनुसार, और इसकी फलदायी स्थिति और संरचना से संकेत मिलता है कि वे
ईश्वरीय सिद्धांतों के अनुसार बनाए गए हैं
ईश्वरीय निर्णय का आदेश और दिशा-निर्देश।
वे सभी उसके सर्वव्यापी ज्ञान को दर्शाते हैं।

केवल एक ही व्यक्ति जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है
प्रत्येक चीज़ को एक अद्वितीय लेकिन सुव्यवस्थित रूप दे सकते हैं
उसके जीवन और अस्तित्व के लिए उपयुक्त और प्रासंगिक है। केवल एक ही व्यक्ति जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है, वह सभी जीवित प्राणियों की आवश्यकताओं को उपयुक्त तरीके से, उचित समय पर और अप्रत्याशित स्थानों से पूरा कर सकता है। केवल वही जो प्रत्येक प्राणी की आवश्यकताओं को जानता है
किसी भी चीज की जरूरतें पूरी हो सकती हैं।

जैसे-जैसे प्रत्येक प्राणी मरेगा, उसकी अज्ञानता समाप्त होती जाएगी
जब ऐसा होगा तो पता चलता है कि मृत्यु इस पर निर्भर करती है
यह दृढ़ संकल्प का नियम है और सर्वव्यापी ज्ञान को प्रदर्शित करता है। हालाँकि ऐसा प्रतीत नहीं होता
तो पहली नज़र में, सब कुछ - विशेष रूप से पौधे -
इन चीज़ों के बीज एक निश्चित समय पर मर जाएँगे।
और संतानों को उनके कर्तव्यों को जारी रखने के लिए संरक्षित किया जाता है
या कार्यों, में परिवर्तन का साधन होना
नए जीवन। यह एक सर्वव्यापी ज्ञान को भी प्रदर्शित करता है।

प्रत्येक प्राणी उस दया से संतुष्ट होता है, जो सभी प्राणियों को व्याप्त करती है, क्योंकि वह सभी प्राणियों को भोजन प्रदान करता है।
प्राणियों की संतानों को दूध पिलाता है और पृथ्वी का पोषण करता है
पानी और बारिश के साथ वनस्पति की जरूरतों को जानना चाहिए
सभी शिशुओं और वनस्पतियों का। यह एक व्यापक ज्ञान की ओर इशारा करता है। सभी को बनाने में देखी गई सावधानी
प्राणियों की कलात्मक रचना और कुशलतापूर्ण सजावट, एक सर्वव्यापी ज्ञान को प्रदर्शित करती है, क्योंकि केवल ऐसा ज्ञान ही अनगिनत संभावित अवस्थाओं में से एक व्यवस्थित, अलंकृत, कलात्मक और उद्देश्यपूर्ण अवस्था का चयन कर सकता है।

सृजन और उत्पत्ति में पूर्ण सहजता
चीजें आसानी और सही ज्ञान की ओर इशारा करती हैं
उपलब्धि की सुविधा सीधे आनुपातिक हैं
ज्ञान और कौशल की डिग्री के लिए।

कोई किसी चीज़ के बारे में जितना अधिक जानता है, उसे उतनी ही आसानी से
हम देख सकते हैं कि कैसे सभी चीजें, प्रत्येक
कला का एक चमत्कार, आश्चर्यजनक आसानी और सुविधा के साथ
शीघ्रता और चमत्कारिक ढंग से बनाया जाता है।

इसके अलावा, हजारों अन्य सच्चे संकेत भी दर्शाते हैं
जो इस ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करता है, उसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है। वह सब कुछ

जानता है।
गुण और कार्य, और फिर कार्य।
ब्रह्माण्ड के स्वामी को ऐसा ज्ञान है, वह देखता है
हम और हमारे कार्य हमें पुरस्कृत और दंडित करते हैं
वह हमारे साथ व्यवहार करता है और करेगा भी
उसकी बुद्धि और विवेक की आवश्यकताओं के अनुसार
दया। इसलिए समझदार बनो! इस प्राणी के बारे में ध्यान से सोचो
कौन आपको जानता है और देखता है। इन सत्यों को पहचानो
और अपने आप को एक साथ खींचो.

संभावित आपत्ति: यदि आप कहते हैं कि ज्ञान
अकेले इच्छाशक्ति पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इच्छाशक्ति भी आवश्यक है,
मैं उत्तर देता हूं: सभी प्राणी ईश्वरीय सर्वव्यापी ज्ञान के साक्षी हैं, तथा उस
ज्ञान से युक्त एक की सार्वभौमिक इच्छा की ओर संकेत करते हैं।

सार्वभौमिक इच्छा कई तरीकों से प्रदर्शित होती है:
प्रत्येक प्राणी, विशेषकर संवेदनशील प्राणी, हिचकिचाता है
अनेक संभावनाओं के बीच और फिर भी सबसे अधिक प्राप्त करता है
कई में से निर्धारित एक संभावना के माध्यम से और एक निश्चित के
माध्यम से सुव्यवस्थित और विशिष्ट पहचान

कई फलहीन तरीकों में से एक परिणाम की ओर ले जाने वाला एक तरीका। यह सुव्यवस्थित पहचान, माप और
फॉर्म सबसे संवेदनशील पैमाने के अनुसार दिए गए हैं
और सूक्ष्म संगठन, और ठोस से काटे जाते हैं
अनंत संभावनाओं और निरर्थक तरीकों से बेतरतीब ढंग से बहते तत्व। इससे पता चलता है कि वे हैं
सार्वभौमिक इच्छा के कार्य, क्योंकि चुनाव केवल तभी होता है
पदनाम, वरीयता, उद्देश्य और इच्छा के माध्यम से,
विनिर्देश, जानबूझकर इरादा और इच्छा।
निर्दिष्ट करने के लिए निर्दिष्ट करने वाले की आवश्यकता होती है, और वरीयता के लिए वरीयता देने वाले की आवश्यकता होती है। केवल इच्छा ही
निर्दिष्ट करता है और पसंद करता है.

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति एक मशीन जैसा दिखता है
सैकड़ों प्रणालियों और घटकों से बना है, हालांकि वह एक बूंद से बनाया गया है
पानी। एक पक्षी और एक पेड़, दोनों के सैकड़ों भाग हैं, एक साधारण अंडे से बनाए गए हैं और
एक साधारण बीज, क्रमशः। ऐसी चीजें गवाही देती हैं
शक्ति और ज्ञान तथा उनके निर्माता का संकेत
सार्वभौमिक इच्छा, जिसके द्वारा वह प्रत्येक को निर्दिष्ट करता है
प्राणी के अंग, भाग और अद्वितीय आकार।

संक्षेप में, जिस प्रकार किसी पशु के प्रमुख शारीरिक अंगों के बीच समानता और संगति होती है,
उनके मूल पहलुओं और परिणामों के संबंध में उनके निर्माता की एकता, उनकी अद्वितीय पहचान को इंगित करें

और चेहरे साबित करते हैं कि उनके एकता के निर्माता के पास अपने कार्यों में इच्छा और पूर्ण स्वतंत्रता है। वह केवल वही करता है जो वह करना चाहता है, ब्रह्मांड से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, और उसकी एक पूर्ण, सार्वभौमिक इच्छा है। इस प्रकार प्रत्येक प्राणी, या प्रत्येक प्राणी का प्रत्येक कार्य, ईश्वरीय ज्ञान और इच्छा की गवाही देता है। इसे देखते हुए, जो लोग ईश्वरीय नियति को नकारते हैं, जो दावा करते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान सभी विवरणों को नहीं समझता है या कि कुछ प्राणियों का अस्तित्व प्राकृतिक कारण और प्रभाव के कारण है, वे गंभीर रूप से गलत और भ्रमित हैं। उनका इनकार अनंत आयामों का झूठ है। इसलिए, विचार करें कि किसी भी घटना के बारे में "स्वाभाविक रूप से" कहना कितना गलत और सत्य के विपरीत है, क्योंकि सभी ईश्वरीय इच्छा से होते हैं। इसके बजाय, कहें: "यदि ईश्वर चाहेगा।"

दसवाँ वाक्य: वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है।
चूँकि उनके लिए सब कुछ आसान है, वे आसानी से हर चीज़ को अस्तित्व का आवरण पहना देते हैं और यह कहकर सब कुछ रच देते हैं: "हो जाओ।"

अगर किसी बहुत कुशल कलाकार को किसी चीज़ और हर चीज़ को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए बस अपना हाथ बढ़ाना होता है, तो हम उसकी इस गति और कुशलता को यह कहकर व्यक्त कर सकते हैं कि कलाकार उस काम को इस हद तक नियंत्रित करता है कि ऐसा लगता है कि वह एक स्पर्श या आदेश से अस्तित्व में आ गया है। जब उसका आदेश होता है

वह किसी चीज की इच्छा करता है, उसे केवल यह कहना है कि "हो जाओ" और वह हो जाती है (36:82) और यह भी घोषित करता है कि सर्वशक्तिमान महामहिम की शक्ति हर चीज़ को नियंत्रित करती है
और अत्यंत आसानी से संचालित होता है। निम्नलिखित पाँच
इस व्यापक सत्य के पाँच बिन्दु इस प्रकार हैं
अनगिनत रहस्य.

पहला बिंदु: सबसे बड़ी और सबसे छोटी चीज़
ईश्वरीय शक्ति के लिए समान हैं। एक प्रजाति का निर्माण करना
एक व्यक्ति का निर्माण करना, स्वर्ग का निर्माण करना जितना सरल है
वसंत का निर्माण करना उतना ही आसान है, और वसंत का निर्माण करना
फूल बनाना उतना ही आसान है जितना कि एक फूल बनाना। इस रहस्य को सुलझाया गया है दसवें वचन और उनतीसवें वचन में समझाया गया है, जो साबित करते हैं कि दैवीय शक्ति सितारों, कणों और सभी व्यक्तियों को आसानी से बनाती है

एक व्यक्ति के रूप में.8

दूसरा बिन्दु: पशु और वनस्पति, जो
अनंत बहुलता और उदारता को प्रदर्शित करें
निपुणता और कलात्मकता की सर्वोच्च डिग्री, अत्यंत प्रचुरता और अंतर्संबंध के साथ विशिष्टता और विभेदीकरण की सबसे बड़ी डिग्री, और उच्च-

---

8 नर्सी, एस., द वर्ड्स। दसवाँ शब्द किससे संबंधित है
पुनरुत्थान, जबकि उनतीसवाँ वचन समझाता है
चमक, पारदर्शिता, पारस्परिकता, संतुलन, सुव्यवस्था, आज्ञाकारिता और अमूर्तता के माध्यम से सृष्टि की सहजता का रहस्य। (सं.)

सबसे अधिक प्रचुरता और प्रचुरता के साथ सृजन की कलात्मकता और सुंदरता की सर्वोत्तम डिग्री। इसके अलावा, हालांकि उनके निर्माण में भारी मात्रा में मशीनरी और समय की आवश्यकता होती है, वे अत्यंत आसानी और गति के साथ बनाए जाते हैं, जैसे कि अचानक और कुछ भी नहीं से बनाए गए हों।

यह मौसमी गतिविधि साबित करती है कि आकार और संख्या, पावर की सृजन क्षमता को प्रभावित नहीं करती है।

तीसरा बिन्दु: सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति

ईश्वरीय एकता से आने वाली सहायता के कारण, ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले केंद्र की एकता और ईश्वरीय विशिष्टता या एकता की अभिव्यक्ति से उत्पन्न सुविधा के कारण, उच्चतम सार्वभौमिक को उतनी ही आसानी से और समान कलात्मक मूल्य के साथ बनाता है।

ईश्वरीय एकता से आने वाली सहायता - ईश्वर के नामों की समग्र अभिव्यक्ति के माध्यम से ईश्वर का सार्वभौमिक निपटान: यदि कोई व्यक्ति सभी चीजों का स्वामी है और उन पर नियंत्रण रखता है, तो ऐसी एकता उसे सभी चीजों की शक्ति को एक चीज के पीछे केंद्रित करने और इस तरह सभी चीजों को एक चीज की तरह आसानी से प्रबंधित करने में सक्षम बनाती है। निम्नलिखित तुलना पर विचार करें:

राजा, देश का एकमात्र अधिकारी होने के नाते, हर सैनिक के पीछे सेना की नैतिक शक्ति जुटा सकता है। इससे एक सैनिक दूसरे राजा को पकड़ सकता है और राजा के नाम पर उसे आदेश दे सकता है।

एकमात्र संप्रभु, वह राजा भी प्रबंधन कर सकता है
सेना और अधिकारियों को उतनी ही आसानी से नियंत्रित कर लेता है, जितनी आसानी से वह एक सैनिक का इस्तेमाल करता है
और एक अधिकारी को प्रशासित करता है। चूंकि प्रशासनिक शक्ति केवल उसी की है, इसलिए वह सभी को भेज सकता है
एक सैनिक की सहायता, जो प्रत्येक सैनिक को भरोसा करने की अनुमति देता है
सभी सैनिकों पर। लेकिन अगर उसकी अद्वितीय संप्रभुता और
अधिकार निरस्त कर दिए जाएं तो प्रत्येक सैनिक अपना अधिकार खो देगा
असीम शक्ति और एक कमजोर, साधारण बन जाते हैं
व्यक्तिगत। और, उन्हें प्रशासित करने से
सैनिकों की संख्या जितनी अधिक होगी, उतनी ही कठिनाइयां भी होंगी।

इसी प्रकार, ब्रह्माण्ड के निर्माता की एकता
उसे सभी की अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है
उनके नाम सभी चीजों पर एक साथ काम करते हैं
एक चीज़ को, जिससे वह अनंत और मूल्यवान कला के साथ बना है।
वह सभी चीज़ों को मदद करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे
जब आवश्यक हो तो अन्य चीजों को मजबूत करना।
वह अपनी एकता के कारण सभी चीजों का सृजन, नियंत्रण और प्रशासन करता है, जैसे कि वे एक ही चीज हों। यह दिव्य
एकता यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्माण्ड में प्रचुरता और विविधता के बीच उच्चतम स्तर की कला और मूल्य विद्यमान हों।

यह सुविधा एकता से उत्पन्न हुई है
केंद्र: अगर चीजें व्यवस्थित हों तो सब कुछ आसान हो जाता है
एक केंद्र से, एक हाथ से और एक हाथ से प्रबंधित
कानून। उदाहरण के लिए, इसे लैस करने के लिए लागू करना

सेना में सभी सैनिकों को सुसज्जित करना उतना ही आसान हो जाता है, जितना कि
एक सैनिक को सुसज्जित करना है। अन्यथा, एक सैनिक को सुसज्जित करना
सैनिक को तैयार करना सेना को सुसज्जित करने जितना ही कठिन है।
हजारों फल आसानी से एक पेड़ पर उगते हैं जो
एक ही नियम और एक ही जड़ पर। लेकिन अगर केवल एक ही फल हो सकता
प्रत्येक पेड़ पर फल उगाना उतना ही कठिन होगा जितना कि एक पेड़ उगाना।

के लिए आवश्यक सभी तत्वों की उपस्थिति की आवश्यकता होती है
पेड़ पर जीवित रहने के लिए.

इस प्रकार, क्योंकि ब्रह्माण्ड का निर्माता एकल है और
एक, वह एकता के माध्यम से कार्य करता है। इसे देखते हुए, सभी चीजें
उसके लिए एक चीज़ जितनी आसान हैं, और वह इसे आसान बनाता है
एक चीज़ जो कलात्मक रूप से सभी चीज़ों जितनी मूल्यवान है।
इसके अलावा, असीमित प्रचुरता का निर्माण करके
बहुमूल्य व्यक्तियों के लिए, असीम प्रचुरता की जीभ के माध्यम से, वह अपनी पूर्ण
उदारता प्रदर्शित करता है और अपनी असीम उदारता और रचनात्मकता को प्रकट
करता है।

दिव्य विशिष्टता या एकता का प्रदर्शन: चूँकि राजसी निर्माता भौतिक या
अलौकिक नहीं है
भौतिक, समय और स्थान उसे प्रतिबंधित नहीं कर सकते; न ही
क्या अंतरिक्ष उसकी सभी चीज़ों को शामिल करने में हस्तक्षेप कर सकता है
एक ही समय में सभी घटनाओं को देखते हुए; और
साधन और संपत्ति उसके कार्यों पर पर्दा नहीं डाल सकते। वह और
उनके कार्य विखंडन या विभाजन से मुक्त हैं।

कार्य एक दूसरे में बाधा नहीं डालते, और इसलिए वह ऐसा करता है असंख्य कार्यों को मानो वे एक ही कार्य हों। इस प्रकार उन्होंने एक व्यक्ति में एक संसार समाहित कर देता है, ठीक उसी तरह जैसे वह एक विशाल वृक्ष को उसके बीज में समाहित कर देता है, और सृष्टि का निर्देशन और नियंत्रण करता है मानो वह एक व्यक्ति हो।

सूर्य की छवि हर चमकीली वस्तु में प्रतिबिंबित होती है और चमकदार वस्तु, क्योंकि इसकी चमक इसे कुछ हद तक गैर-प्रतिबंधित बनाती है। चाहे कितने भी दर्पण इसकी ओर रखे जाएं, हर एक में इसकी पूरी, गैर-अपवर्तित छवि होती है, बिना एक दूसरे को रोके। अगर हर चीज के लिए यह संभव होता

सूर्य की अभिव्यक्तियों को सीधे प्राप्त करें-
छवि, सात रंगों वाली रोशनी और गर्मी - सूरज
प्रत्येक चीज़ में इसके प्रभावों को प्रदर्शित करें
अपने सभी परिमाणों में, और एक ही स्थान पर एक साथ कई स्थानों में
प्रवेश कर सकते हैं। इसी तरह - भगवान के लिए
सबसे ऊंची तुलना है - राजसी निर्माता
ब्रह्माण्ड में, उसकी विशिष्टता के कारण, ऐसा
उनकी सभी विशेषताओं के माध्यम से प्रकटीकरण (जो
शुद्ध प्रकाश हैं) और नाम (जो प्रकाशमान हैं)
वह सर्वदा विद्यमान है और सर्वत्र साक्षी है,
यद्यपि वह कहीं नहीं है। वह हर कार्य उसी स्थान पर करता है
एक ही समय में, सभी स्थानों पर, और बिना किसी कठिनाई या बाधा के।

दिव्य एकता से आने वाली सहायता, केंद्र की एकता से उत्पन्न होने वाली सुविधा और दिव्य विशिष्टता या एकता का प्रकटीकरण, इन तीन साधनों के कारण ही यदि सभी प्राणियों का निर्माण और प्रशासन एक निर्माता को दिया जाता है, तो उन्हें बनाना और संचालित करना उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक ही चीज़ को बनाना और संचालित करना। साथ ही, कला में एक भी चीज़ सभी चीज़ों जितनी मूल्यवान हो जाती है। प्राणियों की अनंत प्रचुरता के बीच प्रत्येक व्यक्ति की कला की असंख्य सूक्ष्मताओं द्वारा यह सत्य प्रदर्शित होता है। यदि सृजन का श्रेय सीधे एक ही निर्माता को नहीं दिया जाता है, तो प्रत्येक प्राणी का निर्माण सभी प्राणियों को बनाने जितना ही कठिन है, और सभी प्राणियों का मूल्य एक ही प्राणी के बराबर हो जाता है।

यही कारण है कि दार्शनिकों में तर्क का उपयोग करने में सबसे आगे रहने वाले सोफिस्टों ने "अपनी बुद्धि का त्याग" करने और हर चीज के अस्तित्व को नकारने के लिए मजबूर महसूस किया। यह महसूस करते हुए कि ईश्वर के साथ साझेदार बनाने का मार्ग सत्य और ईश्वर की एकता की पुष्टि करने के मार्ग से कहीं अधिक कठिन है और, क्योंकि उन्होंने पहले से ही बाद वाले मार्ग को अस्वीकार कर दिया था, वे इनकार में पड़ गए।

चौथा बिंदु: स्वर्ग का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना सर्वशक्तिमान की शक्ति के लिए वसंत का निर्माण करना

वह जो ब्रह्माण्ड का प्रशासन तत्परता से करता है
इसी तरह, एक फूल पूरे वसंत की तरह नाजुक, सुंदर और मूल्यवान हो सकता है।

यह सत्य तीन स्रोतों से आता है: सृष्टिकर्ता का
आवश्यक अस्तित्व और उससे पूर्ण अलगाव
सृष्टि, उसके सार की पूर्ण अन्यता
और उसका अप्रतिबंधित होना, और उसका न होना
अंतरिक्ष और उसकी अविभाज्यता से बंधा हुआ।

प्रथम स्रोत: सृष्टिकर्ता का अनिवार्य अस्तित्व
और सृष्टि से पूर्ण अलगाव अनंत का कारण बनता है
आसानी और सुविधा। इस पर विचार करें: अस्तित्व में अलग-अलग डिग्री और स्तर होते हैं, और इसलिए अस्तित्व की दुनिया एक जैसी नहीं होती। इस प्रकार अस्तित्व में गहराई से निहित एक स्तर का कण कम महत्वपूर्ण स्तर के पहाड़ को समाहित कर सकता है।
उदाहरण के लिए,

सिर में सरसों के दाने के बराबर स्मृति क्षमता
प्रकट भौतिक दुनिया से संबंधित हो सकता है
अर्थों की दुनिया में एक पुस्तकालय जितना।
प्रतिबिंब के माध्यम से, एक विशाल शहर को घेर लिया जाता है
बाहरी भाग से संबंधित एक नाखून के आकार का दर्पण
दुनिया।

यदि उस स्मृति और दर्पण में चेतना होती
और रचनात्मक शक्ति, वे की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं
बाहरी दुनिया में उनका सूक्ष्म अस्तित्व
अंतहीन रूप से सक्रिय और अंतहीन ट्रांस-

अर्थ और प्रतिबिंब की दुनिया में निर्माण। दूसरे शब्दों में, अस्तित्व की शक्ति अस्तित्व में उसकी स्थापना की दृढ़ता के सीधे आनुपातिक है। यदि अस्तित्व पूर्ण दृढ़ता और स्थिरता प्राप्त करता है, और इस प्रकार भौतिकता से पूर्ण अलगाव प्राप्त करता है और इसलिए अप्रतिबंधित है, तो इसका आंशिक प्रकटीकरण भी अस्तित्व के कम महत्वपूर्ण स्तरों से संबंधित कई दुनियाओं को निर्देशित कर सकता है।

ब्रह्मांड का महान निर्माता अनिवार्य रूप से विद्यमान है। उसका अस्तित्व उसके सार के लिए अपरिहार्य है और शाश्वत है, क्योंकि उसका अस्तित्व न होना अकल्पनीय है और उसका अंत असंभव है। चूंकि यह अस्तित्व का सबसे दृढ़, मौलिक, सबसे मजबूत और परिपूर्ण स्तर है, इसलिए अन्य सभी स्तर फीके छाया की तरह हैं। उसका अनिवार्य अस्तित्व इतना गहरा और वास्तविक है, और अन्य सभी प्राणियों (जो आकस्मिक हैं) का अस्तित्व इतना फीका और अवास्तविक है कि मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी जैसे समझदार शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि केवल वही वास्तव में मौजूद है। इस प्रकार वे अस्तित्व के अन्य स्तरों को भ्रम या काल्पनिक बना देते हैं।

यह देखते हुए, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की शक्ति, जो कि आवश्यक भी है और उसके सार से भी काफी हद तक संबंधित है, आकस्मिक सत्ताओं के आकस्मिक, कमजोर और अपेक्षाकृत स्थिर अस्तित्व का निर्माण करती है।

अनंत आसानी से। मृतकों को पुनर्जीवित करने के लिए
सर्वोच्च सभा और फिर उनका न्याय करना वैसा ही है
उसके लिए यह उतना ही आसान है जितना कि हर दिन एक पेड़ को जीवन में वापस लाना
वसंत ऋतु में यह पत्तियाँ, फूल,
और फल.

दूसरा स्रोत: उसकी पूर्ण अन्यता
सार और उसकी अप्रतिबंधित सत्ता उसके लिए हर चीज़ को आसान बना देती है, क्योंकि ब्रह्मांड का निर्माता अलग है
ब्रह्मांड से। चूँकि उसका सार अद्वितीय है, इसलिए कोई
बाधा या संयम उसे बाधित करता है या उसे विवश करता है
वह हर चीज़ पर पूर्ण और स्वतंत्र नियंत्रण रखता है। अगर ब्रह्मांड और उसकी घटनाओं का प्रबंधन करना संभव होता
ब्रह्मांड को ही जिम्मेदार ठहराया जाए, तो परिणामस्वरूप होने वाली कठिनाई और भ्रम किसी भी रूप में होने वाली प्रगति को रोक देगा।
अस्तित्व को नष्ट कर देंगे तथा सारी व्यवस्था और सद्भाव को नष्ट कर देंगे।

उदाहरण के लिए, क्या एक सुंदर गुंबदनुमा पत्थर अपने आप व्यवस्थित हो सकते हैं, या क्या एक बटालियन को सैनिकों द्वारा प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है?
अगर ऐसी चीजें संभव भी होतीं, तो भी
सब कुछ अस्तव्यस्त हो जाएगा। अगर पत्थरों की व्यवस्था का श्रेय किसी कारीगर को दिया जाए, और बटालियन के
एक अधिकारी को आदेश सौंपने के दौरान, कलात्मक व्यवस्था और आदेश दोनों आसान होते हैं, क्योंकि
पत्थर और सैनिक एक दूसरे को रोकते हैं, कारीगर

और अधिकारी उनसे हर तरफ से निपट सकते हैं और

बिना किसी बाधा के आदेश दें.

इस प्रकार अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता का पवित्र सार आकस्मिक सत्ता के सार से भिन्न है। बल्कि, सभी सत्य सत्य की किरणें हैं, जो उस सार के सुंदर नामों में से एक है। चूँकि उसका पवित्र सार अनिवार्य रूप से विद्यमान है, भौतिकता से पूरी तरह से अलग है, और पूरी तरह से अद्वितीय है, इसलिए उस सर्व-महान सत्ता की शाश्वत शक्ति आसानी से ब्रह्मांड को बनाए रखती है और उसका प्रशासन करती है जैसे कि वह स्वयं हो।

वसंत ऋतु या एक पेड़। इसके अलावा, दूसरी दुनिया, स्वर्ग, नरक और पुनरुत्थान का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना कि पिछले शरद ऋतु में मर चुके पेड़ को फिर से जीवित करना।

तीसरा स्रोत: सर्वशक्तिमान निर्माता की अंतरिक्ष की उत्कृष्टता उसे अपनी शक्ति के माध्यम से सर्वव्यापी होने की अनुमति देती है। अविभाज्य होने के कारण, वह अपने नामों के माध्यम से हर चीज़ पर पूर्ण नियंत्रण रखता है। परिणामस्वरूप, उसके कार्यों को मौजूदा प्राणियों, साधनों और लोगों द्वारा बाधित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उन्हें ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि ऐसी कोई आवश्यकता होती, तो बिजली के तारों, पेड़ों की शाखाओं और नसों की तरह, चीजें उसके नियंत्रण को आसान बनातीं, जीवन का संचालन करतीं और उसके कार्यों को अधिक त्वरित और तेज़ बनातीं, बजाय इसके कि ऐसी घटनाओं को प्रतिबंधित, बाधित और बाधित करतीं।

सार, सब कुछ आज्ञा का पालन करता है और प्रस्तुत करता है
राजसी सर्वशक्तिमान की शक्ति.

निष्कर्षतः, सर्वशक्तिमान निर्माता बनाता है
सब कुछ उचित रूप में बिना किसी परेशानी के, तेजी से और आसानी से, और बिना किसी प्रक्रिया के।

वह उतनी ही आसानी से सार्वभौमिक चीजों की रचना करता है जितनी आसानी से विशिष्ट चीजों की, तथा

कलात्मक रूप से भी और सार्वभौमिक रूप से भी। निर्माता
सार्वभौमिकों और स्वर्ग और पृथ्वी का है

विवरण और सजीव व्यक्तियों के निर्माता
उसमें निहित है, क्योंकि वे छोटे विवरण हैं
सार्वभौमिक फल, बीज, और लघु नमूने।

चूँकि विवरण बीज और छोटी प्रतियों की तरह होते हैं
सार्वभौमिक, वह जो विशेष बनाता है वह होना चाहिए
सार्वभौमिक तत्वों के निर्माता और नियंत्रक

और आकाश और पृथ्वी। यदि ऐसा न होता, तो कैसे
क्या वह अपनी बुद्धि के सिद्धांतों और ज्ञान के संतुलन के अनुसार, सार्वभौमिक, सर्वव्यापी संस्थाओं की सामग्री, अर्थ और नमूनों को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकता है?

जहाँ तक उनकी अद्भुत कला या अद्भुतता का प्रश्न है,
वे जो रचनात्मकता प्रदर्शित करते हैं, विवरण उससे कमतर नहीं हैं
सार्वभौमिकों के लिए। फूल सितारों से कम नहीं हैं, और
बीज पेड़ों से कमतर नहीं हैं। बल्कि, ईश्वरीय नियति द्वारा बीज में अंकित वृक्ष का अर्थ
वास्तविक, पूर्ण विकसित से भी अधिक अद्भुत है

ईश्वरीय शक्ति द्वारा बुना गया वृक्ष। इसी तरह, मानवता का निर्माण ब्रह्मांड के निर्माण से कहीं अधिक अद्भुत है। यदि किसी ईथर पदार्थ के कणों में एक परमाणु पर ज्ञान का कुरान अंकित किया जाए, तो उसका मूल्य आकाश के तारों में लिखे गए भव्य कुरान से भी अधिक होगा। इसके अलावा, कई विशेष वस्तुएं अपनी चमत्कारी कला के संबंध में सार्वभौमिकों से बेहतर हैं।

पाँचवाँ बिंदु: प्राणियों को बनाने में असीम सहजता और अत्यधिक गति मार्गदर्शन के लोगों को यह दृढ़ विश्वास देती है: प्राणियों को बनाने वाले की शक्ति के संबंध में, स्वर्ग, झरने और उद्यान बनाना उतना ही आसान है जितना कि क्रमशः वसंत, उद्यान और फूल बनाना। साथ ही, जैसा कि: आपकी रचना और आपका उत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28) बताता है, मानवता को पुनर्जीवित करना उतना ही आसान है जितना कि एक व्यक्ति को मरना और फिर से जीवित करना। जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है: यह केवल एक पुकार होगी, फिर देखो, वे सभी हमारे सामने व्यवस्थित हैं (36:53), सर्वोच्च सभा के लिए मानवता को पुनर्जीवित करना उतना ही आसान है जितना कि एक तुरही के धमाके के साथ एक बिखरी हुई सेना को इकट्ठा करना।

यद्यपि यह अत्यंत गति और सहजता निर्माता की पूर्ण शक्ति को सिद्ध करती है, फिर भी उन्होंने गुमराह लोगों को चीजों के निर्माण का श्रेय चीजों को देने के लिए प्रेरित किया है

खुद को। यह देखते हुए कि कुछ साधारण चीजें बहुत आसानी से अस्तित्व में आ जाती हैं, वे गलती से मान लेते हैं कि वे स्वयं निर्मित हैं। वे अनंत शक्ति के अस्तित्व को साबित करने वाली चीज़ों को उसके अस्तित्वहीन होने का सबूत मान लेते हैं! प्रत्येक कण को पूर्णता (जैसे, अनंत शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान) का गलत श्रेय देकर, क्योंकि सभी पूर्णताएँ केवल ब्रह्मांड के निर्माता की आवश्यक विशेषताएँ हैं, वे असीम संभावनाओं का द्वार खोलते हैं।

ग्यारहवाँ वाक्य: और उसी के पास घर वापसी है। सब कुछ क्षणभंगुरता के क्षेत्र से स्थायित्व के निवास में लौट आएगा और सदा-स्थायी रहने वाले की शाश्वत संप्रभुता के आसन पर जाएगा। सब कुछ अनेक कारणों की दुनिया से एकता की शक्ति वाले राजसी एक के क्षेत्र में स्थानांतरित हो जाएगा, [जहाँ उसकी शक्ति कारण और प्रभाव के आवरण के बिना काम करती है]। इस प्रकार तुम्हारा सहारा उसका दरबार है, और तुम्हारी शरण का स्थान उसकी दया है।

इस ग्यारहवें वाक्य में और भी बहुत सी सच्चाइयाँ छिपी हैं।
उनमें से शाश्वत सुख और स्वर्ग से संबंधित सत्य को दसवें और उनतीसवें वचनों में इतनी स्पष्टता से समझाया गया है कि आगे और स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। ये दोनों वचन पाठक को यह विश्वास दिलाते हैं कि जिस प्रकार सूर्य

वह अस्त अगली सुबह फिर से उदय होगा, जीवन,
इस दुनिया का “अमूर्त सूर्य” चमकने के लिए उदय होगा
पुनरुत्थान की सुबह स्थायी रूप से
दुनिया के विनाश के साथ ही यह समाप्त हो जाएगा।

समय के साथ, कुछ जिन्न और मनुष्य अनन्त आनंद से पुरस्कृत होंगे, जबकि बाकी को अनन्त यातना की निंदा की जाएगी।

वास्तव में, ब्रह्मांड का सर्वज्ञ निर्माता, जिसने असीम सर्वव्यापी ज्ञान, असीम सार्वभौमिक इच्छा और अनंत सर्वव्यापी शक्ति, हे मानव के दयालु निर्माता, अपने धर्मग्रंथों और आदेशों में वादा करता है कि ईमानवाले स्वर्ग और अनंत सुख का आनंद लेंगे। और ऐसा ही होगा, क्योंकि वह अपने वादे नहीं तोड़ता, क्योंकि ऐसा करना सबसे भद्दा दोष है जो उससे उत्पन्न होता है या तो अज्ञानता या अक्षमता। चूँकि एक परम पूर्णता को किसी भी दोष से कलंकित नहीं किया जा सकता, या परम शक्तिशाली, सर्वज्ञ अज्ञानता और नपुंसकता के कारण, वादा तोड़कर असंभव है.

इसके अलावा, सभी पैगम्बर, संत, विद्वान, विश्वासी - सबसे बढ़कर पैगम्बर[9] - लगातार अनुरोध करते हैं

[9] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में, नाम या उपाधि के बाद "उन पर शांति और आशीर्वाद हो" लिखा जाता है, जो उनके प्रति हमारा सम्मान दर्शाता है और क्योंकि यह एक धार्मिक

और दयालु और उदार भगवान से उनके सुंदर नामों के माध्यम से उनके वादा किए गए शाश्वत आनंद के लिए प्रार्थना करें। साथ ही, उनकी दया, करुणा, न्याय और बुद्धि (उनके नाम: दयालु, दयालु, न्यायी और बुद्धिमान), साथ ही साथ उनके अधिकांश अन्य सुंदर नाम (जैसे, भगवान और ईश्वर) और गुण (जैसे, आधिपत्य और संप्रभुता), परलोक और शाश्वत सुख की मांग करते हैं और उनकी वास्तविकता की गवाही देते हैं। कुरान, उनका सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन, इस सत्य को दर्शाता है और सिखाता है, और पैगंबर मुहम्मद, उनके सबसे प्रिय, ने अपने पूरे जीवन में इसे सिखाया और अनगिनत चमत्कारों के माध्यम से इसे साबित किया।

हे ईश्वर, उन पर, उनके परिवार और साथियों पर, लोगों की सांसों की संख्या तक आशीर्वाद, शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।

आवश्यकता। उनके साथियों और अन्य प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए: "अल्लाह उनसे प्रसन्न हो" का प्रयोग किया जाता है।
हालाँकि, चूंकि यह गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित कर सकता है, इसलिए ये वाक्यांश इस पुस्तक में नहीं हैं, क्योंकि उन्हें मान लिया गया है और उनका कोई अनादर करने का इरादा नहीं है। (संपादक)

10 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। इन लोगों को अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है। पैगम्बर की पत्नियाँ इस पदनाम में शामिल नहीं हैं। (ट्र.)

स्वर्ग का। हमें और इस ग्रंथ के प्रकाशकों को, हमारे मित्रों, हमारे साथी सईद और हमारे माता-पिता और भाइयों और बहनों के साथ, उसके झंडे के नीचे जीवित कर। अपनी दया के माध्यम से हमें उसकी सिफ़ारिश प्रदान करें, और हमें उसके परिवार और साथियों के साथ स्वर्ग में प्रवेश कराएँ, हे दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन। आमीन।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न ठहराना। हमारे पालनहार, तूने हमें मार्ग दिखा दिया है, उसके बाद तू हमारे दिलों को विचलित न कर। हमें अपनी दया का उपहार दे, क्योंकि तू ही उपहार देने वाला है। मेरे पालनहार, मेरा दिल खोल दे और मेरा काम आसान कर दे। मेरी ज़बान की गांठ खोल दे, ताकि लोग मेरे शब्दों को समझ सकें। हमारे पालनहार, हम पर क्षमा की कृपा कर, क्योंकि तू ही तौबा स्वीकार करने वाला, दयावान है। तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है। तू ही सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है।

दसवें वाक्यांश का परिशिष्ट

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

देखो, केवल अल्लाह के स्मरण से ही हृदय को शांति मिलती है। (13:28)

परमेश्वर एक दृष्टान्त देता है: एक ऐसा मनुष्य जिसके साथ बहुत से लोग मिलते हैं
प्रत्येक स्वामी उसे अपनी ओर खींचता है। (39:29)

प्रश्न: आप एकता में असीम सहजता की घोषणा करते हैं और भगवान के साथ भागीदारों को जोड़ने और बहुतायत में अंतहीन कठिनाई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एकता में सहजता किसी चीज़ का अस्तित्व बनाती है आवश्यक है, जबकि बहुलता में कठिनाई यह लगभग असंभव है। हालाँकि, कठिनाइयाँ और आपके द्वारा बताई गई असंभवताएं मौजूद प्रतीत होती हैं एकता.

उदाहरण के लिए, [के अस्तित्व के संबंध में ब्रह्मांड] आप कहते हैं कि यदि कण नीचे नहीं होते एक ईश्वर की आज्ञा से, प्रत्येक कण एक सर्वव्यापी ज्ञान की आवश्यकता है और पूर्ण शक्ति, या असंख्य वैचारिक संचालनों को नियंत्रित करने में सक्षम होना होगा। लेकिन फिर भी यदि ईश्वर उन सभी को नियंत्रित करता है, तो क्या उनमें अभी भी कोई शक्ति नहीं है? क्या हम अपने अनंत व्यवस्थित कर्तव्यों को पूरा करने के लिए समान गुण रख सकते हैं?

उत्तर: हमने तीन संक्षिप्त रूपक प्रस्तुत किए हैं इस सत्य के बारे में आत्मा और मन को आश्वस्त करने के लिए, निम्नलिखित नुसार:

पहला रूपक: अपने आप में, एक छोटा पारदर्शी और चमकदार कण प्रकाश को धारण नहीं कर सकता अपने स्वयं के आयाम और द्रव्यमान से बड़ा है। हालाँकि,

अगर वह कण सूर्य की अभिव्यक्ति के लिए खुला है, तो वह उस विशाल सूर्य, उसके (सात रंगों वाले) प्रकाश और ऊष्मा को समझ सकता है, और इस तरह उसका सबसे व्यापक प्रकटीकरण प्रदर्शित कर सकता है। अपने आप में, एक कण का कामकाज उसके आयामों द्वारा सीमित होता है। लेकिन अगर वह सूर्य का सामना करके और दर्पण के रूप में काम करके उससे जुड़ता है, तो वह कुछ हद तक सूर्य के कामकाज के उदाहरण प्रदर्शित कर सकता है।

इस प्रकार यदि प्रत्येक प्राणी या कण का अस्तित्व प्रकृति, कारणों या स्वयं के कारण माना जाता है, तो प्रत्येक के पास अपने अद्भुत कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण शक्ति या अनगिनत संचालन उपकरण होने चाहिए। लेकिन यदि अस्तित्व को एकता के एक ही व्यक्ति के कारण माना जाता है, तो प्रत्येक कण परिणामी संबंध के माध्यम से उसका अधिकारी बन जाता है। यह उसे किसी तरह से उसे प्रकट करने में सक्षम बनाता है और, उसकी अभिव्यक्ति का एक उद्देश्य होने के साथ-साथ, उसके अनंत ज्ञान और शक्ति पर निर्भर करता है। सृष्टिकर्ता की शक्ति के साथ यह संबंध उसे अपनी शक्ति से कहीं अधिक कार्य और कर्तव्य करने की अनुमति देता है।

दूसरा रूपक: दो लोगों की कल्पना करें, एक बहादुर लेकिन आत्मनिर्भर और दूसरा देशभक्त और देश के प्रति समर्पित। जब युद्ध छिड़ता है, तो पहला व्यक्ति राज्य से स्वतंत्र होकर काम करना चाहता है,

और इसलिए वह अपनी पीठ पर आवश्यक उपकरण और गोला-बारूद ढोता है। अपनी ताकत के कारण, वह किसी भी हमले से निपट सकता है युद्ध में केवल एक दुश्मन कॉर्पोरल।

दूसरे को अपनी शक्तिहीनता का एहसास हुआ, सेना में भर्ती हो जाता है और उससे जुड़ जाता है राजा। यह संबंध सेना को उसका समर्थन करने में सक्षम बनाता है, और इसलिए वह सेना की ताकत के साथ लड़ता है उसके पीछे। दुश्मन के फील्ड मार्शल से मुठभेड़ पराजित सेना के राजा की, वह उसे अपने कब्जे में ले लेता है अपने राजा का नाम ले लो। पहले सैनिक को अपना नाम ले जाना चाहिए उपकरण और शक्ति के स्रोत स्वयं, और इसलिए केवल अत्यंत महत्वहीन सेवा ही प्रदान कर सकते हैं। दूसरा सैनिक सेना और राजा को अनुमति देता है इन्हें ले जाने के लिए। जैसे कि वह जोड़ रहा था एक छोटे से तार के माध्यम से अपने रिसीवर को मौजूदा तक पहुंचाएं दूरसंचार नेटवर्क, यह कनेक्शन दूसरे सैनिक को अनंत शक्ति से जोड़ता है।

यदि सभी प्राणियों और कणों को जिम्मेदार ठहराया जाए और एकता के एकल को सीधे प्रस्तुत किया गया, वे परिणामी शक्ति और ताकत का उपयोग प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं महान कारनामे। उदाहरण के लिए, एक चींटी ने फिरौन के महल को नष्ट कर दिया महल, और एक मक्खी ने निम्रोद को नरक में भेज दिया।11 इसके अलावा,

---

11 यह उस मच्छर को संदर्भित करता है जो इनमें से किसी एक के माध्यम से प्रवेश करता है निम्रोद के नथुने काट दिए, जिससे इस अत्याचारी की मृत्यु हो गई। पैगम्बर अब्राहम को आग में डाल दिया था। (ट्र.)

एक सूक्ष्म जीव अपने घर में एक अन्यायी तानाशाह को भेज सकता है कब्र, एक गेहूं के दाने के आकार का बीज एक विशाल उत्पादन कर सकता है चीड़ का पेड़, और एक हवा का कण सभी फूलों में प्रवेश कर सकता है और फल व्यवस्थित ढंग से मिलते हैं। ऐसी सहजता उत्पन्न होती है उस प्रस्तुतिकरण से और एक अधिकारी होने से। अगर सब कुछ अपने आप पर छोड़ दिया जाता है और सहयोगियों को साथ ले लिया जाता है ईश्वर के साथ, प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व का श्रेय और स्वतंत्र कारणों या स्वयं पर संचालन, तो प्रत्येक प्राणी का कार्यकलाप उसके अपने तक ही सीमित है शरीर और चेतना.

तीसरा रूपक: दो दोस्तों की कल्पना करें जो भौगोलिक स्थिति लिखने के लिए सांख्यिकीय डेटा का उपयोग करना चाहते हैं किसी ऐसे देश में काम करना जहां वे कभी नहीं गए। मित्र उस देश की सरकार के साथ घनिष्ठ संबंध बनाता है। राष्ट्रीय दूरसंचार केंद्र में प्रवेश करके अपने रिसीवर को उससे जोड़ता है

वह राज्य की लाइनों को एक सस्ते तार के टुकड़े से जोड़ता है उसका टेलीफोन, हर जगह से संचार करता है और डेटा प्राप्त करता है, और एक सटीक और अच्छी तरह से शोध की गई पुस्तक लिखता है। दूसरा [इस पर निर्भर करता है उसे स्वयं 50 मिनट तक लगातार यात्रा करनी होगी। हर जगह को देखने और सभी ज़रूरी जानकारी हासिल करने में उसे कई साल लग गए। या फिर, बहुत ज़्यादा पैसे खर्च करके, उसे अपनी स्वयं की व्यापक टेलीग्राफ और टेलीफोन प्रणाली स्थापित करनी होगी।

यदि अनगिनत चीजों और प्राणियों को जिम्मेदार ठहराया जाए
एकता के एकल के लिए, प्रत्येक कनेक्शन
एक ऐसी वस्तु बन जाती है जिसके माध्यम से “अनन्त सूर्य”
स्वयं प्रकट होता है। यह इसे कनेक्ट करने में सक्षम बनाता है

अपनी बुद्धि के नियमों, अपने ज्ञान के सिद्धांतों और अपनी शक्ति के नियमों के साथ। दिव्य शक्ति के माध्यम से
और शक्ति, यह भगवान की एक निश्चित अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने के स्तर तक बढ़ जाता है और एक सर्वव्यापी आंख, एक सर्वव्यापी चेहरा और (सर्व-महत्वपूर्ण) प्राप्त करता है
ऐसे शब्द जिनका सभी मामलों में वजन होता है।
कनेक्शन इसे अपने स्वयं के द्रव्यमान में कम कर देता है, क्योंकि ब्रह्मांड एक जीव है जो परस्पर संबंधित भागों से बना है,
और इसका मतलब है कि इसे पूर्णतः लागू करना होगा

ऊपर वर्णित कार्यों को करने के लिए देवत्व की आवश्यकता होती है।

एकता और विश्वास का मार्ग इस प्रकार का प्रतिनिधित्व करता है
चीज़ों का अस्तित्व असीम सहजता से हो जाता है
आवश्यक है, जबकि भागीदारों को जोड़ना
भगवान के सामने दुर्गम कठिनाइयाँ हैं।
बहुत सी चीजों को बहुत आसानी से और व्यवस्थित ढंग से व्यवस्थित कर सकते हैं
किसी खास नतीजे को पाने का कोई खास तरीका नहीं है। हालाँकि,
यह उन चीजों की क्षमता से परे है।

तीसरे पत्र में कहा गया है कि जुर्माने का कारण
सूर्य के “आदेश” के तहत ग्रहों द्वारा बनाए गए तमाशे, और पृथ्वी की वार्षिक और दैनिक गतिविधियाँ
जो मौसमी, दैनिक और रात्रि चक्र का कारण बनते हैं,

एक शाश्वत प्रभु के प्रति समर्पण से उसके लिए इस शानदार परिणाम को प्राप्त करने के लिए एक "सैनिक" (पृथ्वी) का उपयोग करना आसान हो जाता है। "चलने" के लिए कहे जाने पर पृथ्वी खुशी से उठती है, अपने भगवान के नामों की महिमा में एक मौलवी दरवेश की तरह घूमती है, और वांछित परिणाम आसानी से और पूर्ण व्यवस्थित रूप से प्राप्त होता है। यदि आकाशीय पिंड पृथ्वी को चलने के लिए कहते हैं, तो एकमात्र संभावित परिणाम अराजकता है, भले ही लाखों बड़े तारे खुद को गति में डाल दें।

निष्कर्ष रूप में, कुरान और ईमान वाले सभी प्राणियों को एक ही रचयिता मानते हैं और हर काम को सीधे उसी से जोड़ते हैं। उनका रास्ता इतना आसान है कि हर प्राणी का अस्तित्व और हर घटना ज़रूरी हो जाती है। लेकिन जो लोग एक चीज़ को असंख्य कारणों से जोड़ते हैं, वे इतना कठिन रास्ता अपनाते हैं कि वह असंभव हो जाता है। गुमराहों की व्याख्या में एक प्राणी के अस्तित्व में आने के लिए जो ज़रूरी है, कुरान के आस्तिक की व्याख्या में वही पूरी सृष्टि के निर्माण के लिए पर्याप्त है। सभी चीज़ों का एक आदेश से चलना कहीं ज़्यादा आसान है, बजाय एक चीज़ का असंख्य आदेशों से चलना। उदाहरण के लिए, एक अधिकारी 1,000 सैनिकों को उतनी ही आसानी से आदेश दे सकता है, जितनी आसानी से एक सैनिक को, जबकि 1,000 सैनिकों को आदेश देना

एक सैनिक की तैनाती से अराजकता फैल जाएगी, क्योंकि यह 1,000 सैनिकों को अलग-अलग कमान देने जैसा होगा।

यह शानदार श्लोक उन लोगों पर यह सत्य फेंकता है जो ईश्वर के साथ साझीदार जोड़ते हैं:

> अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है कि एक आदमी बहुत से मालिकों का होता है, और हर एक उसे अपनी ओर खींचता है और एक आदमी सिर्फ़ एक मालिक का होता है। तो क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? प्रशंसा अल्लाह के लिए है! बल्कि उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते। (39:29)

> आपकी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय इसके कि आपने हमें जो सिखाया है। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं। हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद पर ब्रह्मांड के कण-कण तक तथा उनके परिवार और साथियों पर कृपा और शांति प्रदान करें।

> आमीन। परमेश्वर की स्तुति हो, जो जगत का स्वामी है।

> हे ईश्वर, हे अद्वितीय, हे एकमात्र, हे सबके चाहने वाले। हे वह जिसके अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, केवल वह स्वयं, जिसका कोई साझी नहीं। हे वह जिसकी संप्रभुता और राज्य है, और जिसकी सभी प्रशंसा है। हे वह जो जीवन देता है और मरता है। हे वह जिसके हाथ में सारी भलाई है। हे वह जो हर चीज़ पर शक्तिशाली है। हे वह जिसके पास घर वापसी है। इन वाक्यांशों में निहित रहस्यों के लिए, इस ग्रंथ के प्रकाशकों, उनके मित्रों और इसके लेखक सईद को ईश्वर की एकता के सिद्ध पुष्टिकर्ताओं; सत्यनिष्ठ, सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं; और ईश्वर-चेतन विश्वासियों के साथ शामिल करें। आमीन।

हे ईश्वर! आपकी एकता के रहस्य के लिए,
इस पुस्तक के प्रकाशकों से आपकी एकता के रहस्यों को फैलाने का आग्रह करें। उनके हृदयों को प्रकाश से भर दें
ईमान की राह पर चलते हैं और अपनी ज़बानों से कुरान की आयतें बोलते हैं
सत्य. आमीन. आमीन. आमीन.

बाईसवाँ शब्द

दैवीय अस्तित्व के पक्ष में तर्क और एकता और कैसे हासिल करें ईश्वरीय एकता का दृढ़ विश्वास

दयालु ईश्वर के नाम पर
करुणामय।

पहला स्टेशन

निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

> परमेश्वर ने मानवता के लिए दृष्टान्त प्रस्तुत किये हैं ताकि
> वे उन्हें ध्यान में रखें और सबक लें
> (उनके द्वारा) (14:25)

> हम ऐसी मिसालें इंसानों के लिए पेश करते हैं ताकि
> वे विचार करें। (59:21)

एक बार दो लोग पूल में नहा रहे थे
और एक ट्रान्स जैसी अवस्था में चले गए। जागने पर,
उन्होंने खुद को पूर्ण व्यवस्था की भूमि में पाया
और सद्भाव। वे आश्चर्य से चारों ओर देखने लगे:
यह उन्हें एक विशाल विश्व, एक सुव्यवस्थित संसार प्रतीत हुआ।
राज्य, एक शानदार शहर। अगर इसे स्थिर दृष्टि से देखा जाए तो
एक अन्य दृष्टिकोण से, यह एक महल था जो

अपने आप में एक शानदार दुनिया है। उन्होंने यात्रा की और देखा
इसके प्राणी ऐसी भाषा बोल रहे थे जिसे वे नहीं जानते थे।
हालाँकि, उनके हाव-भाव से पता चल रहा था कि वे
महत्वपूर्ण कार्य करना और महत्वपूर्ण कर्तव्यों का निर्वहन करना।

उनमें से एक ने कहा: "इस दुनिया में एक होना चाहिए
प्रशासक, यह सुव्यवस्थित राज्य एक मास्टर, यह
शानदार शहर एक मालिक, और यह कुशलता से बनाया गया
महल एक मास्टर बिल्डर है। हमें उसे जानने की कोशिश करनी चाहिए,
क्योंकि वह हमें यहाँ लाया है। अगर हम नहीं करेंगे, तो कौन मदद करेगा
हम उन नपुंसक प्राणियों से क्या उम्मीद कर सकते हैं जिनकी भाषा हम नहीं जानते
और जो
हमें अनदेखा करें? इसके अलावा, जिसने एक बहुत बड़ा काम किया है
किसी राज्य, शहर या महल के रूप में दुनिया और
इसे अद्भुत चीजों से भर दिया, इसे सुशोभित किया
हर श्रृंगार, और इसे शिक्षाप्रद चमत्कारों से सजाया गया है, हमसे और उन लोगों से
कुछ चाहता है
जो यहाँ आते हैं। हमें उसे जानना चाहिए और सीखना चाहिए कि
वह चाहता है।"

दूसरे व्यक्ति ने आपत्ति की: "ऐसा कुछ नहीं है
इस संसार पर स्वयं शासन करने वाला प्राणी," जिसके लिए
उसके दोस्त ने जवाब दिया: "अगर हम उसे नहीं पहचानते
और उदासीन बने रहें, तो हमें कुछ भी हासिल नहीं होगा और
कुछ नुकसान का सामना करना पड़ता है। लेकिन अगर हम उसे पहचानने की कोशिश करते हैं,
इसमें कठिनाई कम है और बहुत लाभ मिलने की संभावना है।

तो फिर हम उदासीन कैसे रह सकते हैं?

उस आदमी ने जोर देकर कहा: “मुझे अपना सारा आराम और आनंद मिलता है उसके बारे में न सोचने में। इसके अलावा, ये चीजें
मुझे इससे कोई सरोकार नहीं है। वे संयोग से या किसी कारण से घटित हुए
उसके चतुर मित्र ने उत्तर दिया: "ऐसी हठधर्मिता हमें और कई अन्य लोगों को परेशानी में डाल देगी।
कभी-कभी एक बुरे व्यवहार वाले व्यक्ति के कारण एक राज्य बर्बाद हो जाता है।”

दूसरा व्यक्ति पलटा और बोला: “या तो साबित करो
या तो तुम जो कह रहे हो वह सच है या फिर मुझे अकेला छोड़ दो।
उसके मित्र ने कहा: "चूँकि तुम्हारी हठ पागलपन की सीमा तक है और इससे हमें बहुत कष्ट होगा
विपत्ति, मैं तुम्हें इसके बारह प्रमाण दिखाऊंगा
महल जैसी दुनिया, इस शहर जैसे राज्य में एक मास्टर बिल्डर है जो इसे संचालित करता है और इसमें कोई कमी नहीं है। वह हमारे लिए अदृश्य है, लेकिन उसे हमें देखना चाहिए

और

सब कुछ और सभी आवाजें भी सुनो। उसके सारे काम
चमत्कारी लगते हैं। ये सभी जीव जिन्हें हम

देखते हैं लेकिन जिनकी भाषा हम नहीं समझते
उसके अधिकारी [उसके नाम पर काम करने वाले] होंगे।

बारह प्रमाण

पहला सबूत: चारों ओर देखो, एक छिपा हुआ हाथ है

हर चीज में काम करना, बिना किसी चीज के

ताकत हजारों वजन का भार सहन करना है

पौंड.12 चेतना के बिना कुछ
बहुत बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण काम करते हुए ।13
इसलिए वे स्वयं काम नहीं कर सकते,
एक शक्तिशाली, छिपा हुआ तंत्र उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है।
यदि सब कुछ अपने आप हो रहा होता, तो सभी
इस स्थान पर किया जा रहा कार्य स्वयं एक चमत्कार होगा, और प्रत्येक
कार्य चमत्कारपूर्ण होगा।

दूसरा प्रमाण: इनकी सजावट देखिए

मैदान, खेत और घर। हर एक उस छिपे हुए स्थान की ओर इशारा करते
हुए निशान हैं। एक मुहर या मोहर की तरह, हर एक
उसकी खबर देता है। देखो वह क्या पैदा करता है
कुछ ग्राम कपास.14 देखें कि कितने रोल हैं
कपड़ा, लिनन और फूलदार सामग्री बाहर आ गई है
इसमें कितना मीठा भोजन और अन्य व्यंजन शामिल हैं

---

12 यह उन बीजों को संदर्भित करता है, जिनके सिरों पर पेड़ लगते हैं।

13 यह अंगूर जैसे नाजुक पौधों को संदर्भित करता है, जो स्वयं नहीं बढ़ सकते या फलों का भार नहीं
उठा सकते, और इसलिए
अपनी नाजुक भुजाओं को अन्य पौधों या पेड़ों के चारों ओर फैलाते हैं और
वे अपने आप को चारों ओर लपेट लेते हैं और उन पर लाद लेते हैं।

14 उदाहरण के लिए, एक परमाणु के आकार का खसखस का बीज, एक खुबानी का बीज
जिसका वजन कुछ ग्राम होता है, या प्रत्येक से एक तरबूज का बीज निकलता है
दया के खजाने की बुनी हुई पत्तियां चौड़े कपड़े से भी अधिक सुंदर, फूल सनी से भी अधिक
सफेद या पीले, फल अधिक मीठे
चीनी से अधिक, और जैम से अधिक महीन और स्वादिष्ट, और प्रदान करते हैं
उन्हें हमें दे दो।

यदि हज़ारों लोग इनसे कपड़े पहनें या इन्हें खाएं, तो भी

काफ़ी हो। फिर से, देखो। उसने मुट्ठी भर लिया है
लोहा, मिट्टी, पानी, कोयला, तांबा, चांदी और सोना और
कुछ जीवित प्राणी बनाए।15 देखो और देखो!
काम के प्रकार उस व्यक्ति के लिए विशेष होते हैं जो इसे धारण करता है
पृथ्वी और उसके सभी भाग उसकी चमत्कारी शक्ति के अधीन हैं और उसकी
इच्छा के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं।

तीसरा प्रमाण: इन अमूल्य, चलती-फिरती कलाकृतियों को देखिए।16
प्रत्येक को एक शानदार कलाकृति के रूप में बनाया गया है।
इस विशाल महल का लघु नमूना। जो भी हो
महल में है इन छोटे चलती में पाया जाता है
मशीनें। इस अद्भुत मशीन के निर्माता के अलावा और कौन है
क्या महल में यह सब कुछ एक छोटी सी मशीन में समा सकता है?
क्या संयोगवश या किसी उद्देश्यहीन बात से ऐसा हुआ है?
इस बॉक्स के आकार की मशीन में हस्तक्षेप किया जिसमें एक पूरी दुनिया समाहित है?

हालाँकि कई कलात्मक रूप से
आप जो भी मशीनें देखते हैं, उनमें से प्रत्येक एक सील की तरह है
उस छिपे हुए की, एक हेराल्ड या उद्घोषणा की तरह-

---

15 यह तत्वों से पशु शरीर के निर्माण को संदर्भित करता है
और शुक्राणु से जीवित प्राणी।

16 यह जानवरों और मनुष्यों को संदर्भित करता है। चूँकि एक जानवर
दुनिया का एक छोटा सा सूचकांक है, और मानवता इसका एक लघु रूप है
ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है उसका एक नमूना है
प्रत्येक मनुष्य के भीतर निहित है।

अपने अस्तित्व की भाषा में वे घोषणा करते हैं:
"हम उस व्यक्ति की कलाकृतियाँ हैं जो बना सकता है

इस पूरी दुनिया को उतनी ही आसानी से बनाया, जितनी आसानी से उसने हमें बनाया है।"

चौथा प्रमाण: मैं तुम्हें कुछ दिखाऊंगा
और भी अजीब बात है। देखो, इस देश की सभी चीज़ें
बदल रहा है। हर बेजान शरीर और बेजान "हड्डी"
कुछ उद्देश्यों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है, जैसे
अगर हर कोई दूसरे पर शासन कर रहा होता। इस मशीन को देखिए
हमारे बगल में.17 ऐसा लगता है मानो वह आदेश दे रहा हो और
उसकी सजावट और कामकाज के लिए ज़रूरी सभी सामग्रियाँ दूर-दूर से उसकी ओर दौड़ी आ रही हों. उधर देखो. वह बेजान शरीर मानो
बुला रहा हो, क्योंकि वह हमें बुला रहा है.

सबसे बड़ी संस्थाएं इसकी सेवा करती हैं और इसके लिए काम करती हैं।18 आप
बाकी की तुलना इनसे करें.

---

17 यह फल देने वाले पेड़ों को संदर्भित करता है। मानो उन पर फल लगे हों
पतली शाखाएं सैकड़ों करघे और कारखाने, वे बुनते हैं
अद्भुत, समृद्ध रूप से सजे पत्ते, फूल और फल, और
फिर इन फलों को पकाकर हमें खिलाओ। ऐसे राजसी पेड़
जैसे चीड़ और देवदारु ने अपनी कार्यस्थली कठोर भूमि पर स्थापित कर ली है,
सूखी चट्टान से काम करना।

18 यह "शरीर" अनाज, बीज और मक्खियों के अंडों को दर्शाता है।
एक मक्खी अपने अंडे एल्म के पेड़ की पत्तियों पर छोड़ती है। अचानक,
विशाल वृक्ष अपने पत्तों को माँ के गर्भ, पालने,
शहद जैसे भोजन से भरा भंडार, मानो वह फल देने वाला न होते हुए भी सजीव फल उत्पन्न करता हो।

ऐसा लगता है कि दुनिया के सभी प्राणियों को हर चीज़ ने अपने अधीन कर लिया है। अगर आप छिपे हुए प्राणी के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आपको उसके सभी कौशल, कला और पूर्णता का श्रेय पत्थरों, मिट्टी, जानवरों और लोगों से मिलते-जुलते प्राणियों को देना चाहिए। एक चमत्कार करने वाले प्राणी के स्थान पर, उसके जैसे लाखों चमत्कार करने वाले लोगों का अस्तित्व होना चाहिए, जो एक ही समय में एक दूसरे के विरोधी और समान दोनों हों, और एक दूसरे के भीतर हों, बिना किसी भ्रम और व्यवस्था को बिगाड़े। लेकिन हम जानते हैं कि जब दो शासक आपस में मिलते हैं-

किसी मामले में, परिणाम भ्रम होता है। जब किसी गांव में दो मुखिया, किसी शहर में दो राज्यपाल या किसी देश में दो राजा होते हैं, तो अराजकता पैदा होती है। इसे देखते हुए, क्या होगा यदि एक ही स्थान पर और एक ही समय में अनंत संख्या में निरंकुश शासक हों?

पाँचवाँ प्रमाण: महल के आभूषणों और शहर की सजावट को ध्यान से देखो। इस देश की व्यवस्था को देखो और इस दुनिया के बारे में सोचो।

कलात्मकता। यदि अनंत चमत्कारों और कौशलों वाले किसी छिपे हुए व्यक्ति की कलम काम नहीं कर रही है, या यदि ये सभी अलंकरण अचेतन कारणों, अंधे संयोग और बहरे स्वभाव के कारण हैं, तो यहाँ सब कुछ

एक चमत्कारिक सज्जाकार होना चाहिए
और एक अद्भुत लेखक जो 1,000 अक्षर लिखने में सक्षम है
एक पत्र में किताबें, और असीम रूप से अलग प्रदर्शित करने के लिए
एक ही आभूषण में कलात्मकता के विभिन्न रूप।

इन पत्थरों पर लिखे शिलालेखों को देखिए।19 प्रत्येक
इसमें पूरे महल के शिलालेख शामिल हैं,
शहर की व्यवस्था के लिए कानून और कार्यक्रम
राज्य को संगठित करना। इसे देखते हुए, इन सभी को बनाना
शिलालेख राज्य बनाने के रूप में अद्भुत है.

अतः प्रत्येक शिलालेख और कला का उदाहरण उस छिपे हुए की घोषणा और उसकी मुहरों में से एक है।

अक्षर उसके लेखक को सूचित करता है, और कलात्मक शिलालेख उसके लिखने वाले को ज्ञात करता है। इस प्रकार एक शिलालेख कैसे लिखा जा सकता है?

उत्कीर्णक, एक डिजाइनर, या एक सज्जाकार, जो अंकित करता है
एक ही अक्षर में एक बड़ी पुस्तक और 1,000 प्रदर्शित करता है
एक ही में आभूषण, के माध्यम से ज्ञात नहीं किया जा सकता
उसके शिलालेख और आभूषण?

---

19 यह मानवता को संदर्भित करता है, जो सृष्टि के वृक्ष का फल है,
और उस फल को जो अपने वृक्ष और उसके कार्यक्रम को जन्म देता है
सूची। ईश्वरीय शक्ति की कलम ने जो कुछ भी लिखा है

ब्रह्माण्ड की महान पुस्तक को संकुचित कर दिया गया है
हमारी रचना। ईश्वरीय नियति की कलम ने जो कुछ भी लिखा है
एक विशाल वृक्ष में लिखे गए इस शब्द को उसके नाखून के आकार के फल में शामिल कर लिया गया है।

छठा प्रमाण: इस विशाल मैदान पर आइए।२० हम उस विशाल पर्वत की चोटी पर चढ़ेंगे देखने के लिए आस-पास के क्षेत्र में। हम इन दूरबीनों का उपयोग करते हैं, इस देश में अजीबोगरीब चीजें घटित हो रही हैं। हर घंटे ऐसी चीजें घटित हो रही हैं जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

देखो! ये पहाड़, मैदान और कस्बे हैं अचानक से इतना बदलाव आ गया कि लाखों नई चीजें सामने आ गईं उन्हें एक के बाद एक, पूर्ण व्यवस्थितता से प्रतिस्थापित किया जा सकता है। सबसे अधिक उत्सुक परिवर्तन हो रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे असंख्य परिवर्तन हो रहे हैं।

अंदर और बीच में तरह-तरह के कपड़े बुने जा रहे हैं अन्य। परिचित फूलों वाली चीजों को बदला जा रहा है समान प्रकृति के अन्य लोगों के साथ व्यवस्थित ढंग से लेकिन अलग रूप। सब कुछ ऐसे हो रहा है जैसे प्रत्येक मैदान और पहाड़ एक पृष्ठ है जिस पर अनगिनत अलग-अलग किताबें बिना किसी दोष या कमी के लिखी जा रही हैं। यह अकल्पनीय है कि ये

ऐसी चीज़ें जो अनंत कला, कौशल और सटीकता को प्रदर्शित करती हैं

---

20 यह वसंत और ग्रीष्म ऋतु में पृथ्वी के चेहरे को दर्शाता है, जब अनगिनत प्रजातियों के असंख्य व्यक्तियों को लाया जाता है पृथ्वी पर अस्तित्व में आना और “लिखा जाना”। उन्हें भर्ती किया जाता है और बिना किसी दोष के और पूर्णतः परिवर्तन से गुजर सकते हैं सुव्यवस्था। सबसे दयालु एक की हजारों मेज़ें

बिछाए जाते हैं और फिर हटाकर नए लगा दिए जाते हैं सभी पेड़ थाली ढोने वाले जैसे हैं, और सभी बगीचे कढ़ाई की तरह.

वे अपने आप ही आ जाते हैं। बल्कि, वे दिखाते हैं
वह कलाकार जो उन्हें जन्म देता है।
ये सभी चीजें ऐसे चमत्कार दिखाती हैं, क्योंकि उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। उसके लिए लिखना उतना ही आसान है
एक किताब लिखने के लिए 1,000 किताबें चाहिए।

अपने आस-पास देखो। वह हर चीज़ को अपने में रखता है
उचित स्थान पर ऐसी बुद्धि से, अपना अनुग्रह बरसाता है
जरूरतमंदों और पात्र लोगों पर इतनी उदारता से,
वह पीछे आता है और सामान्य पर्दे और दरवाजे इतनी उदारता से खोलता है कि सभी संतुष्ट हो जाते हैं, और इतनी उदारता से मेजें सजाता है कि सभी को भरपूर भोजन मिलता है
इस भूमि के लोगों और जानवरों के लिए। वास्तव में, ये उपहार प्रत्येक समूह के लिए विशेष और उपयुक्त हैं और
व्यक्तिगत। यह सब कैसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है
मौका, उद्देश्यहीन या व्यर्थ होना, या कई हाथ होना
इसके पीछे क्या कारण है? इसका एकमात्र उचित स्पष्टीकरण यह है कि उनका निर्माता हर चीज़ पर शक्तिशाली है, और वह
सब कुछ उसके अधीन है। इसलिए, मेरे मित्र,
अपने इनकार पर अड़े रहने के लिए आप क्या बहाना ढूंढ सकते हैं?

सातवां प्रमाण: आइये इस अद्भुत महलनुमा विश्व के भागों के आपसी संबंधों पर नजर डालें।

सार्वभौमिक कार्य किए जा रहे हैं और सामान्य क्रांतियाँ इतनी उत्तम क्रमबद्धता के साथ हो रही हैं कि इस महल में सभी चट्टानें, मिट्टी और पेड़

इस दुनिया के सामान्य नियमों का पालन करें जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति

जो चाहे करने के लिए स्वतंत्र। सबसे दूर की चीज़ें एक दूसरे की मदद के लिए आती हैं। पेड़, पौधे और पहाड़ जैसे पहाड़ों पर अदृश्य से आ रहे उस अजीबोगरीब कारवां को देखिए। 21 हर सदस्य अपने सिर पर खाने की ट्रे लेकर इस तरफ़ इंतज़ार कर रहे जानवरों के पास ला रहा है। उस गुंबद में लगे शक्तिशाली बिजली के लैंप को देखिए।22 यह न केवल रोशनी देता है, बल्कि उनके खाने को इतनी अच्छी तरह से पकाता है कि पकाए जाने वाले खाने को एक अदृश्य हाथ से एक तार से बांधा जाता है और आगे बढ़ाकर पेश किया जाता है। 23 इन नपुंसक, कमज़ोर, रक्षाहीन छोटे जानवरों को देखिए।

उनके सिर के ऊपर छोटे-छोटे, झरने जैसे "पंप" होते हैं जो नाज़ुक भोजन से भरे होते हैं। 24 उन्हें भोजन पाने के लिए बस इन पंपों पर अपना मुँह दबाना होता है।

संक्षेप में, इस दुनिया में सभी चीज़ें, मानो आमने-सामने स्थित हों, एक-दूसरे की मदद करती हैं। मानो एक-दूसरे को देखकर, वे एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। एक-दूसरे के काम को बेहतर बनाने के लिए, वे एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और काम करते हैं

---

21 सभी जानवरों का पोषण करने वाले पौधों और पेड़ों का "कारवां"।

22 सूर्य की ओर संकेत.

23 डोरी और उससे जुड़ा भोजन पेड़ की पतली शाखाओं और उन पर लगे स्वादिष्ट फलों को दर्शाता है।

24 माताओं के स्तन.

उनके सहयोग के तरीके एक दूसरे से मेल नहीं खा सकते।
यह सब साबित करता है कि सब कुछ उस अद्भुत महल के निर्माता के अधीन है,
इस दुनिया का असली मालिक। सब कुछ उसी पर चलता है
उसकी ओर से, एक सैनिक की तरह उसके आदेशों का पालन करना।
सब कुछ उसकी शक्ति से होता है, चलता है
उसकी आज्ञा से, और उसकी बुद्धि से व्यवस्थित है।
सब कुछ अपनी उदारता से दूसरों की मदद करता है,
और सब कुछ सहायता के लिए जल्दी किया जाता है
हे मेरे मित्र, क्या तुम दूसरों को अपनी करुणा से बचा सकते हो?
तुम्हें इस पर आपत्ति है?

आठवाँ प्रमाण: हे मेरे मित्र, तू भी अपने को मेरी ही तरह बुद्धिमान समझता है, और आ।
आत्म-पहचान। आप इस भव्य महल के मालिक को पहचानना नहीं चाहते हैं, हालाँकि सब कुछ इशारा करता है
उसे दिखाता है, और उसकी गवाही देता है।
क्या आप ऐसी गवाही से इनकार करते हैं? यह देखते हुए, आपने
महल को भी नकारना और कहना: "वहाँ कोई नहीं है
दुनिया, कोई राज्य नहीं। अपने अस्तित्व को भी नकारो,
और गायब हो जाओ, या फिर होश में आओ और
मेरी बात सुनो।

महल में एकसमान तत्व और खनिज हैं जो पूरे देश को घेरे हुए हैं ।25

---

25 तत्व और खनिज वायु, जल,
प्रकाश और मिट्टी, जो कई व्यवस्थित कार्य करते हैं:

उनसे बनाया जाता है। इसका मतलब यह है कि जो उनका मालिक है, वह उनसे बनी हर चीज का मालिक है, क्योंकि जो खेत का मालिक है, वह उसकी फसल का भी मालिक है और जो समुद्र का मालिक है, वह उसकी सामग्री का भी मालिक है। ये कपड़े और सजे-धजे बुने हुए कपड़े एक ही पदार्थ से बनाए जाते हैं। जाहिर है, जो पदार्थ बनाता है, वह उसे तैयार भी करता है और उससे धागा भी बनाता है, क्योंकि ऐसा काम दूसरों की भागीदारी की अनुमति नहीं देता। इसलिए, उससे कुशलता से बुनी गई सभी चीजें उसके लिए खास हैं।

इस तरह की सभी तरह की बुनी हुई चीज़ें पूरे देश में पाई जाती हैं। वे सभी एक साथ, एक के अंदर या दूसरों के बीच, एक ही तरह से और एक ही पल में बनाई जा रही हैं। वे केवल एक ही व्यक्ति का काम हो सकते हैं जो एक ही आदेश से सब कुछ करता है। अन्यथा समय, फैशन और गुणवत्ता के संबंध में ऐसा पत्राचार और अनुरूपता असंभव होगी। इसलिए, प्रत्येक कुशलता से बनाई गई चीज़ उस छिपे हुए की घोषणा करती है और उसकी ओर इशारा करती है।

यह ऐसा है मानो प्रत्येक प्रकार के फूलदार कपड़े को कुशलता से

ईश्वरीय अनुमति से, वे सभी जरूरतमंद प्राणियों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं, ईश्वरीय आदेश से हर जगह प्रवेश करते हैं और सहायता प्रदान करते हैं, जीवन की आवश्यकताएं पहुंचाते हैं, और जीवित प्राणियों को "दूध पिलाते" हैं।
वे दिव्य कलाकृतियों की बुनाई और सजावट के लिए स्रोत, उत्पत्ति और पालने के रूप में भी कार्य करते हैं।

मशीन बनाई, और स्वादिष्ट निवाला एक टिकट है,
एक मुहर, उस चमत्कार करने वाले का चिह्न।

ऐसा भी लगता है मानो हर कोई अपनी भाषा में कह रहा हो इसके होने का: "जो कोई भी मुझे कला के काम के रूप में अपनाता है मैं जिन बक्सों और दुकानों में काम करता हूँ, उनका भी मालिक हूँ पाया।" प्रत्येक सजावट कहती है: "जिसने मुझे कढ़ाई की, उसने कपड़े का वह रोल भी बुना जिसमें मैं

मैं स्थित हूँ।" प्रत्येक स्वादिष्ट निवाला कहता है: "जो कोई भी मुझे पकाया भी खाना पकाने बर्तन है जिसमें मैं मैं स्थित हूँ।" प्रत्येक मशीन कहती है: "जिसने भी बनाया मैं उन सभी को भी अपने जैसा बनाता हूँ जो पाए जाते हैं

पूरे देश में। जो हमें हर जगह पालता है, वह भी वही है। क्योंकि यही एक व्यक्ति है जो हमें हर जगह पालता है।
ज़मीन और इस महल का मालिक तो वह है ही, हम भी उसके ही हैं।"
ऐसा इसलिए है क्योंकि राज्य से संबंधित कारतूस-बेल्ट या बटन के वास्तविक मालिक को इसका स्वामित्व रखना होता है।
जिन कारखानों में इन्हें बनाया जाता है। अगर कोई
अगर कोई व्यक्ति अनजाने में उस पर स्वामित्व का दावा करता है, तो उसे छीन लिया जाएगा। ऐसे लोगों को राज्य की संपत्ति का मालिक होने का दिखावा करने के लिए दंडित किया जाएगा।

संक्षेप में, यदि प्रत्येक तत्व व्याप्त हो गया है एक दूसरे से अलग और पूरे को शामिल करता है, उनका मालिक केवल वही हो सकता है जो सारी ज़मीन का मालिक हो। चूँकि हर जगह पाए जाने वाले कला के उदाहरण मिलते जुलते हैं एक दूसरे से संपर्क करें और एक ही टिकट प्रदर्शित करें, चाहे जो भी हो

यह स्पष्ट है कि यह पूरे देश में फैल गया है
एक ही व्यक्ति की कला का काम। और, वह एक नियम है
हर चीज़ पर। इस प्रकार एकता का संकेत है,
इस भव्य महल जैसे भवन में एकता की छाप
भूमि। कुछ चीजें एक समान, अनोखी और
एक ही प्रकृति, फिर भी सर्वव्यापी। अन्य चीजें,
यद्यपि विविध और प्रचुर हैं, फिर भी एकता प्रदर्शित करते हैं
समूहीकरण क्योंकि वे एक दूसरे के समान हैं और
हर जगह पाया जाता है। ऐसी एकता एकता की घोषणा करती है
एकता का। इसका मतलब है कि इस भूमि के निर्माता, मेजबान,
और मालिक एक ही होना चाहिए.

ध्यान से देखो। देखो कि एक मोटी डोरी कैसे बनी है
अदृश्य के पर्दे के पीछे से प्रकट हुआ।26
देखिये, कैसे हजारों तार इससे नीचे लटक रहे हैं।
उनके सुझावों को देखें, जिसमें हीरे, सजावट, उपकार और उपहार जुड़े हुए हैं।

हर किसी के लिए खास उपहार। क्या आप इतने मूर्ख हो सकते हैं कि उस
व्यक्ति को न पहचानें और उसका धन्यवाद न करें जिसने
इस तरह के अद्भुत उपहार और उपहार प्रदान करता है
अदृश्य के पर्दे के पीछे? यदि आप उसे नहीं पहचानते हैं, तो आपको तर्क देना चाहिए:
"तार खुद ही इन हीरों और अन्य को बनाते और पेश करते हैं

२६ “मोटी डोरी” एक फल देने वाला पेड़ है, डोरियाँ हैं
इसकी शाखाएँ, और हीरे की सजावट, उपकार, और
उपहार स्वरूप उस पर लटकाए गए विभिन्न फूल और फल हैं।

उपहार।" उस स्थिति में, आपको प्रत्येक को जिम्मेदार ठहराना होगा
एक राजा की स्थिति और कार्य को तार-तार करना [जिसके पास
एक चमत्कारी शक्ति और ज्ञान जो वह चाहे कर सकता है] और यह सब,
जबकि हमारे सामने
आँखें एक अदृश्य हाथ तार बना रहा है और
उन्हें उपहार संलग्न करना!

इस तथ्य को देखते हुए, इस महल में सब कुछ
चमत्कार करने वाले की ओर इशारा करता है न कि
यदि आप उसे नहीं पहचानते, तो किस बात से इनकार करके
महल में जो कुछ घटित हो रहा है, उसमें आप दृढ़ निश्चय दिखाते हैं
एक प्रकार की अज्ञानता जिससे एक सच्चा मानव
डूबना नहीं चाहिए.

नौवां प्रमाण: आओ मित्र, तुम महल के मालिक को न पहचानते हो, न
पहचानना चाहते हो।
क्योंकि आप उसके अस्तित्व को असंभव मानते हैं।
इनकार करो क्योंकि तुम उसकी अद्भुत कला को नहीं समझ सकते
और अभिनय का तरीका। लेकिन ये सब कैसे हो सकता है
उत्तम चीज़ें, यह अद्भुत अस्तित्व,
उसे पहचाने बिना क्या समझाया गया? अगर हम उसे पहचान लें, तो यह पूरा
महल और इसकी भरपूर सामग्री
इसमें दी गई एक भी चीज़ को समझना उतना ही आसान है।

यदि हम उसे नहीं पहचानते और यदि वह नहीं पहचानता
मौजूद है, एक बात को समझाना उतना ही कठिन होगा जितना कि
पूरा महल, क्योंकि सब कुछ कुशलता से बनाया गया है
महल की तरह। चीजें इतनी प्रचुर मात्रा में नहीं होंगी और

किफायती। इनमें से कोई भी चीज़ किसी के पास नहीं हो सकती जो हम देख रहे हैं। उससे जुड़े जैम के जार को देखिए स्ट्रिंग.२७ यदि यह चमत्कारिक ढंग से नहीं बनाया गया होता उसकी छिपी हुई रसोई, हम इसे नहीं खरीद सकते थे किसी भी कीमत पर। लेकिन अब हम इसे कुछ सेंट में खरीदते हैं।

उसे न पहचानने से हर तरह की लगातार कठिनाई और असंभवता उत्पन्न होती है।
एक ही जड़ से, एक ही नियम के द्वारा जीवन दिया जाता है, और एक केंद्र में। इसलिए, हजारों फल बनते हैं एक फल बनाना उतना ही आसान है। अगर यह निर्भर करता है विभिन्न, विशेष केंद्रों और जड़ों पर और अलग, विशेष कानून, प्रत्येक फल होता पेड़ जितना ही कठिन है। अगर सेना का उपकरण एक ही कारखाने में, एक ही कानून के माध्यम से उत्पादित किया जाता है, और एक केंद्र में, यह एक को सुसज्जित करने के रूप में आसानी से किया जाता है सैनिक। लेकिन अगर हर सैनिक का उपकरण कई जगहों से खरीदा जाता है, तो एक सैनिक को लैस करने के लिए उतनी ही फैक्ट्रियों की ज़रूरत होगी जितनी की ज़रूरत है पूरी सेना के लिए.

यह बात इस सुव्यवस्थित महल के लिए भी सत्य है, शानदार शहर, प्रगतिशील राज्य और शानदार

27 जाम का जार दया के उपहारों को दर्शाता है (तरबूज, तरबूज, अनार, और नारियल जैसे दूध के डिब्बे), प्रत्येक
जो ईश्वरीय शक्ति का संरक्षण है।

दुनिया। अगर इन सभी चीजों का आविष्कार
किसी एक प्राणी को जिम्मेदार ठहराना आसान है,
उनकी अनंत प्रचुरता, उपलब्धता और उदारता। अन्यथा सब कुछ इतना महंगा और
कठिन होगा कि पूरी दुनिया ही नहीं होगी

एक भी चीज़ खरीदने के लिए पर्याप्त है।

दसवां प्रमाण: मेरे दोस्त, हम यहाँ रहे हैं
15 दिन तक।28 अगर हम अभी भी इस दुनिया के नियमों को नहीं जानते और
पहचानते हैं, तो हम सजा के हकदार हैं।
हमारे पास कोई बहाना नहीं है, क्योंकि पिछले 15 दिनों से हम
हस्तक्षेप किया गया है, मानो राहत दी गई हो। लेकिन
न ही हमें अपने हाल पर छोड़ा गया है। हम नहीं कर सकते
इधर-उधर भटकना और प्राणियों में अव्यवस्था उत्पन्न करना
इतना नाजुक, संतुलित, सूक्ष्म, कुशलता से बनाया गया,
और ये बहुत शिक्षाप्रद हैं। राजसी स्वामी का दण्ड कठोर होना चाहिए।

वह कितना राजसी और शक्तिशाली होगा
इस विशाल दुनिया को एक महल की तरह व्यवस्थित किया और
वह इसे एक प्रकाश चक्र की तरह संचालित करता है। वह इस विशाल
देश को एक घर की तरह, कुछ भी कमी नहीं। जैसे एक कंटेनर को भरना और फिर
उसे खाली करना, वह लगातार इस महल, इस शहर, इस भूमि को पूर्ण व्यवस्थितता
से भरता है और फिर इसे पूर्ण व्यवस्थितता से खाली कर देता है

[28] यह 15 वर्ष की आयु का संकेत है, जो जिम्मेदारी की आयु है।

ज्ञान। इसके अलावा, एक टेबल सेट करना और फिर
इसे हटाकर, वह पूरे देश में फैला देता है,
यद्यपि एक अदृश्य हाथ से, विविध तालिकाओं के साथ
एक के बाद एक कई तरह के खाद्य पदार्थ, और फिर
नए लाने के लिए उन्हें हटा देता है।29 यह देखकर
और अपने तर्क का उपयोग करके, आप समझ जायेंगे कि
उस विस्मयकारी ऐश्वर्य में असीम उदारता निहित है।

जैसे ये सारी चीज़ें उस अदृश्य की गवाही देती हैं
अस्तित्व की एकता और संप्रभुता, इसलिए ये क्रांतियाँ
और एक के बाद एक होने वाले परिवर्तन उसकी स्थायित्व की गवाही देते हैं। ऐसा कैसे?
चीजों के साथ ही गायब हो जाते हैं, जबकि
जिन चीज़ों को हम कारण मानते हैं, वे बाद में दोहराई जाती हैं
इसलिए किसी भी चीज़ को कारणों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता; हर चीज़ एक अमर के कार्य के रूप में होती है।
उदाहरण के लिए, नदी की सतह पर चमकते बुलबुले आते-जाते रहते हैं, लेकिन उनके बाद नए बुलबुले आते रहते हैं।
भी चमकते हैं। तो, उन्हें क्या चमकाता है
नदी के ऊपर ऊँचा खड़ा कुछ स्थिर है-

---

२९ ये तालिकाएँ गर्मियों में पृथ्वी की स्थिति को दर्शाती हैं, जिसके दौरान
दयालु अल्लाह की सैकड़ों मेज़ें तैयार की जाती हैं
दया की रसोई में ताजा और अलग, और फिर हैं
हर बगीचा एक खाना पकाने का बर्तन है, और हर पेड़ एक ट्रे-वाहक है।

और स्थायी प्रकाश है। इसी तरह, इस दुनिया में होने वाले त्वरित परिवर्तन और लुप्त होने वाली चीज़ों की जगह लेने वाली चीज़ें, वही गुण ग्रहण करते हुए, दिखाती हैं कि वे एक स्थायी और अमर चीज़ की अभिव्यक्तियाँ, शिलालेख, दर्पण और कलाकृतियाँ हैं।

ग्यारहवाँ प्रमाण: आओ, हे मित्र। अब मैं तुम्हें एक और निर्णायक प्रमाण दिखाऊँगा जो पिछले दस प्रमाणों के बराबर ही शक्तिशाली है। चलो जहाज़ पर चढ़ते हैं और उस प्रायद्वीप की ओर चलते हैं, क्योंकि इस रहस्यमयी दुनिया की कुंजियाँ वहाँ हैं।30 इसके अलावा, हर कोई उस प्रायद्वीप की ओर देख रहा है, कुछ उम्मीद कर रहा है और वहाँ से आदेश प्राप्त कर रहा है। हम उतर चुके हैं। वहाँ पर विशाल सभा को देखो, मानो देश के सभी महत्वपूर्ण लोग एकत्र हुए हों। ध्यान से देखो, इस महान के लिए

---

30 जहाज इतिहास को दर्शाता है, प्रायद्वीप सुख के समय की जगह को दर्शाता है, और पैगंबर के युग को दर्शाता है। इस अंधेरे तट पर आधुनिक सभ्यता की पोशाक उतारना

इस युग में, हम समय के सागर पर इतिहास के जहाज पर सवार होकर यात्रा करते हैं, खुशी के समय में अरब प्रायद्वीप पर उतरते हैं, और सृष्टि के गौरव से मिलते हैं, क्योंकि वह अपना मिशन पूरा कर रहा है।

हम जानते हैं कि वह ईश्वरीय एकता का इतना शानदार सबूत है कि वह पूरी पृथ्वी और समय के दो चेहरों को प्रकाशित करता है

(भूत और भविष्य) को दूर करता है, तथा अविश्वास और गुमराही के अंधकार को दूर करता है।

समुदाय का एक नेता है। चलो उसके करीब पहुँचते हैं
उसके बारे में जानें। उसकी शानदार सजावट देखें—

एक हज़ार से भी अधिक।31 वह कितनी ज़ोरदार बात कहता है।

उसकी बातचीत कितनी सुखद है। मैंने सीखा है

इन 15 दिनों के दौरान उन्होंने जो कुछ कहा, उसका एक छोटा सा अंश, और

आप मुझसे भी यही सीख सकते हैं। वह देश के गौरवशाली चमत्कार-प्रदर्शनकारी

सम्राट के बारे में बात कर रहे हैं, जिन्होंने उन्हें हमारे पास भेजा है। देखिए,

वह ऐसे चमत्कार दिखा रहा है कि हमें

वह जो कहता है उसकी सच्चाई को स्वीकार करें।

ध्यान से देखो। प्रायद्वीप के प्राणी ही नहीं, बल्कि वह अपनी आवाज भी निकाल रहा है।

पूरे देश ने इसे अद्भुत अंदाज में सुना। दूर-दूर तक हर कोई इसे सुनने की कोशिश कर रहा है।

उनके प्रवचन, यहां तक कि जानवर भी। यहां तक कि पहाड़ भी

जो आज्ञाएँ वह लेकर आया है उन्हें सुन रहे हैं

वे पेड़ अपनी जगह पर ही हिल रहे हैं।

वह जिस स्थान की ओर इशारा करता है, वहाँ चले जाएँ।

वह जहाँ चाहे वहाँ पानी फेंक सकता है।

गेर्स एक भरपूर झरने की तरह है और दूसरों को पीने देता है
उनके यहाँ से।

---

31 हज़ार सजावट पैगंबर के चमत्कारों को दर्शाती हैं,
सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं के अनुसार, संख्या लगभग एक
हज़ार।

देखो, महल के उस महत्वपूर्ण दीपक
उसके इशारे पर गुंबद दो टुकड़ों में बंट जाता है।32 इसका मतलब है
यह सम्पूर्ण भूमि और इसके निवासी यह स्वीकार करते हैं कि
वह एक दूत है। मानो उसे समझ आ रहा हो कि वह
अदृश्य का सबसे प्रतिष्ठित और सच्चा अनुवादक है

चमत्कार दिखाने वाला, अपनी प्रभुता का संदेशवाहक, अपने ताबीज का खुलासा करने वाला, तथा अपनी आज्ञाओं को संप्रेषित करने वाला एक विश्वसनीय दूत,

वे उसकी बात मानते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं। उसके चारों ओर जो लोग हैं,

जो भी वह कहे, उसे स्वीकार करो। उसकी आज्ञाओं का पालन करके और उसके इशारे पर चलकर, इस देश की हर चीज़, यहाँ तक कि पहाड़ भी,
वृक्ष और वह विशाल प्रकाश जो हर जगह प्रकाश फैलाता है, उसकी पुष्टि करते हैं।33

32 महत्वपूर्ण दीपक चंद्रमा है, जो दो भागों में विभाजित हो जाता है
उनके हाव-भाव। जैसा कि मौलाना जामी ने टिप्पणी की: "वह अनपढ़
जिसने कभी नहीं लिखा, उसने अपनी उंगली की कलम से लिखा
अलिफ़ [अरबी वर्णमाला का पहला अक्षर]
आसमान को छूकर एक चालीस को दो पचास में बदल दिया।" दूसरे शब्दों में
शब्दों में, चाँद को विभाजित करने से पहले, यह अरबी जैसा दिखता था
अक्षर मीम, जिसका गणितीय मान चालीस है।
विभाजित होकर, यह दो अर्धचंद्र बन गए जो दो ननों के समान थे,
जिसका मूल्य पचास है।

33 लेखक पहाड़ों और पेड़ों का हवाला देते हुए उत्तर देता है
पैगम्बर का आह्वान। उन्नीसवें पत्र के नौवें से लेकर अंतिम भाग तक देखें
सैद नूरसी, द लेटर्स (तुर्की: द लाइट,

तो, हे मित्र, क्या इस सबसे शानदार, भव्य और गंभीर व्यक्ति द्वारा लाई गई जानकारी में कोई धोखा हो सकता है, जो राजा के शाही खजाने से 1,000 अलंकरणों को धारण करता है? चमत्कार दिखाने वाले राजा के बारे में उनके शब्द पूरे विश्वास के साथ कहे गए हैं और देश के सभी गणमान्य लोगों द्वारा उनकी पुष्टि की गई है, जैसा कि राजा के गुणों और उनके आदेशों के संचार के बारे में उनका वर्णन है।

यदि आपको लगता है कि इनमें कुछ धोखा है, तो आपको इस महल, उन दीपों और इस मण्डली के अस्तित्व और वास्तविकता को नकारना होगा। आपके आपत्तियों का खंडन प्रमाण की शक्ति से किया जाएगा।

बारहवाँ प्रमाण: अब तुम्हें थोड़ा होश आ गया होगा। मैं तुम्हें एक और प्रमाण दिखाऊँगा जो पिछले ग्यारह प्रमाणों के योग जितना ही मजबूत होगा।

इस महान् आदेश को देखो,34 जो उतरा है-

इंक., 2002) (अनुवाद) विशाल प्रकाश सूर्य है। एक बार पैगंबर अली की बाहों में सो रहे थे, जिन्होंने उनके प्रति गहरे प्रेम और सम्मान के कारण उन्हें नहीं जगाया। जब पैगंबर जागे, तो सूरज ढलने वाला था, और अली ने अभी तक दोपहर की नमाज़ नहीं पढ़ी थी। पैगंबर के आदेश पर, पृथ्वी थोड़ा पीछे की ओर घूमी और सूरज क्षितिज के ऊपर दिखाई दिया ताकि अली प्रार्थना कर सकें। यह पैगंबर के प्रसिद्ध चमत्कारों में से एक है।

34 यह महान् आदेश कुरान को दर्शाता है और यह मुहर उसकी चमत्कारिकता को दर्शाती है।

ऊपर से देखा और जिसे हर कोई देखता है
विस्मय या श्रद्धा से पूरा ध्यान केन्द्रित करना।

1,000 सजावटों के साथ इसका अर्थ स्पष्ट है। डिक्री की शानदार शैली हर किसी को आकर्षित करती है
प्रशंसा, और इतने महत्वपूर्ण मामलों के बारे में बात करता है
और गंभीर है कि हर कोई सुनने के लिए मजबूर महसूस करता है। यह इस भूमि पर शासन करने वाले व्यक्ति के सभी कार्यों, विशेषताओं और आदेशों का वर्णन करता है, जिसने इसे बनाया
यह महल, और इन चमत्कारों को प्रदर्शित करता है।
डिक्री पर एक शक्तिशाली मुहर, एक अनूठा मुहर
हर पंक्ति और वाक्य। अर्थ, सत्य,
आज्ञाएँ, और ज्ञान के उदाहरण जो यह प्रदान करता है, उसकी शैली उसके लिए अद्वितीय है, जो एक मोहर या मुहर की तरह भी कार्य करता है।

संक्षेप में, यह सर्वोच्च आदेश दर्शाता है कि सर्वोच्च
सूर्य के समान स्पष्ट रूप से होना, ताकि जो नहीं है
अंधे उसे "देख" सकते हैं। अगर तुम होश में आ गए हो, दोस्त, तो अभी के लिए इतना ही काफी है। क्या तुम्हारे पास
और अधिक आपत्तियाँ?

जिद्दी आदमी ने जवाब दिया: "सबके सामने
इन प्रमाणों के आधार पर मैं केवल यही कह सकता हूँ: 'सारी स्तुति ईश्वर की हो,'
क्योंकि मैं इस बात पर विश्वास करने लगा हूँ, एक तरह से उज्ज्वल रूप से
सूर्य और दिन के उजाले की तरह स्पष्ट, कि इस भूमि में एक
एक ही प्रभु सम्पूर्णता का, एक ही स्वामी यह संसार
महिमा का, और यह महल अनुग्रह का एकमात्र निर्माता है।

मुझे बचाने के लिए भगवान आपसे प्रसन्न हों
मेरी पिछली ज़िद और मूर्खता से।
सत्य को प्रदर्शित करने के लिए सबूत पर्याप्त हैं। लेकिन
प्रत्येक उत्तरवर्ती प्रमाण के साथ, अधिक स्पष्ट और बेहतर,
ज्ञान के सुखद, सहमत और उज्ज्वल स्तर, परिचितता के दृश्य और खिड़कियाँ
प्यार के द्वार खुल गए और पता चल गए। मैंने सुना और सीखा।"

यह दृष्टान्त, महान सत्य की ओर संकेत करता है
ईश्वरीय एकता और ईश्वर में विश्वास पूर्ण हो जाता है।
परम दयालु परमेश्वर की कृपा से,
क़ुरआन का ज्ञान और विश्वास का प्रकाश,
अब मैं परिचय के बाद 12 झलकियाँ दिखाऊंगा
दिव्य एकता के सूर्य से,
दृष्टांत में 12 प्रमाण हैं। सफलता और मार्गदर्शन केवल ईश्वर से ही मिलता है।

दूसरा स्टेशन

निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

दयालु ईश्वर के नाम पर

करुणामय।

ईश्वर हर चीज़ का निर्माता है, और वह संरक्षक है
सब कुछ पर उसका अधिकार है; सभी चीज़ों की कुंजियाँ उसी की हैं
आकाश और पृथ्वी (39:62-63)

अतः महिमा उसकी हो, जिसके हाथ में प्रभुता है
हर चीज़ का, और किसके पास तुम्हें लाया जा रहा है
वापस. (36:83)

कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका ख़ज़ाना हमारे पास न हो।
और हम उसे निश्चित और उचित मात्रा में अवतरित करते हैं।

(15:21)

ऐसा कोई प्राणी नहीं जो चलता हो, परन्तु वह उसे अपने द्वारा ले जाता है।
निस्संदेह मेरा रब सीधी राह पर है।

(11:56)

मेरी "कतरा" (दिव्य सागर से एक बूंद) में
यूनिटीज़ प्रूफ़्स), जिसमें ईश्वर में विश्वास पर चर्चा की गई है,
विश्वास के स्तंभों में से पहला और सबसे महत्वपूर्ण,
मैंने संक्षेप में बताया कि प्रत्येक प्राणी दर्शाता है और
ईश्वर के अस्तित्व और एकता की गवाही देता है
55 तरीके। अपने "नुक्ता" में मैंने सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रमाणों में से चार
सार्वभौमिकों का उल्लेख किया है।
अस्तित्व और एकता। मेरे [12] अरबी ग्रंथों में,
मैंने सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व और एकता के सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों पर
चर्चा की है। इसलिए मैं नहीं करूंगा
यहाँ इस मामले पर बहुत गहराई से चर्चा की गई है, लेकिन केवल इससे संबंधित
ईश्वर में विश्वास के सूर्य की 12 किरणें। इनके बारे में मैंने रिसाले-ए-नूर में अन्यत्र
संक्षेप में लिखा है।

बारह झलकियाँ

प्रथम झलक: ईश्वरीय एकता की पुष्टि
दो प्रकार के होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई महत्वपूर्ण, अमीर

जब किसी व्यक्ति का माल बाज़ार या कस्बे में पहुँचता है, तो उसका स्वामित्व को दो तरीकों से जाना जा सकता है। एक है
उन्हें देखो और निष्कर्ष निकालो कि केवल वह ही इसका मालिक हो सकता है
इतने सारे आइटम। यदि एक नियमित व्यक्ति का अनुमान है या उनकी निगरानी की गई, बहुत कुछ चोरी हो सकता है या अन्य आंशिक स्वामित्व का दावा कर सकते हैं। दूसरा तरीका है हर पैकेट के लेबल को पढ़ना और हर चीज़ को पहचानना रोल की मोहर और हर बिल की सील। यह एक को अनुमति देता है यह निष्कर्ष निकालना कि सब कुछ उस व्यक्ति का है, क्योंकि सब कुछ उसी की ओर संकेत करता है।

ठीक उसी तरह, दो प्रकार के होते हैं
ईश्वरीय एकता की पुष्टि। एक है आस्तिक की सतही और सामान्य पुष्टि:
"ईश्वर
सर्वशक्तिमान एक है, उसका कोई साझीदार या समान नहीं है। यह ब्रह्मांड उसका है।" दूसरा ही सच्चा प्रतिज्ञान है।
उनकी शक्ति की मुहर, उनके आधिपत्य की मुहर, और हर चीज पर हिस्पेन का शिलालेख, एक खोलता है खिड़की से सीधे सब कुछ से उसका प्रकाश मिलता है।
तब व्यक्ति लगभग इस बात की पुष्टि करता है और विश्वास करता है प्रत्यक्ष अवलोकन से आने वाली निश्चितता, कि सब कुछ उसकी शक्ति से अस्तित्व में आता है हाथ, कि उसका कोई साझी या सहायक नहीं है दिव्यता और प्रभुत्व या उसकी पूर्ण संप्रभुता।
इसके माध्यम से, व्यक्ति स्थायी डिग्री प्राप्त करता है
दिव्य उपस्थिति के प्रति जागरूकता। अब मैं पुरुषों को ईश्वरीय उपस्थिति के प्रति जागरूकता प्रदान करूँगा।

कुछ "किरणों" का उपयोग करके यह साबित करें कि सब कुछ दिखाई देता है
ईश्वर की एकता.

नोट: दिव्य गरिमा और महानता के लिए आवश्यक है
ईश्वरीय शक्ति को ढकने के लिए भौतिक या प्राकृतिक कारण
संचालन। ब्रह्मांड में कार्यरत वास्तविक एजेंट
वह सभी की शाश्वत रूप से प्रार्थनीय शक्ति है। दिव्य
एकता और महिमा, साथ ही ईश्वर की पूर्ण स्वतंत्रता और उत्कृष्टता, इसकी
मांग करती है।
अनन्त प्रभु के अधिकारी, वह सब जो उसकी शक्ति को व्यक्त करता है
आदेश (जैसे, हवा, देवदूत, या प्राकृतिक कारण),
वे अधिकारी नहीं हैं जिनके माध्यम से वह अपना कार्य करता है
संप्रभुता, लेकिन उसकी संप्रभुता के अग्रदूत और,
स्वर्गदूतों, पर्यवेक्षकों और अधीक्षकों के साथ
भगवान के रूप में उनके कार्य - पालनकर्ता, प्रशासक,
पालन-पोषण करने वाले और प्रशिक्षक—संसारों के। वे मौजूद हैं
क्योंकि वे शक्ति की गरिमा को ज्ञात करते हैं और
प्रभु की महिमा, ताकि आधार और नीच चीजें
इसका श्रेय सीधे तौर पर पावर को नहीं दिया जाना चाहिए।

मानव राजा के विपरीत, जो मूलतः कमज़ोर है
और बेसहारा, सर्वशक्तिमान ईश्वर अधिकारियों का उपयोग नहीं करता है
अपने अधिकार का प्रयोग करने के लिए। हालाँकि सब कुछ
के सिद्धांत के अनुसार प्रतीत होता है
कारण और प्रभाव के बीच अंतर को समझना, मन की सतही दृष्टि में
शक्ति की गरिमा को बनाए रखना है।

दर्पण की तरह हर चीज़ के दो चेहरे होते हैं।
दृश्यमान, भौतिक दुनिया को देखता है, जैसा दिखता है
दर्पण का रंगीन चेहरा, और इसका हिसाब रखने का एक तरीका हो सकता है
विभिन्न "रंगों" और राज्यों के लिए। दूसरा चेहरा है
दर्पण के चमकते चेहरे की तरह और देखता है
इसमें चीजों का आंतरिक आयाम शामिल है, जहां
ईश्वरीय शक्ति प्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है।
चीज़ों के भौतिक पहलू में, ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं कि
गरिमा के साथ असंगत प्रतीत होते हैं और
अनन्त-प्रार्थना-की-सभी-की-सिद्धि
शक्ति। इस चेहरे में, दिव्य शक्ति अपने कार्यों को कारण और प्रभाव के पीछे छिपाती है ताकि वे स्थितियाँ
कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। लेकिन वास्तविकता में और
चीज़ों के आंतरिक आयाम के संबंध में, हर चीज़ सुंदर और पारदर्शी है। यह उचित है कि
शक्ति को उस आयाम से जोड़ा जाना चाहिए
चीजों की गरिमा के साथ असंगत नहीं है। इस प्रकार कारणों का कार्य पूरी तरह से स्पष्ट है,
क्योंकि इस आयाम के संबंध में उनका कोई प्रभाव नहीं है।

स्पष्ट कारणों का एक और कारण यह है कि लोग सतही तौर पर निर्णय लेते हैं। वे अन्यायपूर्ण मुद्दे उठाते हैं
चीज़ों के बारे में शिकायतें और निराधार आपत्तियाँ
या ऐसी घटनाएँ जो उन्हें अप्रिय लगती हैं। सर्वशक्तिमान
ईश्वर, जो पूर्णतया न्यायकारी है, ने अस्तित्व के इस भौतिक आयाम में ऐसे कारणों को एक परदे के रूप में रखा है जो कि

चीजों या घटनाओं और खुद को ताकि ऐसी
टिप्पणियाँ उस पर लक्षित नहीं होनी चाहिए।

और जो गलतियां चीजों और घटनाओं को अप्रिय बना देती हैं, वे मूलतः लोगों में ही उत्पन्न होती हैं।

इस सूक्ष्म बिन्दु का एक अर्थपूर्ण उदाहरण इस प्रकार है: मृत्यु के दूत, अज़राइल से एक बार कहा गया था
सर्वशक्तिमान ईश्वर: "आपके सेवक शिकायत करेंगे
और मुझसे नाराज हैं, क्योंकि मैं उनकी आत्माएँ ले लेता हूँ।" सर्वशक्तिमान ईश्वर
उससे कहा: "मैं तेरे और मेरे सेवकों के बीच विपत्तियों और बीमारियों का पर्दा डाल दूँगा ताकि वे
उनसे शिकायत करेंगे और आपसे नाराज नहीं होंगे।" इस प्रकार
बीमारी एक पर्दा है जिसके आधार पर लोग यह कह सकते हैं कि
जो मृत्यु के बारे में अप्रिय है। हालाँकि दिखने में अप्रिय है, लेकिन वास्तव में मृत्यु अच्छी है
और सुंदर, और उसमें निहित आवश्यक सौंदर्य
इज़्राईल के कर्तव्य के कारण है। लेकिन इज़्राईल भी
एक पर्यवेक्षक, दैवीय शक्ति का पर्दा, ताकि लोग मृत्यु के उन पहलुओं को उसके लिए जिम्मेदार ठहराएं
कि उनके सतही तर्क सामंजस्य नहीं कर सकते
ईश्वरीय दया की पूर्णता के साथ। ईश्वरीय गरिमा और
भव्यता की आवश्यकता है कि घूंघट दिव्य शक्ति का कारण बनता है
हाथ, जबकि दिव्य एकता और महिमा की मांग है कि
कारण वास्तविक प्रभाव से अपने हाथ पीछे खींच लेते हैं।

दूसरी झलक: ब्रह्मांड के इस बगीचे को देखो, धरती के इस बगीचे को देखो। स्वर्ग पर ध्यान दो।

सुंदर चेहरा, सितारों से सजा हुआ। उनमें बिखरे और फैले हुए प्रत्येक प्राणी पर निर्माता, सभी चीजों के निर्माता के लिए एक अनूठी मुहर है। प्रत्येक प्रजाति शानदार और अद्वितीय मुहरें धारण करती है, जो सभी सर्व-महान निर्माता, सर्व-सुंदर निर्माता की हैं, जो रात और दिन, वसंत और गर्मियों के पन्नों पर "लिखी" हैं, और दिव्य शक्ति की कलम द्वारा प्रकाशित की गई हैं। मैं केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख उदाहरण के तौर पर करूंगा।

जीवन पर उनके द्वारा लगाई गई मुहर पर विचार करें: वे एक चीज़ से सब कुछ बनाते हैं और कई चीज़ों से एक चीज़ बनाते हैं। वे एक जानवर के शरीर के असंख्य अंगों और प्रणालियों को निषेचित शुक्राणु-असर द्रव से और साधारण पीने के पानी से भी बनाते हैं। एक चीज़ से सब कुछ बनाना निश्चित रूप से एक सर्वशक्तिमान का काम है। साथ ही, जो असंख्य प्रकार के वनस्पति या पशु भोजन में निहित सभी पदार्थों को पूर्ण क्रम से विशिष्ट शरीर में बदल देता है, उनसे प्रत्येक और विभिन्न शारीरिक अंगों के लिए एक अनूठी त्वचा बुनता है, वह निश्चित रूप से एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।35

35 अनगिनत प्राणी एक ही प्रकार का भोजन खाते हैं और एक ही तत्वों से बने होते हैं, फिर भी हर एक का चेहरा, उंगलियों के निशान, चरित्र, महत्वाकांक्षाएं, भावनाएं आदि अद्वितीय होती हैं।

जीवन और मृत्यु का निर्माता अपनी बुद्धि के अनुसार दुनिया की इस कार्यशाला में जीवन का संचालन करता है। वह अपने रचनात्मक आदेशों के क्षेत्र (क्षेत्र) से निकलने वाले ऐसे चमत्कारी कानून का उपयोग करता है, जिसे निष्पादित करना और लागू करना उसके लिए एक अनूठा कार्य है, जो ब्रह्मांड को अपनी प्रशासनिक शक्ति और बिल्कुल बिना शर्त अधिकार की मुट्ठी में रखता है। इस प्रकार, यदि आप तर्क कर सकते हैं और आपके पास ऐसा दिल है जो "देखता है", तो आप समझेंगे कि एक चीज से हर चीज को पूरी सहजता और क्रम से बनाना, और कुशलता से कई चीजों को पूर्ण सामंजस्य और व्यवस्थितता के साथ एक चीज में बदलना, निर्माता, हर चीज के निर्माता के लिए एक अनूठी मुहर है।

यदि तुम देखो कि एक चमत्कारी व्यक्ति एक ड्राम कपास से 100 रोल कपड़ा तथा रेशम और लिनन जैसी अन्य सामग्री बुनने के साथ-साथ उससे हेल्वा और पेस्ट्री जैसी अनेक खाद्य वस्तुएं भी बनाता है; और यदि तुम देखो कि वह अपने हाथ में रखे लोहे और पत्थर, शहद और मक्खन, जल और मिट्टी से भी कुशलता से सोना बनाता है, तो तुम समझोगे कि वह एक चमत्कारी व्यक्ति एक ड्राम कपास से 100 रोल कपड़ा तथा रेशम और लिनन जैसी अन्य सामग्री बुनता है, और यदि तुम देखो कि वह अपने हाथ में रखे लोहे और पत्थर, शहद और मक्खन, जल और मिट्टी से भी कुशलता से सोना बनाता है, तो तुम समझोगे कि वह एक चमत्कारी व्यक्ति है जो ... चमत्कारी व्यक्ति है जो एक चमत्कारी व्यक्ति है जो एक चमत्कारी व्यक्ति है जो एक चमत्कारी व्यक्ति है जो एक चमत्कारी

यह एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता का अकाट्य प्रमाण है, जिसकी पूर्ण इच्छा है और वह जो चाहे, जिस तरह चाहे कर सकता है। (ट्र.)

यह मान लें कि उसके पास एक विशेष कला, एक विशेष तरीका है काम करने की शक्ति, तथा सभी सांसारिक तत्व और पदार्थ उसके आदेश और अधिकार के अधीन हैं। वास्तव में, दिव्य शक्ति का प्रकटीकरण

और जीवित रूपों में ज्ञान इस उदाहरण से कहीं अधिक अद्भुत और आश्चर्यजनक है। यह केवल
जीवित रूपों पर कई टिकटों में से एक।

तीसरी झलक: इस निरंतर गतिशील ब्रह्मांड में, इन घूमते हुए पिंडों में गतिशील जीवों को देखो। सदा जीवित और आत्मनिर्भर

उनमें से प्रत्येक पर कई मुहरें लगाई गई हैं।
उनका कहना यह है: व्यक्ति ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप है,
सृष्टि के वृक्ष का एक फल, और इसका एक बीज
दुनिया में, प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे अधिक नमूने शामिल हैं
प्राणियों की प्रजातियाँ। ऐसा लगता है मानो प्रत्येक जीवित प्राणी
ब्रह्मांड से निकली एक बूंद थी
सबसे सूक्ष्म और संवेदनशील संतुलन। इसे बनाने के लिए

एक जीवित प्राणी का स्वामी होने के लिए यह आवश्यक है कि सृष्टिकर्ता का ब्रह्मांड पर पूर्ण नियंत्रण हो।

क्या आप यह नहीं समझ सकते कि होन-ईबी (शक्ति का एक शब्द) बनाना एक प्रकार का छोटा सूचकांक है
सबसे ज़्यादा चीज़ें, मानवता पर "लिखना" (एक पेज) सबसे ज़्यादा
ब्रह्माण्ड की विशेषताओं को एक छोटे से चित्र में समाहित करने के लिए
एक पूरे अंजीर के पेड़ के कार्यक्रम को बीज (एक बिंदु) दें, ताकि हमारे दिल में सभी दिव्य कार्यों को प्रदर्शित किया जा सके

पूरे ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए नाम,
मानव स्मृति में रिकॉर्ड, जो स्थित है
दाल के दाने के बराबर जगह, एक पुस्तकालय भरने लायक पर्याप्त “लेखन”,
और इसमें सभी घटनाओं की विस्तृत सूची शामिल करना

ब्रह्मांड में, निश्चित रूप से एक अद्वितीय टिकट है
सभी चीज़ों का निर्माता और सर्व-महान भगवान
ब्रह्माण्ड का?

इस प्रकार यदि जीवित प्राणियों पर प्रभुत्व की एक मुहर अपना प्रकाश दिखाता है और अपनी निशानियों को इस प्रकार पढ़ता है एक फैशन, उन सभी मुहरों पर एक साथ विचार करें। कैसे क्या आप यह घोषणा नहीं कर सकते: “उसकी महिमा हो जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता से छिपा हुआ है।”

चौथी झलक: विभिन्न चीजों को ध्यान से देखिए
आकाश में तैरते बहुरंगी प्राणी'
“महासागर” और पृथ्वी के चेहरे पर बिखरे हुए। प्रत्येक

अनन्त सूर्य के अद्वितीय हस्ताक्षरों को धारण करता है।
क्योंकि जीवन और जीवित प्राणियों पर उसकी मुहरें स्पष्ट हैं,
वैसे ही जीवन देने के उनके कार्य पर उनके हस्ताक्षर भी हैं।
तुलना से गहरे अर्थ आसानी से समझ में आते हैं
समझ में आया, मैं एक उपयुक्त तुलना प्रस्तुत करता हूँ। विचार करें सूर्य: ग्रहों से लेकर पानी की बूंदों तक, कांच के टुकड़ों और चमकते बर्फ के टुकड़ों तक, सूर्य की छवि और प्रतिबिंब से एक हस्ताक्षर, सूर्य के लिए एक उज्ज्वल काम (प्रभाव) विशेष रूप से स्पष्ट है।

यदि आप इनमें दिखाई देने वाले छोटे सूर्यों को स्वीकार नहीं करते हैं

सूर्य की असंख्य वस्तुएं इसकी अभिव्यक्ति हैं
प्रतिबिंब, आपको बेतुका बयान स्वीकार करना होगा
प्रत्येक वस्तु में एक वास्तविक सूर्य मौजूद है।

ठीक उसी तरह, और सम्मान के साथ
अनन्त सूर्य के अवतारों में से जीवन देकर, उसने प्रत्येक पर ऐसा हस्ताक्षर किया है
जीवित प्राणी। भले ही सभी कारण एक साथ आ गए हों और
उनमें से प्रत्येक एक स्वतंत्र एजेंट था जो कुछ भी करने में सक्षम था
वसीयत में, वे उस हस्ताक्षर की नकल नहीं कर सकते थे।
प्राणी (दिव्य शक्ति के चमत्कार) प्रत्येक एक केन्द्र बिन्दु हैं
दिव्य नामों के प्रकटीकरण का बिंदु, जो
अनन्त सूर्य की किरणों के समान हैं। इसलिए, यदि वह
कला का वह अद्भुत अंकन, ज्ञान की वह विचित्र रचना, जीवित प्राणियों द्वारा
प्रदर्शित एकत्व के रहस्य की वह अभिव्यक्ति अद्वितीय है।

एकल और शाश्वत रूप से प्रार्थित को जिम्मेदार ठहराया गया
एक, इसका अर्थ है पूर्णतः गुमराह हो जाना और
अंधविश्वास.

उदाहरण के लिए, इसका अर्थ होगा प्रत्येक जीवित प्राणी को एक निश्चित राशि देना।
प्राणी में एक अनंत सृजनात्मक शक्ति, एक सर्वव्यापी ज्ञान और एक परम इच्छाशक्ति होती है जिसके द्वारा वह
ब्रह्मांड पर शासन करें। संक्षेप में, प्रत्येक व्यक्ति को
सभी शाश्वत विशेषताएँ जो अनिवार्य रूप से अद्वितीय हैं
विद्यमान एक। इस प्रकार, उस वस्तु का प्रत्येक परमाणु
प्रत्येक परमाणु के लिए, विशेष रूप से दिव्य होना होगा-

बीज को ऐसा चरित्र या गुण दिया जाता है
कि वे सटीक अनुरूप स्थिति ग्रहण करें।
ऐसा लगता है जैसे वे सीधे समग्रता से जुड़े हुए हैं
वह प्रजाति जिससे जीवित प्राणी विकसित होता है
यह संबंधित है, क्योंकि एक बीज इस तरह से कार्य करता है
इसे ठीक उसी स्थान पर लगाया जाए जो इसके लिए उपयुक्त हो
इसकी प्रजाति को जारी रखने और पौधे लगाने के लिए
प्रजाति का झंडा.

हम यह भी कह सकते हैं कि बीज एक स्थिति ग्रहण करता है ताकि जीव अन्य सभी प्राणियों के साथ अपने लेन-देन और संबंध जारी रख सके।

जिसके साथ वह अपनी आवश्यक पोषण प्राप्त करने के लिए जुड़ा हुआ है। यदि, तब, वह

बीज या परमाणु
यदि कोई परम शक्तिशाली के आदेश के अधीन कार्य न करे तो उसका उससे
सम्बन्ध टूट जायेगा।
एक आँख होनी चाहिए जिससे सब कुछ देखा जा सके
सभी चीजों को एक साथ लाने वाली चेतना और सभी चीजों को एक साथ लाने वाली चेतना।

संक्षेप में, यदि सूर्य की छवियाँ या प्रतिबिंब
पानी की बूंदें, कांच के टुकड़े और बहुरंगी
फूलों का श्रेय सूर्य को नहीं दिया जाता, हमें स्वीकार करना चाहिए
असंख्य सूर्यों का अस्तित्व। यह एक अकल्पनीय अंधविश्वास है। उसी तरह, यदि अस्तित्व

में मौजूद हर चीज़ को परम सत्ता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है

सर्वशक्तिमान ईश्वर, हमें उसके अस्तित्व को स्वीकार करना होगा।

ब्रह्मांड में जितने कण हैं, उतने ही देवता हैं।
यह विचार स्पष्ट रूप से अस्वीकार्य है।

संक्षेप में, प्रत्येक परमाणु में तीन खिड़कियाँ होती हैं
अनन्त सूर्य की एकता और प्रकाश की ओर खुलना
आवश्यक अस्तित्व.

पहली खिड़की: एक सैनिक के सभी लोगों से संबंध होते हैं
सेना के विभिन्न स्तर, उनके अनुसार कर्तव्य
संबंध और उनके अनुसार कार्य
कर्तव्यों और सेना के नियमों के साथ भी ऐसा ही है
आपके शरीर में प्रत्येक परमाणु। उदाहरण के लिए, एक परमाणु
आपकी आँख की पुतली के भी ऐसे ही सम्बन्ध और कर्तव्य हैं
अपनी आँखों से, सिर से, प्रजनन शक्तियों से,
आकर्षण और प्रतिकर्षण; आपकी नसों और धमनियों, मोटर और संवेदी
तंत्रिकाओं के साथ जो आपके रक्त परिसंचरण में मदद करते हैं
रक्त और अपने शरीर के बाकी हिस्सों के साथ काम करते हैं;
आपका शरीर। इससे पता चलता है कि प्रत्येक शारीरिक परमाणु एक है
वह एक शाश्वत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कार्य है और उसकी आज्ञा के अधीन कार्य करता है।

दूसरी खिड़की: एक वायु अणु आ सकता है,
किसी भी फूल या फल के भीतर प्रवेश करें और कार्य करें।
किसी के अधीन नहीं होना और उसके अधीन काम करना पूर्णतः
सर्वशक्तिमान ईश्वर की आज्ञा का पालन करना होगा,
सभी फूलों की सभी प्रणालियों और संरचनाओं को जानना और
फल और वे कैसे बनते हैं, उनके बारे में
परिधीय रेखाएँ। ताकि अणु किरणों को दिखाए

दिव्य एकता के प्रकाश की तरह एक सूरज। वही
प्रकाश, मिट्टी और पानी के लिए भी यही सच है। विज्ञान कहता है
कि चीजों का मूल स्रोत हाइड्रोजन है,
ऑक्सीजन, कार्बन और नाइट्रोजन। ये सभी हैं
मिट्टी, हवा, पानी और प्रकाश के घटक।

तीसरी खिड़की: सभी फूलों और पौधों के बीज
फल देने वाले पौधे कार्बन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बने होते हैं। एकमात्र अंतर यह है कि
उनके पूर्वज का कार्यक्रम जमा है
उन्हें ईश्वरीय भाग्य द्वारा। यदि हम विभिन्न प्रकार के
मिट्टी से भरे एक बर्तन में बीज, जो कि
विशेष या निश्चित तत्वों के कारण, प्रत्येक पौधे में
अपने अद्भुत रूप, आकार और विस्मयकारी अंगों में प्रकट होते हैं। यदि वे कण
उस एक के अधीन और उसके आदेश के अधीन न होते जो

प्रत्येक चीज़ को उसकी विशेषताओं, संरचनाओं के साथ जानता है,
जीवन चक्र, और उसके जीवन की स्थितियाँ; एक जो
हर चीज़ को उपयुक्त प्राणी से संपन्न कर सकते हैं और
जिसकी जरूरत है; और जिसकी शक्ति से सब कुछ
यदि इस पर किसी भी प्रकार का प्रतिरोध न किया जाए, तो निम्नलिखित
निष्कर्ष से बचा नहीं जा सकता:

> प्रत्येक मिट्टी के परमाणु में निम्नलिखित शामिल होना चाहिए
> "अभौतिक कारखाने" जो सभी को निर्धारित करते हैं
> पौधों के भविष्य के जीवन के साथ-साथ कई
> सभी फूलों और फलों के बराबर कार्यशालाएँ-

पौधे उगाना, ताकि प्रत्येक पौधे इन विभिन्न प्राणियों का मूल हो सके। मत भूलिए
प्रत्येक पौधा रूप, स्वाद, रंग आदि में भिन्न होता है,
और सदस्य.

प्रत्येक पौधे को सर्वव्यापी ज्ञान होना चाहिए तथा स्वयं को बनाने में सक्षम होना चाहिए।
दूसरे शब्दों में, यदि किसी प्राणी का संबंध
सर्वशक्तिमान ईश्वर अलग हो गया है, तुम्हें स्वीकार करना होगा
देवताओं की संख्या, देवताओं की संख्या के बराबर है
मिट्टी के कण। यह असहनीय है।

हालाँकि, जब आप स्वीकार करते हैं कि कण हैं
एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर के अधीन काम करना
एक आदेश, सब कुछ बहुत आसान हो जाता है।
एक साधारण सैनिक, एक शक्तिशाली राजा के नाम पर
और उसकी शक्ति पर भरोसा और निर्भर करके,
पूरे लोगों को पलायन करने पर मजबूर कर सकता है, दो समुद्रों को जोड़ सकता है [नहर बनवाकर], या किसी दूसरे राजा को पकड़वाकर। उसी तरह, शाश्वत राजा की आज्ञा और अनुमति से, एक मक्खी एक तानाशाह को मार सकती है,
चींटी दूसरे तानाशाह के महल को नष्ट कर सकती है, और अंजीर
बीज अंजीर के पेड़ का भार उठा सकता है।36

---

[36] एक मक्खी निम्रोद की नाक में घुसकर उसके मस्तिष्क तक पहुंच गई, जिससे उसे मरना पड़ा, और चींटियों ने फिरौन के महल को नष्ट कर दिया।

प्रत्येक परमाणु में निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता के दो और सच्चे साक्ष्य निहित हैं।

अपनी पूर्ण शक्तिहीनता के बावजूद, प्रत्येक परमाणु
अनेक महत्वपूर्ण कार्य करता है; अपनी निर्जीवता के बावजूद, प्रत्येक परमाणु सार्वभौमिक चेतना को प्रदर्शित करता है, क्योंकि वह सार्वभौमिक नियम के अनुरूप कार्य करता है।
इस प्रकार प्रत्येक परमाणु अपनी नपुंसकता के माध्यम से, परम सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और उसके एकत्व को कार्य करके प्रमाणित करता है।
ब्रह्माण्ड के क्रम के अनुरूप.

प्रत्येक जीव में दो लक्षण भी होते हैं
वह एक है और सभी के लिए सदा से प्रार्थना योग्य है।
प्रत्येक ईश्वरीय एकता की मुहर और उसकी छाप है
सभी के लिए सदा-प्रार्थना-योग्य होने के कारण, प्रत्येक के लिए
जीव अपने दर्पण में सभी चीजों को प्रतिबिंबित करता है
ईश्वरीय नाम संसार के अधिकांश भागों में प्रकट होते हैं
ब्रह्मांड। एक केंद्र बिंदु की तरह, यह सदा-जीवित और स्वयं-निर्भर व्यक्ति के दो सबसे महान दिव्य नामों को दर्शाता है। चूँकि

यह ईश्वरीय एकता का प्रदर्शन दर्शाता है
नाम दाता के पर्दे के पीछे का सार

जीवन में ईश्वरीय एकता की छाप है।

पुनः, चूँकि जीवित प्राणी एक लघु रूप है
ब्रह्माण्ड का एक फल और सृष्टि के वृक्ष का एक फल,
इसकी अंतहीन आवश्यकताओं की सहज संतुष्टि दर्शाती है

ईश्वर ही सभी के लिए शाश्वत प्रार्थना है। दूसरे शब्दों में, जीव का एक प्रभु है जो सबकी चिंता करता है।
इसके साथ और हमेशा इसकी परवाह करता है। ऐसी चिंता और देखभाल हर चीज से कहीं अधिक मूल्यवान है
जगत।

[ईश्वर की देखभाल] हर चीज़ के खिलाफ़ काफी है,
जबकि सभी चीजें [भले ही एक साथ बंधी हों] नहीं हो सकतीं
उसके खिलाफ़ एक भी बात काफ़ी नहीं है। इससे पता चलता है
समस्त प्राणियों के स्वामी को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, उनकी
आवश्यकताओं की पूर्ति से उनकी सम्पत्ति में कमी नहीं आती,
और उसकी शक्ति के लिए कुछ भी कठिन नहीं है।
यह एक तरह से इस बात की मुहर है कि वह हमेशा से ही सबके लिए प्रार्थना करने वाला है। जीवन की भाषा के माध्यम से, हर जीवित प्राणी
कह दो : “वह एकमात्र ईश्वर है। वह सदा सर्वप्रथम चाहने वाला ईश्वर है” (112: 1-2)।

अन्य महत्वपूर्ण खिड़कियाँ या उद्घाटन हैं। मैं उन पर संक्षेप में चर्चा करूँगा। यह देखते हुए कि प्रत्येक
परमाणु तीन खिड़कियाँ और दो द्वार खोलता है
अनिवार्यतः विद्यमान एकता पर और उस पर
जीवन दो दरवाजे खोलता है, समझें कैसे स्तर
सभी प्राणियों में जानने के लिए प्रकाश फैलता है
सर्वशक्तिमान। इससे तुम समझ सकते हो
परमेश्वर के ज्ञान में प्रगति की डिग्री
और इसके माध्यम से प्राप्त शांति की डिग्री।

पाँचवी झलक: एक कलम लिखने के लिए काफी है

पुस्तक को हाथ से छापा गया। हालाँकि, इसे छापने के लिए सैकड़ों लोगों ने हाथ से लिखा। प्रत्येक पृष्ठ के लिए धातु के “पेन” की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा, यदि पुस्तक का अधिकांश भाग अंकित किया जाना है कुछ अक्षरों में अत्यंत सुन्दर लिपि, जैसे सूरा या सीन को लिखा जा सकता है (और लिखा गया है) या और सिन के शुरुआती दो अक्षर , छोटे "पेन" ज़रूरी हैं। उसी तरह, अगर आप स्वीकार करते हैं कि यह ब्रह्माण्ड की पुस्तक उसी की है जो ने अपनी शक्ति की कलम से इसे लिखा है, आप इसका अनुसरण करें एक ऐसा रास्ता जो इतना आसान है कि आवश्यक और अपरिहार्य है। लेकिन यदि आप इसे कारण या प्रकृति से जोड़ते हैं, तो आप किसी ऐसे मार्ग पर चलना जो असंभव हो, और इसलिए यह अंधविश्वास इतना अधिक व्याप्त है कि एक अत्यंत कल्पनाशील मन भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता।

यह दावा करना कि प्रकृति स्वयं निर्मित है, इसका अर्थ है कि प्रत्येक मिट्टी का परमाणु, पानी की बूंद, और हवा का अणु इसमें लाखों प्रिंटिंग मशीनें और असंख्य "अभौतिक कारखाने" शामिल हैं [

सभी चीज़ों के जीवन का निर्धारण करने में भाग्य प्रकृति], ताकि प्रकृति सभी फूल और फल देने वाले पौधों की उत्पत्ति कर सके [और उनका शासन कर सके जीवन]। या फिर एक सर्वव्यापी ज्ञान और सब कुछ करने में सक्षम शक्ति होनी चाहिए

प्रत्येक वायु, जल और मिट्टी के अणु में, ताकि प्रकृति वास्तव में स्वयं का निर्माण कर सके।

अधिकांश पौधे किसी भी मिट्टी में उग सकते हैं यदि उसमें नमी हो। पर्याप्त पानी और हवा है। लेकिन उनका निर्माण और संरचना इतनी व्यवस्थित, संतुलित और सुव्यवस्थित है,
और उनके रूप इतने अनोखे हैं, कि उन्हें बनाने के लिए एक विशिष्ट कारखाना या "प्रिंटिंग मशीन" की आवश्यकता होगी
प्रत्येक व्यक्ति। इसलिए, स्वयं को बनाने के लिए, प्रकृति को
प्रत्येक आइटम बनाने के लिए एक विशिष्ट “मशीन” की आवश्यकता होती है।
ऐसे लोगों को ढूंढना बहुत मुश्किल है जो इस तरह के अंधविश्वास को मानते हों।

संक्षेप में, एक किताब का हर अक्षर खुद की ओर इशारा करता है
केवल एक पत्र होने की सीमा तक और केवल एक तक
इसके अस्तित्व और अर्थ का पहलू। हालाँकि, यह
अपने लेखक का वर्णन करता है और उसे कई तरीकों से दिखाता है -
उदाहरण के लिए: “जिसने मुझे लिखा है, वह ठीक है
कलमकारी। उसकी कलम लाल है।" उसी तरह, प्रत्येक
ब्रह्माण्ड की इस विशाल पुस्तक का अक्षर इंगित करता है
अपने आकार और रूप की सीमा तक ही सीमित है, लेकिन इसका वर्णन
शाश्वत डिजाइनर के नाम उतने ही विस्तृत रूप से
एक स्तुति, उसकी गवाही देता है, और उसके नामों की ओर इशारा करता है
अपनी "तर्जनी उंगलियों" (अपने गुणों) के साथ। इस प्रकार कोई भी,
यहां तक कि मूर्ख सोफिस्ट भी नहीं जो स्वयं को नकारते हैं और
ब्रह्माण्ड, सर्वशक्तिमान निर्माता को नकार सकता है।

छठी झलक: सर्व-महान सृष्टिकर्ता के समान
अपने प्राणियों के माथे पर अपनी एकता की मुहर लगा दी है, उन्होंने
सबसे अधिक दृश्यमान स्थान पर रखा है
सभी प्रजातियों पर अपनी एकता के कई टिकटें बनाओ,
सभी राज्यों पर उनकी एकता की असंख्य मुहरें
प्राणियों, और उनकी एकता के विभिन्न हस्ताक्षर
पूरी दुनिया। इनमें से आइए एक पर नज़र डालें
वसंत ऋतु में पृथ्वी के चेहरे पर रखा गया यह डाक टिकट
ईश्वरीय एकता वसंत की तरह स्पष्ट और उज्ज्वल है,
जिसके दौरान शाश्वत डिजाइनर अनगिनत पौधों और जानवरों की
प्रजातियों को पूर्ण भेदभाव और विशिष्टता के साथ पुनर्जीवित करता
है, और अनंत अंतर्संबंध के बीच सही क्रम और पृथक्करण करता है

और भ्रम.

क्या यह समझना इतना कठिन है कि मृत मिट्टी को ऊपर उठाना
वसंत में जीवन, पुनरुत्थान के अनगिनत नमूने एकदम सही क्रम में
दिखाना, और पृथ्वी के बारे में लिखना
अनगिनत प्रजातियों के अलग-अलग सदस्यों का पृष्ठ
बिना किसी दोष या भूल, गलती या कमी के,
और सबसे अच्छी तरह से संतुलित और अच्छी तरह से आनुपातिक,
सुव्यवस्थित और उत्तम फैशन, एक अद्वितीय मुहर है
महामहिम में से एक, एक सर्वशक्तिमान
पूर्णता, अनुग्रह और सौंदर्य से परिपूर्ण एक सर्वज्ञ,
वह जो अनंत शक्ति वाला, सर्वव्यापी है
क्या ज्ञान और इच्छाशक्ति ब्रह्माण्ड पर शासन करने में सक्षम है?

अल्लाह की दयालुता की निशानियों और छापों को देखो, कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के बाद जीवित करता है। वह मुर्दों को भी जीवित करेगा। वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। (30:50)

मृतकों को पुनर्जीवित करना सृजनात्मक शक्ति के लिए इतना सरल मामला है कि कुछ ही दिनों में, पृथ्वी को पुनर्जीवित करके इसके अनगिनत उदाहरण देता है। उदाहरण के लिए, क्या चमत्कार करने वाले व्यक्ति से यह पूछना उचित है कि क्या वह आपके रास्ते में आने वाली एक बड़ी चट्टान को हटा सकता है?

उसी तरह, क्या यह उचित है कि (संदेह व्यक्त करते हुए) उस सर्वज्ञ और शक्तिशाली, सर्व-दयालु और दयालु से कहा जाए, जिसने आकाश, पृथ्वी और पर्वतों को “छह दिनों” में बनाया और उन्हें लगातार भरता और खाली करता है: “क्या आप हमारे ऊपर की मिट्टी की इस परत को हटा सकते हैं जो अनंत काल में तैयार और रखी गई आपकी दावत तक हमारा रास्ता रोक रही है? क्या आप इसे समतल कर सकते हैं और हमें इसे पार करने दे सकते हैं?”

निश्चित रूप से आपने गर्मियों के दौरान पृथ्वी के चेहरे पर दिव्य एकता की छाप देखी होगी। वसंत के दौरान पृथ्वी के चेहरे पर सबसे बुद्धिमान, अंतर्दृष्टिपूर्ण और शक्तिशाली दिव्य संचालन में दिव्य एकता की मुहर स्पष्ट रूप से देखी जाती है। यह गतिविधि पूरी तरह से व्यापक, त्वरित, उदार या उदार है, और इसमें किया जाता है

पूर्ण सुव्यवस्था। कला की सबसे उत्तम सुन्दरता,
यह सृजन के सबसे उत्तम रूप में किया जाता है। इस प्रकार
केवल एक ही अनंत ज्ञान और असीम है
सत्ता ऐसी मुहर का मालिक हो सकती है। वह मुहर
वह जो यद्यपि कहीं भी नहीं है, फिर भी सर्वव्यापी है और
सब कुछ देखने वाला। उसके लिए कुछ भी छिपा या कठिन नहीं है
उसकी शक्ति के संबंध में, कण और तारे
बराबर हैं.

एक बार परम दयालु के बगीचे में
अनुग्रह की उदारता के, मैंने गुच्छों की गिनती की (
अंगूर) एक अंगूर की बेल से लटके हुए थे जो दो अंगुल मोटी थी। मैंने देखा कि
यह एक छोटी सी बीज की तरह था
उनके चमत्कारों के “गुच्छे”। कुल 155 थे
गुच्छे, और एक गुच्छे में लगभग 120 थे
अंगूर। मैंने सोचा: अगर यह अंगूर की बेल एक नल होती
जिसमें मधुमय जल निरंतर बहता रहता था, केवल
तो क्या इस गर्मी में पानी पर्याप्त होगा
वे गुच्छे जिन पर दया के शरबत के सैकड़ों छोटे-छोटे "पंप" लटके रहते हैं।
लेकिन यह अंगूर की बेल
थोड़ी सी नमी से ही काम चला लेता है, जो उसे कभी-कभार मिल जाती है।
इसलिए जो ऐसा करता है
सभी चीज़ों पर शक्तिशाली होना चाहिए। उसकी जय हो
जिनके काम से मन भ्रमित हो जाता है।

सातवीं चमक: थोड़ी सी सावधानी और प्रयास से,
आप देख सकते हैं अनन्त-प्रार्थना-की-सभी की मुहरें

पृथ्वी के "पृष्ठ" पर। जब आप अपना सिर उठाते हैं
ब्रह्माण्ड की महान पुस्तक को देखो, तुम
इस पर दिव्य एकता की एक बड़ी और स्पष्ट मुहर देखें
अपने आप में। किसी फैक्ट्री के पुर्जों या महल के पुर्जों की तरह
निर्माण खंड, सभी प्राणी समर्थन, सहायता और कार्य करते हैं
एक साथ मिलकर - पूर्ण सुव्यवस्था में - एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए।
प्रयासों में शामिल होकर, वे जीवित प्राणियों की सेवा करते हैं।
सहयोग करते हुए, वे एक सर्व-बुद्धिमान प्रशासक की आज्ञा का पालन करते हैं
एक लक्ष्य की ओर। पारस्परिक सहायता के नियम का पालन करना, जो पूरे ब्रह्मांड में लागू है,
वे विचारशील लोगों को दिखाते हैं कि वे
एक अकेले, सबसे उदार व्यक्ति की शक्ति के माध्यम से कार्य करें
परवरिश करने वाले और एक ही के आदेश पर, सबसे
बुद्धिमान प्रशासक.

इस तरह का पारस्परिक समर्थन और सहायता, उत्तर
एक दूसरे की ज़रूरतों का ध्यान रखना, निकट सहयोग, आज्ञाकारिता,
समर्पण और व्यवस्था इस बात की गवाही देते हैं कि सभी प्राणी हैं
एक ही प्रशासक के माध्यम से प्रशासित
संगठन द्वारा संचालित और एक ही पालनकर्ता द्वारा निर्देशित।
इसके अलावा, सार्वभौमिक विवेक में सार्वभौमिक प्रावधान और अनुग्रह भी शामिल है, जो कि चीजों के उद्देश्यपूर्ण निर्माण में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
जैसा कि ईश्वर की कृपा से स्पष्ट व्यापक दया और ईश्वर द्वारा अपेक्षित सार्वभौमिक पोषण है
वह दया सभी जीवित प्राणियों को खिलाने के लिए, एक मुहर बनाते हैं

ईश्वरीय एकता इतनी शानदार है कि कोई भी दृष्टि वाला व्यक्ति
और विचार उसे देखेंगे और समझेंगे।

इरादे, चेतना और इच्छा को दर्शाने वाली बुद्धि का एक कपड़ा ब्रह्मांड
को ढंकता है; एक अच्छा
प्रोविडेंस और एहसान दिखाने का शुद्ध पर्दा
अनुग्रह, अलंकरण, अलंकरण और दयालुता
उसके ऊपर रखा जाता है; उसके ऊपर एक वस्त्र बिछाया जाता है
दया, जो जाने जाने और प्यार किये जाने की इच्छा को विकीर्ण करती है,
इनामों और उपहारों से अनुग्रहित करना
ब्रह्माण्ड; और उसके ऊपर सभी प्राणियों के पालन-पोषण के लिए
प्रावधान की एक तालिका रखी गई है, जो दर्शाती है
आधिपत्य की दया, दान, परोपकार, पूर्ण देखभाल, उचित पोषण, अनुग्रह
और कृपा।
यह सब स्पष्ट रूप से एक दयालु परमेश्वर को दर्शाता है जो
वह अत्यंत बुद्धिमान, अत्यंत उदार, अत्यंत दयालु और
सर्व-प्रावधान.

क्या हर चीज़ को पोषण की ज़रूरत है? हाँ,
वास्तव में। जैसे किसी व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है
जीवित रहें, सभी प्राणी, विशेषकर जीवित प्राणी, चाहे
सार्वभौमिक या विशेष या संपूर्ण या भाग,
अनेक भौतिक और अभौतिक मांगें और आवश्यकताएं
यदि उन्हें जीवित रहना है तो यह शर्त पूरी होनी ही चाहिए।
यद्यपि वे छोटी से छोटी चीज भी प्राप्त नहीं कर सकते
हम देखते हैं कि उनकी सभी जरूरतें पूरी हो रही हैं,
अप्रत्याशित तरीके से और अप्रत्याशित स्रोत से,

पूर्ण क्रम से, उचित समय पर, उपयुक्त ढंग से, तथा पूर्ण बुद्धि के साथ। क्या यह

स्पष्ट रूप से महिमा के एक सर्व-बुद्धिमान पोषणकर्ता को नहीं दिखाया गया है,
एक दयालु और अनुग्रह प्रदान करने वाला?

आठवीं झलक: खेत में बोए गए बीज बताते हैं कि
खेत और बीज उसके मालिक के हैं
दोनों। इसी तरह, जीवन के मूलभूत तत्व (जैसे,
हवा, पानी और मिट्टी) सार्वभौमिक और सर्वव्यापी हैं
अपनी सादगी और एकरूपता के बावजूद पौधे और
जानवर, जो दया के फल हैं, चमत्कार हैं
शक्ति और ज्ञान के शब्द भी जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति अपनी मूलतः
समान प्रकृति के बावजूद हर जगह पाए जाते हैं। इससे पता चलता है कि वे

एक ही चमत्कार दिखाने वाले निर्माता से संबंधित हैं और
कि हर फूल, फल और जानवर एक मोहर है,
उस निर्माता की मुहर और हस्ताक्षर।

स्थान की परवाह किए बिना, हर कोई घोषणा करता है
उसके अस्तित्व की जीभ: "वह जिसकी मुहर
मैंने भी यह स्थान बनाया है।
सील मैं भी एक प्रक्षेपास्त्र के रूप में इस जगह को बनाया है।
वह जिसके हस्ताक्षर का मैं संकेत करता हूँ, उसने भी बुना है
इस भूमि पर केवल वही है जो सभी तत्वों को धारण करता है
उसकी शक्ति की मुट्ठी में कम से कम का स्वामित्व और रखरखाव हो सकता है
जो लोग अंधे नहीं हैं वे देख सकते हैं कि
केवल एक ही है जो सभी पौधों पर प्रभुत्व रखता है

और जानवर उनमें से सबसे सरल प्राणी का स्वामित्व, पालन-पोषण और शासन कर सकते हैं।

अन्य व्यक्तियों से समानता की भाषा में,
प्रत्येक व्यक्ति कहता है: "केवल वही जो
मेरी प्रजाति का मालिक मेरा मालिक हो सकता है।"
अन्य प्रजातियों के साथ पृथ्वी पर फैलते हुए,
प्रत्येक प्रजाति कहती है: "केवल वही जो पृथ्वी का मालिक है
चेहरा हमारा मालिक हो सकता है।'' अस्तित्व की भाषा में
सूर्य से, अन्य ग्रहों से, तथा आकाश के साथ अपने पारस्परिक संबंधों के बारे में, पृथ्वी कहती है: "केवल
जो इन सबका मालिक है, वही मेरा मालिक हो सकता है।"

मान लीजिए सेब सचेत होते और कोई उनमें से एक से कहता:
"तुम मेरी कलाकृति हो।"
सेब चिल्लाता: "चुप हो जाओ! अगर तुम कर सको तो
पृथ्वी पर सभी सेबों पर अधिकार करो; बल्कि, यदि आपके पास पृथ्वी पर सभी फल देने वाले पेड़ों पर अधिकार हो
सर्व दयालु के सभी उपहार आगे बढ़ रहे हैं
दया के खजाने से, तभी आप दावा कर सकते हैं
मुझ पर प्रभुता करो!"

नौवीं झलक: कुछ बातों की ओर इशारा करने के बाद
विवरणों पर मुहरें, स्टाम्प और हस्ताक्षर
भागों, सार्वभौमिकों और संपूर्णों के साथ-साथ
संसार, जीवन, जीवित प्राणी, और जीवन देने पर,
मैं अनगिनत टिकटों में से एक का संकेत दूंगा
प्रजातियाँ।

चूँकि एक पेड़ के अनगिनत फल एक पर निर्भर करते हैं
एक केंद्र से विकास का नियम, वे उतने ही आसान हैं
और एक फल के रूप में उगाना सस्ता है। दूसरे शब्दों में,
एक ही फल के लिए कई केन्द्रों की आवश्यकता होगी
उतनी ही कठिनाई, व्यय और उपकरण
एक पूरे पेड़ के लिए, और एक सैनिक के लिए आवश्यक सैन्य उपकरण
बनाने की आवश्यकता होगी
एक पूरी सेना के लिए सभी कारखाने। पहला मामला बताता है
सभी प्रजातियों को बनाने की असाधारण आसानी
एकता का केन्द्र; दूसरा मामला असंभव और अनगिनत कठिनाइयों को दर्शाता है जो तब उत्पन्न होती हैं जब सृजन कई केन्द्रों पर निर्भर होता है।

संक्षेप में, इसलिए, एक प्रजाति के सदस्यों और एक जीनस के विभाजनों के बीच बुनियादी सदस्यों में पत्राचार और समानता यह साबित करती है कि वे हैं
एक ही निर्माता के कार्य, क्योंकि वे “अंकित” हैं
एक ही कलम और एक ही मुहर के साथ।
उनके निर्माण में पूर्ण सहजता, जो उन्हें बनाती है
आवश्यक और अपरिहार्य, यह आवश्यक है कि वे
एक निर्माता का काम। अन्यथा, आगामी
कठिनाइयाँ उस वंश और उस प्रजाति को नष्ट कर देंगी
अस्तित्वहीनता की ओर।

इसे देखते हुए, सब कुछ सर्वशक्तिमान को श्रेय देना
भगवान सभी चीजों को एक चीज की तरह आसान बना देता है; जब कारणों को जिम्मेदार ठहराया, एक बात असंभव रूप से अलग है

इस प्रकार असाधारण अर्थव्यवस्था और आसानी ब्रह्मांड में दिखाई देने वाली अनंत प्रचुरता और नृत्य, एकता की छाप को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। यदि ये प्रचुर मात्रा में और सस्ते फल उस वर्ग के नहीं थे एकता की बात, हम एक अनार भी नहीं खरीद पाए अगर हम बदले में दुनिया दे दें। हम कैसे कर सकते हैं उद्देश्यपूर्ण और सचेत सहयोग के लिए भुगतान करें विभिन्न सार्वभौमिक तत्वों (जैसे, मिट्टी, हवा, पानी, सूरज की रोशनी, गर्मी) और बीज, ये सभी अचेतन हैं और एक एकल निर्माता का पालन करते हैं, जो क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर है? एक अनार की कीमत या कोई भी अन्य फल संपूर्ण ब्रह्मांड है।

दसवीं झलक: जैसे जीवन, जो प्रकट होता है ईश्वरीय कृपा, ईश्वरीय कृपा के लिए एक तर्क और प्रमाण है एकता, यहाँ तक कि दिव्य एकता की एक प्रकार की अभिव्यक्ति, मृत्यु, जो ईश्वरीय महिमा को प्रकट करती है, ईश्वरीय एकता के लिए एक तर्क और प्रमाण है।37

---

[37] एकता (अहादिया) और एकता (वहीदिया) भिन्न हैं। एकता इसका अर्थ है सभी या अधिकांश की समवर्ती अभिव्यक्तियाँ एक चीज़ पर दिव्य नाम। उदाहरण के लिए, जीवन परिणाम है अनेक नामों की अभिव्यक्तियाँ, जैसे कि सृष्टिकर्ता, निर्माता, अत्यन्त कृपालु, दयावान, तथा सर्वप्रबन्धक। एकता का अर्थ है सभी पर एक दिव्य नाम का प्रकटीकरण क्योंकि मृत्यु सभी जीवित प्राणियों के लिए सामान्य है और इसके परिणामस्वरूप उस दिव्य नाम के प्रकटीकरण से जो मृत्यु का कारण बनता है। (ट्र.)

इस पर विचार करें: एक विशाल नदी पर बुलबुले प्रतिबिंबित करते हैं
सूर्य की छवि और प्रकाश, जैसा कि पारदर्शी वस्तुएं करती हैं
पृथ्वी के चेहरे पर चमकती हुई। दोनों सूर्य की गवाही देते हैं
अस्तित्व। हालाँकि बुलबुले कभी-कभी गायब हो जाते हैं (जैसे कि पुल के नीचे से गुज़रने पर), बुलबुलों की क्रमिक टुकड़ियां अस्तित्व दिखाना जारी रखती हैं
सूर्य का प्रतिबिम्बन और उसका प्रकाश प्रदर्शित करना। इससे यह सिद्ध होता है
सूर्य की छोटी-छोटी छवियां, जो दिखाई देती हैं, गायब हो जाती हैं, और फिर पुनः दिखाई देती हैं, एक स्थायी,
शाश्वत, एकल सूर्य जो स्वयं को प्रकट करता रहता है
ऊपर से। इस प्रकार, वे चमकते बुलबुले सूर्य के अस्तित्व को दर्शाते हैं और उनके गायब होने और चमकने के माध्यम से इसकी निरंतरता और एकता को प्रदर्शित करते हैं।
विलुप्ति.

इसी प्रकार इनका अस्तित्व और जीवन भी
निरंतर परिवर्तनशील प्राणी अनिवार्य रूप से इसकी गवाही देते हैं
विद्यमान सत्ता का आवश्यक अस्तित्व और एकता,
साथ ही उसकी एकता, शाश्वतता और स्थायित्व के लिए भी,
उनके क्षय और मृत्यु के माध्यम से। सुंदर, नाजुक
जीव जो नवीनीकृत और भर्ती किए जाते हैं,
दिन और रात के परिवर्तन के साथ, गर्मी और
सर्दी, और सदियों और युगों का बीतना, दिखाता है
एक ऊंचे, शाश्वत एक का अस्तित्व, एकता और स्थायित्व एक निरंतर प्रदर्शन के साथ
सौंदर्य की।

इसी तरह, उनका क्षय और मृत्यु, उनके जीवन के स्पष्ट कारणों के साथ, दिखाते हैं
कि (भौतिक या प्राकृतिक) कारण केवल आवरण हैं।
यह सिद्ध करता है कि ये कलाएं, शिलालेख और अभिव्यक्तियाँ निरंतर नवीनीकृत कलाएं हैं, बदलती रहती हैं
शिलालेख, और एक सर्व-सुंदर के चलते दर्पण
महामहिमों में से एक, जिनके सभी नाम पवित्र हैं
और सुंदर हैं। इसके अलावा, वे उसके टिकट हैं जो एक के बाद एक आते हैं, और उसकी मुहरें जो
बुद्धि से भरा हुआ।

ब्रह्माण्ड की यह पुस्तक हमें शिक्षा देती है

ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के संकेत देखे गए
ब्रह्माण्ड की रचना और संचालन, तथा सर्वशक्तिमान के सभी गुणों का साक्षी है
पूर्णता, सौंदर्य, अनुग्रह और महिमा। ये संकेत
दिव्य सत्ता की आवश्यक पूर्णता को भी सिद्ध करें,
दोष और त्रुटि रहित, किसी कार्य की पूर्णता के लिए
उस कार्य की पूर्णता की ओर संकेत करता है जो उसमें निहित है
कार्य की उत्पत्ति। कार्य की पूर्णता इंगित करती है
नाम की पूर्णता, जो विशेषता की ओर इशारा करती है
पूर्णता, जो आवश्यक क्षमता की पूर्णता की ओर इशारा करती है, जो अनिवार्य रूप से, सहज रूप से, और
स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति की पूर्णता की ओर इशारा करता है
वह आवश्यक क्षमता.

उदाहरण के लिए, एक उत्तम महल का उत्तम डिज़ाइन और अलंकरण एक मास्टर बिल्डर के कार्यों की पूर्णता को दर्शाते हैं। कार्यों की पूर्णता प्रतिष्ठित बिल्डर की उपाधियों की पूर्णता को दर्शाती है, जो उसके पद को निर्दिष्ट करती है। उपाधियों की पूर्णता बिल्डर की विशेषताओं की पूर्णता को दर्शाती है, जो कि बिल्डर के गुणों की पूर्णता है।
कला की उत्पत्ति। कला और विशेषताओं की पूर्णता गुरु की क्षमताओं की पूर्णता को दर्शाती है
और आवश्यक क्षमता। उन आवश्यक क्षमताओं और क्षमता की पूर्णता पूर्णता को दर्शाती है
गुरु का आवश्यक स्वभाव.

उसी प्रकार, परमेश्वर के वचनों में जो दोषरहित कार्य देखे जाते हैं, वे भी उसी प्रकार हैं।
ब्रह्माण्ड, जिसके बारे में कुरान पूछता है: क्या तुम
कोई दोष देखते हैं? (६७:३), ब्रह्माण्ड के सुव्यवस्थित प्राणियों में कला,
एक प्रभावी, शक्तिशाली की ओर इशारा करती है
एजेंट के बेहतरीन काम। कामों की परफेक्शन इस ओर इशारा करती है
उस राजसी एजेंट के नाम की पूर्णता।
नामों की पूर्णता इस बात की ओर इशारा करती है और इसकी गवाही देती है
राजसी के गुणों की पूर्णता
नामों से जाना जाता है। गुणों की पूर्णता
उन विशेषताओं द्वारा योग्य पूर्ण व्यक्ति की आवश्यक क्षमता और गुणों की पूर्णता को इंगित और प्रमाणित करता है। आवश्यक क्षमता और गुणों की पूर्णता पूर्णता की ओर इशारा करती है

ऐसी क्षमता और गुण रखने वाले की

इस निश्चितता के साथ कि सभी प्रकार की परिपूर्णताएं
पूरे ब्रह्माण्ड में जो देखा गया वह केवल संकेत हैं
उनकी पूर्णता, उनकी महिमा के संकेत, और पीली, कमजोर आकृतियों में
उनकी सुंदरता के संकेत
उसकी पूर्ण वास्तविकता की तुलना में वह छाया मात्र है।

ग्यारहवीं चमक सूर्य की तरह चमकदार :

उन्नीसवें वचन में दिखाया गया, हमारे गुरु
मुहम्मद भरोसेमंद सर्वोच्च “कविता” है
ब्रह्मांड की महान पुस्तक, "महानतम"
उस "कुरान" में प्रकट ईश्वर का "नाम"
ब्रह्मांड, बीज और सबसे शानदार फल
सृष्टि का वृक्ष, विश्व के महल का सूर्य,
इस्लाम की दुनिया का चमकता हुआ पूर्णिमा का चाँद,
और दिव्य प्रभुत्व की संप्रभुता का संदेशवाहक।
वह सृष्टि के रहस्य का बुद्धिमान खोजकर्ता है,
जो सत्य के स्तरों से होकर उड़ता है
संदेशवाहक के पंख, जो सभी पूर्ववर्ती पैगम्बरों को अपने में समाहित करता है, और इस्लाम के पंख, जो सभी पूर्ववर्ती पैगम्बरों को अपने में समाहित करता है
इसकी सुरक्षा इस्लाम की दुनिया के समर्थन के साथ
सभी पैगम्बरों और रसूलों, संतों और सत्यवादी, सत्य की खोज करने वाले विद्वानों और शुद्ध लोगों में से, वह
अपनी पूरी ताकत से ईश्वरीय एकता को प्रमाणित किया और
दिव्य सिंहासन का रास्ता खोल दिया। कौन सी कल्पना या संदेह ईश्वर में विश्वास को विचलित कर सकता है, जिसे उसने

क्या यह ईश्वरीय एकता का मार्ग है, जिसे उन्होंने सिद्ध किया?

चूँकि मैंने कुछ हद तक उन्नीसवें वचन में उनके ज्ञान के जीवन जल की 14 बूंदों के माध्यम से, और उन्नीसवें पत्र में (उनके चमत्कारों पर) 19 संकेतों के माध्यम से उस स्पष्ट प्रमाण और चमत्कार-कार्य का वर्णन किया है, इसलिए मैं उन पर परमेश्वर के आशीर्वाद को उनकी सच्चाई की गवाही के रूप में कहते हुए समाप्त करता हूँ।

हे ईश्वर, उस पर कृपा कर, जो तेरे अस्तित्व और एकता की आवश्यकता की ओर ले जाता है, और तेरी महिमा, कृपा और पूर्णता की गवाही देता है; सच्चा और पुष्ट साक्षी, और सत्यापित, स्पष्ट प्रमाण; पैगम्बरों और रसूलों का स्वामी, उनकी सहमति, पुष्टि और चमत्कारों के अर्थ का वाहक; संतों और फलदायी लोगों का नेता, जो उनकी सहमति, सत्यापन और चमत्कारों का अर्थ रखता है; और जिसके पास स्पष्ट चमत्कार, स्पष्ट आश्चर्य और निर्णायक प्रमाण हैं जो उसकी पुष्टि और पुष्टि करते हैं।

हे ईश्वर, उस पर कृपा कर] जिसके व्यक्तित्व में श्रेष्ठ गुण हों, जिसके कर्तव्य में उच्च नैतिकता हो, और जिसके शरीयत में उच्च गुण हों, जो पूर्ण और सभी विरोधाभासों से मुक्त हो; वह केंद्र जहां ईश्वरीय निवास हो

रहस्योद्घाटन उतरा, जैसा कि एक द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी
जिसने प्रकाशना की, जो प्रकाशना हुई, और जिसने उसे प्रकाशना दी, वह यात्री था।

अदृश्य और आंतरिक दुनिया के माध्यम से
वस्तुओं के आयाम; आत्माओं का पर्यवेक्षक, जो
स्वर्गदूतों के साथ बातचीत की; और सभी का नमूना
सृष्टि में पूर्णता, व्यक्तियों के संबंध में,
प्रजातियाँ, और वंश (सृष्टि के वृक्ष का सबसे बड़ा भाग)
शानदार फल)।

[हे ईश्वर, सत्य के दीपक पर आशीर्वाद प्रदान करें]
वास्तविकता का प्रमाण, दया का अवतार,
प्रेम का आदर्श, सृष्टि के रहस्य का खोजकर्ता, ईश्वरीय संप्रभुता का
संदेशवाहक
आधिपत्य, वह जिसने प्रदर्शित किया
उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व की महानता
दुनिया के लेखक की "आँखों" के सामने
ब्रह्माण्ड की रचना, और वह जो
एक ऐसा शरिया लाया जो अपने सिद्धांतों की व्यापकता और सुदृढ़ता से
दर्शाता है कि यह
यह संसार के रचयिता का आदेश है और
ब्रह्मांड के निर्माता द्वारा स्थापित.

जिसने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है,
पूर्ण व्यवस्था ने इस धर्म [इस्लाम] की रचना की
सबसे बढ़िया और सबसे सुंदर व्यवस्था। वह हमारा स्वामी है,
बच्चों के समुदायों के मास्टर

एडम; विश्वास के लिए हमारे मार्गदर्शक, समुदायों
विश्वासियों, मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला इब्न अब्दुल मुत्तलिब, उन पर सबसे
अच्छा आशीर्वाद और आशीर्वाद हो
जब तक पृथ्वी और
स्वर्ग अस्तित्व में है। अन्य सभी बुद्धि के नेता के रूप में

सभी मानव पीढ़ियों के स्वामी और प्रशिक्षक,
इस सत्यनिष्ठ और पुष्ट साक्षी ने देखा और

अपनी पूरी ताकत, अत्यंत गंभीरता के साथ घोषणा की-

दृढ़ता, पूर्ण दृढ़ता, निश्चितता की शक्ति और विश्वास की पूर्णता: "मैं गवाही देता हूं कि कोई नहीं है

ईश्वर नहीं, बल्कि ईश्वर, एक है। उसका कोई साझी नहीं।"

बारहवीं किरण सूर्य के समान तेजस्वी: यह

बारहवीं किरण सत्यों का ऐसा सागर है कि सभी
22 शब्द इसमें मात्र 22 बूँदें हैं। यह एक ऐसा स्रोत है
प्रकाश की केवल 22 किरणें हैं। प्रत्येक शब्द
छंद के सितारों में से एक से केवल एक किरण है
कुरान के आकाश में चमक रहे हैं। प्रत्येक एक है
उस से बहने वाली कविता की नदी से बूँद
सत्य और सत्य के बीच भेद करने वाला सागर
झूठ, एक-एक छंद से मोती, जिनमें से प्रत्येक
सबसे बड़े खजाने में रत्नों का एक संदूक है:
भगवान की पुस्तक.

परमेश्वर के इस वचन को 14वें अध्याय में थोड़ा-सा परिभाषित किया गया है।

उन्नीसवें शब्द की बूंद। उत्पत्ति
भगवान का सबसे बड़ा नाम, यह से उतरा
सर्वोच्च दिव्य सिंहासन दिव्य प्रभुता का सबसे बड़ा प्रकटीकरण है।
इतना ऊंचा और व्यापक कि वह समय को भी घेर लेता है और फिर उसे
पार कर जाता है और धरती को परम से बांध देता है

दिव्य सिंहासन, यह बार-बार अपनी पूरी ताकत से घोषणा करता है
ताकत और उसके छंदों की पूर्ण निश्चितता: "वहाँ
ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।" ब्रह्मांड को गवाही देते हुए

इस पर, इसकी सारी सामग्री एक स्वर में गाती है: "वहाँ
ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।”

यदि आप कुरान को एक नास्तिक की नजर से देखें तो...
स्वस्थ हृदय के लिए, आप देखेंगे कि इसकी छह भुजाएँ एक समान हैं
शानदार और पारदर्शी कि कोई अंधेरा नहीं और
गुमराह करना, संदेह और आशंका, या धोखा
न ही कोई दरार है जिससे होकर गुजरा जा सके
ऐसी चीजें उसके क्षेत्र में घुसपैठ कर सकती हैं
पवित्रता। इसके ऊपर चमत्कारीपन की मुहर है,
इसके नीचे सबूत और प्रमाण है, इसके पीछे इसकी बात है
समर्थन का स्रोत - शुद्ध ईश्वरीय रहस्योद्घाटन, इसके सामने इस दुनिया और अगले में खुशी, इसके दाईं ओर मानव कारण से इसकी सच्चाई के बारे में सवाल करना और इसकी पुष्टि सुनिश्चित करना, और इसके बाईं ओर ईश्वर को पुकारना।
मानव अंतःकरण को उसकी सच्चाई की गवाही देने तथा उसकी अधीनता को सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित करना। इसके अन्दर दयालु परमेश्वर का शुद्ध मार्गदर्शन है, तथा इसके बाहर
विश्वास का प्रकाश है.

इसका फल, निश्चितता के साथ, निरीक्षण पर निर्भर है, शुद्ध और सत्य-प्रेमी विद्वान हैं
और संत, सभी मानवीय परिपूर्णताओं से सुशोभित
और उपलब्धियां। यदि आप उस जीभ को सुनते हैं
अदृश्य-कुरान-आप इसके माध्यम से सुनेंगे
गहराई से एक सबसे परिचित और ठोस, एक असीम रूप से गंभीर और ऊंचा, स्वर्गीय आवाज सुसज्जित

सबूतों के साथ जो बार-बार घोषणा करता है: "वहाँ है
उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।” यह इस बात को इतनी पूर्णता के साथ कहता है
वास्तविक अनुभव और पूर्ण विश्वास पर आधारित निश्चितता, कि, इसकी
सच्चाई के विषय में, यह देता है
आप ज्ञान की निश्चितता की हद तक
प्रत्यक्ष साक्ष्य और अवलोकन से आने वाली निश्चितता।

संक्षेप में, संदेशवाहक और सबसे दृढ़
सत्य और असत्य के बीच अंतर करने का मानदंड (कुरान) प्रत्येक एक "सूर्य" है।
दृश्यमान, भौतिक दुनिया की भाषा, साथ ही
1,000 चमत्कारों और पुष्टि का समर्थन
सभी पैगम्बरों और शुद्ध विद्वानों में से,
इस्लाम और पैगम्बरत्व की उंगलियाँ
"ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है" की सच्चाई को दर्शाता है
अपनी सारी शक्ति से। उत्तरार्द्ध, अदृश्य की जीभ
दुनिया में चमत्कार के 40 पहलू हैं और
सृष्टि के दिव्य संकेतों और ब्रह्माण्ड के संचालन द्वारा पुष्टि की गई, उसी सत्य की ओर इशारा करती है
सही और मार्गदर्शन की उंगलियाँ, और इसे दिखाता है
बहुत ही गंभीर तरीके से। इस प्रकार वह सत्य स्पष्ट हो जाता है
सूर्य से भी अधिक उज्ज्वल और दिन के उजाले से भी अधिक स्पष्ट।

हे दुराग्रह में डूबे हुए हठीले, जो
कुरान को नकारने और रद्द करने का प्रयास!
क्या तुम अपने मन के मंद दीपक से इन सूर्यों का विरोध करते हो?

तुम उदासीन कैसे रह सकते हो? क्या तुम उन्हें फूंककर बुझाने की कोशिश कर रहे हो? तुम्हारा इनकार करने वाला दिमाग बहुत हो गया! तुम कुरान और पैगंबर द्वारा सभी दुनियाओं के भगवान और ब्रह्मांड के मालिक के नाम पर कहे गए शब्दों और दावों को कैसे नकार सकते हो? तुम कौन हो जो ब्रह्मांड के महान मालिक को नकारने की कोशिश कर रहे हो?

निष्कर्ष

हे सजग मन और चौकस हृदय वाले मित्र। यदि तुमने इस वचन को समझ लिया है, तो इन 12 दीपों को अपने हाथ में ले लो ताकि तुम सत्य का एक ऐसा दीपक प्राप्त कर सको जो हजारों बिजली की बत्तियों की तरह प्रकाश देता हो। ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से उतरती कुरान की आयतों को मजबूती से थामे रहो। ईश्वरीय सहायता के "पर्वत" पर चढ़ते हुए, सत्य के स्वर्ग में चढ़ो। "ईश्वरीय ज्ञान के सिंहासन" पर चढ़ो और घोषणा करो: "मैं गवाही देता हूँ कि तुम्हारे अलावा कोई ईश्वर नहीं है। तुम एक हो, कोई साझी नहीं।"

यह भी घोषित करें:

> अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, सारे अस्तित्व पर उसका आधिपत्य है, सारी प्रशंसा उसी की है, वही जीवन देता है और मारता है, वह जीवित है, मरता नहीं, उसके हाथ में सब भलाई है, और वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। तेरी महिमा हो, हमें तेरे सिवा और कुछ ज्ञान नहीं

हमें सिखाया है, निस्संदेह, आप सर्वज्ञ, तत्वदर्शी हैं।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या भूल जाएं तो हमें उत्तरदायित्व मत दीजिए।
गलती में पड़ना। हे हमारे प्रभु, हम पर बोझ मत डालो
जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर किया था।

हे प्रभु, हम पर वह मत थोपिए जो हम नहीं कर सकते
हमें क्षमा करें, हमें क्षमा करें और हम पर दया करें।
तू हमारा रक्षक है। हमें कुफ्र करने वालों पर विजय प्रदान कर। हमारे पालनहार,
हमारे दिलों पर विपत्ति न डाल।
तूने हमें मार्ग दिखा दिया है, उसके बाद हम भटक जाएंगे।
हमें अपनी उपस्थिति से दया प्रदान करें, क्योंकि आप ही हैं
दाता, हमारे प्रभु, आप ही वह हैं जो इकट्ठा करेंगे
मानवता को एक साथ एक ऐसे दिन पर जो कोई नहीं है
संदेह। परमेश्वर कभी भी अपने वादे से नहीं चूकता।

हे ईश्वर, सब पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें
जिसको तूने सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा, और
उनके परिवार और साथियों पर दया करें।
हम और उसका समुदाय, आपकी दया के लिए,
हे दयालुओं में भी अत्यन्त दयालु! आमीन।

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: “सारी स्तुति सारे संसार के प्रभु परमेश्वर की जय हो।”

अनुक्रमणिका